श्री महा-गणपति साधना

४०/-

प्रकाशक : परा-वाणी आध्यात्मिक शोध-संस्थान
श्रीचण्डी-धाम, अलोपी-देवी मार्ग, प्रयाग-२११००६

उपयोगी पुस्तकें

अद्भुत दुर्गा सप्तशती	१००)
अलोप-शङ्करी देवी	५)
अघोर-पन्थ का निरूपण	२५)
अध्यात्म-योग	५)
अक्षय-वट	५)
अनुभूत साधना	२५)
आनन्द-लहरी	१२)
आदि-शङ्कराचार्य अङ्क	१०)
आपदुद्धारक श्रीबटुक-भैरव स्तोत्र	१०)
कमला-कल्पतरु, पुष्प-१, २	८०)
काली-पूजा-पद्धति	१००)
काली-नित्यार्चन	१५)
कृष्ण-साधना	२५)
काली-कल्पतरु	३००)
काश्मीर की वैचारिक परम्परा	१०)
कुण्डलिनी-साधना	४०)
कुम्भ-पर्व अङ्क	१०)
गङ्गा-यमुना-सरस्वती पूजा-अङ्क	५)
गायत्री-कल्पतरु	५०)
गुरु-तन्त्र (हिन्दी टीका सहित)	१५)
गुरु-तत्त्व-दर्शन एवं गुरु-साधना	१५)
चक्र-पूजा	३०)
चक्र-पूजा के स्तोत्र	२५)
छिन्न-मस्ता नित्यार्चन	२५)
तत्त्व-विवेचन	३)
तन्त्रोक्त शब्द-ब्रह्म-साधना	४५)
तारा-कल्पतरु	३५)
दकारादि श्री दुर्गा-सहस्त्र-नाम	२०)
दश महा-विद्या-अष्टोत्तर-शत-नामावली	३०)
दश महा-विद्या-अष्टोत्तर-शत-नाम	३०)
दश महा-विद्या-कवच	३०)
दश महा-विद्या-गायत्री एवं ध्यान	३०)
दश महा-विद्या तन्त्र	६०)
दिव्य योग	६)
दीपावली की पूजा-विधि	१५)
दीपावली विशेषाङ्क	४५)
दीक्षा-प्रकाश	३५)
दुर्गा-साधना	१५)
दुर्गा सप्तशती (पद्यानुवाद)	१५)
दुर्गा सप्तशती (विशुद्ध-संस्करण)	२५)
दुर्गा सप्तशती (बीजात्मक)	१०)
दुर्गा-कल्पतरु (निबन्ध व स्तोत्र-संग्रह)	१५)
दुर्गा-सहस्त्र-नाम-साधना	५)
धन-प्राप्ति के प्रयोग	१०)
धर्म-चर्चा	१०)
धर्म-मार्ग पर	३५)
ध्यान-योग एवं विचार-योग	५)
नवरात्र-कल्पतरु	१००)
नवरात्र-पूजा-पद्धति (वैदिक)	३)
नवग्रह-साधना (सचित्र)	१००)
निष्काम योग एवं कर्म-संन्यास योग	१०)
पञ्च-मकार तथा भाव-त्रय	२०)
पारायण-विधि	६)
प्राण-तोषिणी तन्त्र (सर्ग, धर्म-काण्ड)	५०)
बगला-कल्पतरु	१००)
बगला-साधना	४५)
बाला-स्तव-मञ्जरी	२५)
बाला-कल्पतरु	३५)
बिहार के देवी-मन्दिर	८)

श्रीचण्डी-धाम, अलोपी-देवी मार्ग, प्रयाग-२११००६ फोन: ०५३२-२५०२७८३, ०९४५०२२२७६७

'कौल-कल्पतरु' चण्डी
विशेष प्रस्तुति

श्री महा-गणपति साधना

साक्षात् सर्व-व्यापक ब्रह्म श्री महा-गणपति
मातृका-साधना
कवच-साधना
मन्त्र-साधना
नामावली-साधना
एवं
तर्पण-विधान

सम्पादक
रमादत्त शुक्ल
ऋतशील शर्मा

प्रकाशक
पण्डित देवीदत्त शुक्ल स्मारक
परा-वाणी आध्यात्मिक शोध-संस्थान
कल्याण मन्दिर प्रकाशन
श्रीचण्डी-धाम, प्रयाग-राज-२११००६ ☎ ०५३२-२५०२७८३

अनुदान ५०/-

प्रकाशक :
परा-वाणी आध्यात्मिक शोध-संस्थान
कल्याण मन्दिर प्रकाशन
श्रीचण्डी-धाम, प्रयाग-राज-२११००६
दूर-भाष : ०५३२-२५०२७८३, ०९२३५९१००७१

द्वितीय संस्करण
श्रावण कृष्णा त्रयोदशी, २०६५ वि०-
बुधवार, ३० जुलाई २००८

सर्वाधिकार सुरक्षित

उपयोगी पुस्तकें

मन्त्र-कोष	२००/-
साधना-रहस्य	४०/-
शाबर-मन्त्र-संग्रह (१-१२ भाग)	३८५/-
दश-महा-विद्या-साधना (पाँच पुस्तकें)	१५०/-
हिन्दुओं की पोथी	२५/-

अनुदान : ३५-०० रु०

मुद्रक :
परा-वाणी प्रेस
अलोपी देवी मार्ग
प्रयाग-राज (उ०प्र०)-२११००६

श्रीमहा-गणपति-साधना

अनुक्रम

- श्रीमहा-गणपति-साधना १
- श्रीमहा-गणपति-मातृका-साधना ९
- श्रीमहा-गणपति-वज्र-पञ्जर-कवचम् १३
- श्रीमहा-गणपति-द्वादशाक्षर-मन्त्र-साधना १५
- श्रीमहा-गणपति-एकादशाक्षर-मन्त्र-साधना १८
- श्रीमहा-गणपति-अष्टा-विंशत्यक्षर-मन्त्र-राज-साधना २१
- श्रीउच्छिष्ट-महा-गणपति-एकाधिक-चत्वारिंशदक्षर-मन्त्र-साधना २७
- श्रीउच्छिष्ट-महा-गणपति-षड्-त्रिंशदक्षर-मन्त्र-साधना ३४
- श्रीलक्ष्मी-विनायक-अष्टा-विंशत्यक्षर-मन्त्र-साधना ४१
- श्रीलक्ष्मी-गणेश-अष्टा-विंशत्यक्षर-मन्त्र-साधना ४६
- श्रीसर्व-विघ्न-हर-गणपति-त्रिंशदक्षर-मन्त्र-साधना ५१
- श्रीत्रैलोक्य-मोहन-कर-गणेश-त्रयस्त्रिंशदक्षर-मन्त्र-साधना ५६
- श्रीसिद्धि-विनायक-त्रयः-पञ्चाशदक्षर-मन्त्र-साधना ६३
- श्रीवल्लभ-महा-गणपति-त्रि-शती-नामावली-साधना ७१
- श्रीमहा-गणपति-तर्पण-विधान ७७
- वर्णों के अनुसार ५१ 'गणेश' एवं 'गणेश-शक्ति' ९०
- श्रीमहा-गणपति-मूल-मन्त्र-पद-माला-स्तोत्रम् ९१
- श्रीगणेश-स्तोत्रम् ९३
- श्रीगणेश-स्तोत्र (हिन्दी-रूपान्तर) ९५

दो शब्द

गुप्तावतार योगि-राज श्री मोतीलाल जी महाराज 'बाबाश्री' का जन्म सं० १९४१ की श्रावण कृष्णा त्रयोदशी, बुधवार को हुआ था। इस प्रकार श्रावण कृष्णा त्रयोदशी, २०६५ वि०– बुधवार, ३० जुलाई २००८ को आपकी १२४वीं जयन्ती थी। आपकी १२४वीं जयन्ती के पावन अवसर पर आपके उपदेशों के आधार पर श्रीगणपति के विभिन्न मन्त्रों का विधान मन्त्रार्थ-सहित पहले-पहल प्रस्तुत हो रहा है। आशा है कि पाठक बन्धु इससे विशेष रूप से लाभान्वित होंगे।

परम पूज्य बाबाश्री मुम्बई के दादर नामक स्थान में समुद्र-तट-वर्ती जिस मकान में रहते थे, उस मकान का पूज्य बाबाश्री का कमरा देखने योग्य था। कमरे की दीवालों पर दश महा-विद्याओं की सुन्दर छवियाँ विभिन्न देवी-देवताओं के ध्यान-यन्त्र-मन्त्र-सहित चित्रित थीं। आज पूज्य बाबाश्री के उक्त दिव्य कमरे का वर्णन 'बाबाश्री चरितामृत' नामक पुस्तक के पृष्ठ १३८ पर 'चण्डी' के मानद सम्पादक 'कुल-भूषण' पं० रमादत्त शुक्ल द्वारा लिखित निबन्ध 'पूज्य बाबाश्री का कमरा' को पढ़कर ही जाना जा सकता है। यहाँ बाबाश्री के उक्त दिव्य कमरे की दीवालों पर लिखित ''त्रैलोक्य-मोहन दश-भुज गणेश'' के ध्यान (गदा-बीजपूरे...रक्त-कान्तिं भजेत् तम्) के प्रति 'चण्डी' के पाठकों का ध्यान आकर्षित करना आवश्यक समझता हूँ, क्योंकि इन्हीं दश-भुज श्रीत्रैलोक्य-मोहन-गणेश के मन्त्र के विधान को प्रस्तुत 'श्रीमहा-गणपति-साधना' के पृष्ठ ५६ पर बाबाश्री की असीम अनुकम्पा से उनकी १२४वीं जयन्ती के पावन अवसर पर, उनके उपदेशों के आधार पर हम पहली बार मन्त्रार्थ-सहित प्रस्तुत कर पा रहे हैं। अस्तु! परम पूज्य बाबाश्री के श्री-चरणों में 'चण्डी'-परिवार का शतशः नमन करते हुए पूज्य बाबा श्री के दिव्य आवास की दिव्य दीवालों पर लिखित 'त्रैलोक्य-मोहन दश-भुज गणेश' का ध्यान करते हैं। यथा–

गदा-बीज-पूरे धनुः शूल-चक्रे सरोत्पले पाश-धान्याग्र-दन्तान् ।
करैः सन्दधानं स्व-शुण्डाग्र-राजन्मणी-कुम्भमङ्काधिरूढ-स्व-पत्न्या ।।
सरोजन्मवाभूषणानां भरेणोज्वलद्धस्तलल्या समालिङ्गिताङ्गम् ।
करींद्राननं चन्द्र-चूडं त्रिनेत्रं जगन्मोहनं रक्त-कान्तिं भजेत् तम् ।।

श्रीचण्डी-धाम, प्रयाग-राज

–ऋतशील शर्मा

श्रीमहा-गणपति-साधना

सम्पूर्ण जगत् के कारण-तत्त्व 'श्रीगणपति'

वेदों, उपनिषदों के अनुसार 'श्रीगणपति'-''साक्षात् सर्व-व्यापक ब्रह्म हैं। सम्पूर्ण जगत् के कारण-तत्त्व हैं।'' अतएव छोटे-बड़े सभी कार्यों एवं घटनाओं की सिद्धि के लिए 'गणपति' का अवलम्बन-अर्चन-नित्य-स्मरण अत्यन्त आवश्यक है। वेदों-उपनिषदों की ऐसी मान्यता के कारण ही हमारे यहाँ प्रत्येक कार्य के आरम्भ में 'गणपति' की पूजा को अनिवार्य माना गया है। अत्यन्त व्यापक 'गणपति' की 'पूजा' अथवा 'उपासना' हमारे यहाँ दो प्रकार से है-१. निर्गुण एवं २. सगुण।

श्रीगणपति की 'निर्गुण उपासना'

'गणपति' की 'निर्गुण उपासना' में योगी लोग 'श्रीगणपति का ध्यान' अपने शरीर-स्थित 'षट-चक्रों' में 'नाद'-ब्रह्म के स्वरूप में करते हैं। 'योग'-साधना के अनुसार प्रत्येक मनुष्य के शरीर में रीढ़ की हड्डी के मूल में, 'गुदा' से दो अंगुल ऊपर 'मूलाधार'-चक्र' है। यह चक्र-चार दलोंवाला है। इसमें सम्पूर्ण जीवन की शक्ति अव्यक्त रूप में रहती है। इसी 'मूलाधार'-चक्र के मध्य में चतुष्कोणात्मक 'आधार'-पीठ है, जिस पर सर्व-कर्त्ता, सर्व-साक्षी, सर्व-व्यापक साक्षात् ब्रह्म 'श्रीगणपति' विराजमान हैं। 'श्रीगणपति अथर्वशीर्ष' कहता है-

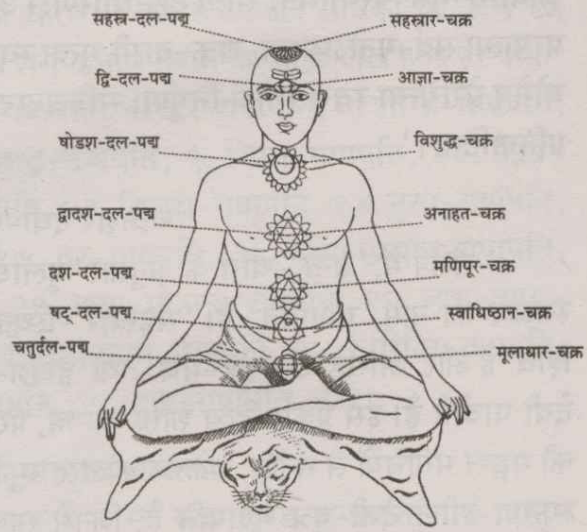

त्वं मूलाधार-स्थितोऽसि नित्यम् । त्वं शक्ति-त्रयात्मकः। त्वां योगिनो ध्यायन्ति नित्यम्।

चिन्मय 'नाद'-शक्ति के जागरण-कर्त्ता 'श्रीगणपति'

'तन्त्र'-योग के अनुसार 'मूलाधार'-चक्र में त्रि-गुण-मयी 'परा'-शक्ति 'कुण्डलिनी' सुप्तावस्था में रहती हैं। वहाँ 'श्रीगणपति' के चिन्मय स्वरूप का ध्यान करने से 'कुण्डलिनी' जाग्रत हो जाती है और फिर क्रमशः 'स्वाधिष्ठान', 'मणिपूर', 'अनाहत', 'विशुद्ध' एवं 'आज्ञा'-चक्र में प्रवेश करते हुए शिरस्थ-स्थित 'सहस्रार'-चक्र में 'परम-शिव' के साथ जा मिलती है। संक्षेप में, 'तन्त्रों' के अनुसार 'षट्-चक्रों' में व्याप्त चिन्मय 'नाद'-शक्ति के जागरण-कर्त्ता 'श्रीगणपति' हैं और 'चिदानन्द-लहरी' के रूप में इनका ध्यान पहले 'मूलाधार-चक्र' में, फिर अन्य चक्रों में तथा अन्त में 'सहस्रार' अथवा 'हृदय' में किया जाता है।

'षट्-चक्र-संस्थान' के आधार श्रीगणपति

आदि शङ्कराचार्य ने '**तन्त्रों**' के उक्त उद्धरण को स्पष्ट किया है। वे कहते हैं–'प्रत्येक उपासक के शरीर के भीतर चार दलोंवाले '**मूलाधार**' में, छः दलोंवाले '**स्वाधिष्ठान**' में, दस दलोंवाले '**मणिपूर**' में, बारह दलोंवाले '**अनाहत**' में, सोलह दलोंवाले '**विशुद्ध**' में, दो दलोंवाले '**आज्ञा**'-चक्र में तथा हजार दलोंवाले '**सहस्रार**' में **गणपति, ब्रह्मा, विष्णु, रुद्र, जीवात्मा, गुरु** और **परमात्मा** का निवास बताया गया है। '**मूलाधार**' में स्थित होने के कारण सम्पूर्ण रहस्य-मय '**षट्-चक्र-संस्थान**' के आधार '**श्रीगणपति**' ही हैं और उनके रूप में ही **परमात्मा** सभी प्रकार की क्रियाओं को नियन्त्रित एवं प्रेरित करते हैं– '**किं च मूलाधार-स्वाधिष्ठान-मणिपूरकानाहत-विशुद्ध्याज्ञा-सहस्रारेषु चतुर्दल-षड्-दल-दश-दल-द्वादश-दल-षोडश-दल-द्वि-दल-सहस्र-दलेषु स्थिता गणपति-ब्रह्म-विष्णु-रुद्र-जीवात्म-गुरु-परमात्मनः सन्ति देह-धारिणः। अतो गणपतेर्मूलाधार-गतस्य सर्वाधारत्वं वर्तते।··· परमात्मा सर्व-गतोऽप्याज्ञा-चक्र-वासी भूत्वा स्वाधःस्थ-जीव-रुद्र-विष्णु-ब्रह्म-गणपतीन् तत्तद्वि-योगेषु प्रेरयित्वा स्वयं साक्षी निर्गुणः सच्चिदानन्द-मयः सर्वातीतः सर्वोत्कृष्ट इति सम्यग् वेदेषु प्रतिपादितः।**'

चक्रेश्वर देवी-पुत्र श्रीगणपति

संक्षेप में, '**तन्त्र**'-**योग** के अनुसार '**मूलाधार**' में अवस्थित '**कुल-कुण्डलिनी**' के '**बीज**'-**स्वरूप** का नाम '**गणपति**' है। '**सहस्रार**'-स्थित '**कुल-कुण्डलिनी**' का मूल अधिष्ठान '**परम-शिव**' हैं और '**आरोह-अवरोह-मय**' तथा '**इच्छा-ज्ञान**'-**क्रिया**'-स्वरूपा स्वयं '**कुल-कुण्डलिनी**' **देवी पार्वती** हैं। इस प्रकार दिव्य शक्ति-सम्पन्न, परमेश्वर के पर-प्रकाशात्मक विभव से भूषित, इन्द्रियों की मङ्गल मरीचियों से मनोज्ञ, चक्रेश्वर की तरह स्फुरित, मूलाधार में स्थित, एकत्व से विभूषित, **शाश्वत स्फुरण-शील देवी-पुत्र गणपति** हैं, जिनसे साधक को अपने '**संविद समुद्र**' अर्थात् '**ज्ञान**' को सम्यक् रूप से समुच्छलित करने के लिए **नित्य प्रार्थना** करनी चाहिए। '**तन्त्रालोक**' कहता है–

तद्-देवता-विभव-भावि-महा-मरीचि-चक्रेश्वरायित-निज-स्थितिरेक एव।
देवी-सुतो गणपतिः स्फुरदिन्दु-कान्तिः, सम्यक् समुच्छलयतान् मम संविदब्धिम् ।।

इस प्रकार **तन्त्रों** के अनुसार '**गणपति**'–साधक-शरीर-स्थित '**चक्रेश्वर**' हैं। '**गणों**' अर्थात् '**भूत**'-गण, '**तन्मात्र**'-गण, '**इन्द्रिय**'-गण, **अन्तः-करण**, **माया**-परिवार और **शुद्ध-तत्त्व** सभी के पति हैं। आपके अनुग्रह से ही शरीरस्थ समस्त चक्रों में ऊर्जा फूटती है और '**सहस्रार**' प्रस्फुटित हो जाता है। '**शाक्त-तन्त्रों**' के अनुसार **गणपति अकारादि-क्षकारान्त महा-सरस्वती-मय** हैं। जिस प्रकार से **अकारादि-क्षकारान्त ५१ प्रकार की शक्तियाँ** हैं, उसी प्रकार से **५१ गणपति** भी हैं (देखें पृ० ९०)।

श्रीगणपति की सगुण उपासना

'तन्त्रों' में 'गणपति' के उक्त सूक्ष्म अत्यन्त व्यापक निर्गुण स्वरूप के आधार पर उनके 'सगुण स्वरूप' का भी विस्तार से वर्णन हुआ है। 'तन्त्रों' के अनुसार जो लोग अत्यन्त व्यापक गणपति-तत्त्व के निर्गुण स्वरूप का ध्यान नहीं कर सकते, वे लोग 'गणपति' के 'सगुण'-स्वरूप के ध्यान-पूजन से सम्पूर्ण विद्याओं, समृद्धि को प्राप्त कर सकते हैं। 'तन्त्रों' में इस प्रकार वर्णित गणपति की साकार उपासना कितनी महत्त्व-पूर्ण है, यह स्वयं आदि-शङ्कराचार्य जी के 'प्रपञ्च-सार तन्त्र' (१६/३६) में कथित वचनों से स्पष्ट होता है कि "...'तन्त्र-मार्ग' से गणपति की उपासना करने से शीघ्र सिद्धि उपलब्ध होती है।..."

साकार गणपति के विभिन्न नाम-रूप

तन्त्रों में गणपति के निर्गुण स्वरूप को धारण न कर सकनेवाले साधकों की रुचि एवं अधिकार को ध्यान में रखते हुए गणपति के विभिन्न सगुण नाम-रूपों का भी उल्लेख हुआ है। यथा– १. बाल-गणपति, २. तरुण-गणपति, ३. भक्त-गणपति, ४. वीर-गणपति, ५. शक्ति-गणपति, ६. द्विज-गणपति, ७. सिद्ध-गणपति, ८. उच्छिष्ट-गणपति, ९. विघ्न-गणपति, १०. क्षिप्र-गणपति, ११. हेरम्ब-गणपति, १२. लक्ष्मी-गणपति, १३. विजय-गणपति, १४. नृत्य-गणपति, १५. ऊर्ध्व-गणपति, १६. एकाक्षर-गणपति, १७. वर-गणपति, १८. क्षिप्र-प्रसाद-गणपति, १९. हरिद्रा-गणपति, २०. एक-दन्त-गणपति, २१. ऋण-मोचन-गणपति, २२. वक्र-तुण्ड-गणपति, २३. सर्व-विघ्न-हर-गणपति, २४. त्रैलोक्य-मोहन-गणपति, २५. विरिञ्चि-गणपति, २६. वीर-विघ्नेश-गणपति, २७. लम्बोदर-गणपति, २८ महा-गणपति आदि।

साकार गणपति के दो मुख्य स्वरूप

ऊपर वर्णित 'गणपति' के विभिन्न साकार रूपों में से 'वक्र-तुण्ड-गणपति' एवं 'महा-गणपति' की उपासना 'शक्ति-उपासना' के दो मुख्य प्रकारों–१. श्री 'काली'-कुल और २. श्री 'श्री'-कुल के अन्तर्गत 'गुरु-पादुका-मन्त्र' के साथ सबसे पहले दी जाती है। इससे इनका महत्त्व स्वतः भली-भाँति स्पष्ट हो जाता है। इन्हीं से दोनों कुलों की शक्ति-उपासना का प्रारम्भ होता है।

'वक्र-तुण्ड-गणपति' की उपासना

'श्रीकाली'-कुल में 'वक्र-तुण्ड-गणपति' की उपासना हेतु छः अक्षरों का मन्त्र 'वक्र-तुण्डाय हुँ' प्रशस्त है। 'कौल-कल्पतरु' पण्डित देवीदत्त शुक्ल जी की कृपा से प्राप्त 'क्रम-दीक्षा के मन्त्रों' के अनुसार आपका ध्यान इस प्रकार है–

स्वर्ण-वर्णं भुजगोपवीतं लम्बोदरं भास्वरमेक-दन्तम्।
वराभयं पाशमथांकुशं च दधानमिन्दोः कलयावतंसम् ।।

स-चामर-स्त्री-युगलेन युक्तं षडक्षरात्मानमनन्य-बन्धुम् ।
कल्पद्रुमान्तं कलि शीघ्र-सिद्धिं श्रीवक्र-तुण्डं शरणं प्रपद्ये।।

उक्त ध्यान से स्पष्ट होता है कि **कलि-युग में शीघ्र सिद्धि** प्राप्त करने के लिए **वक्र-तुण्ड गणपति** की कृपा-प्राप्ति अत्यन्त आवश्यक है।

'महा-गणपति' की उपासना

'**श्री-कुल**' में '**महा-गणपति**' की उपासना हेतु २८ अक्षरों का मन्त्र-राज '**ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गंणपतये वर-वरद सर्व-जनं मे वशमानय स्वाहा**' प्रशस्त है। शुक्लजी के द्वारा प्राप्त '**क्रम-दीक्षा के मन्त्रों**' के अनुसार आपका ध्यान इस प्रकार है–

हस्तीन्द्राननमिन्दु-चूडमरुणच्छायं त्रि-नेत्रं रसा-
दाश्लिष्टं प्रियया सु-पद्म-करया साङ्कस्थया सङ्गतम् ।
बीजापूर-गदा-धनुस्त्रिशिख-युक्-चक्राब्ज-पाशोत्पलम्,
ब्रीह्यग्र-स्व-विषाण रत्न-कलशान् हस्तैर्वहन्तं भजे।।

वक्र-तुण्ड-गणपति एवं महा-गणपति की विशेषता

इस प्रकार '**श्रीकाली**'-**कुल** के '**वक्र-तुण्ड-गणपति**' चार भुजा (**वर, अभय, पाश** एवं **अंकुश**) धारण करनेवाले हैं और चामर-सहित स्व-पत्नी से युक्त हैं और '**श्रीकुल**' के '**महा-गणपति**' दश भुजा (**अनार, गदा, धनुष, त्रिशूल, चक्र, पद्म, पाश, कमल, ब्रीहि-गुच्छ** एवं **अपना दाँत**) धारण करनेवाले हैं और पद्म-हस्ता अपनी शक्ति द्वारा आलिङ्गित हैं।

दोनों कुलों के '**गणपति**' अपनी शक्ति-सहित स्थूल-से-स्थूल रूप में विराजमान हैं। यह इस बात का स्पष्ट सूचक है कि **निर्गुण पर-ब्रह्म** अपनी क्रीड़ा के अन्तिम विन्दु '**भू**'-**तत्त्व** पर **साकार-स्वरूप** अर्थात् अपनी **लीला-शक्ति-सहित गणपति** के रूप में विराजमान हैं। वे सभी प्रकार की क्रियाओं को क्रीड़ा के रूप में प्रेरित कर रहे हैं और वे '**सर्व-साक्षी**' हैं। '**हुं**' अर्थात् उनके सम्बन्ध में जागरूक होकर एवं '**स्वाहा**' अर्थात् उनसे तादात्म्य स्थापित कर हम अपने जीवन को सभी प्रकार के पापों, कष्टों, विघ्नों से मुक्त कर सकते हैं, साथ ही सभी प्रकार के मनोरथों को पूरा कर सकते हैं।

आत्म-तत्त्व का सूचक 'वक्र-तुण्ड'-स्वरूप

'**गणपति**' का '**वक्र-तुण्ड**'-स्वरूप **शक्ति-उपासना** के अन्तर्गत सबसे पहले शोधित किए जानेवाले तत्त्व-'**आत्म-तत्त्व**' को स्पष्ट करता है। '**आत्म-तत्त्व**'–'**वक्र**' अर्थात् टेढ़ा है क्योंकि सम्पूर्ण जगत् स्वभाव से मन-वाणी से ही प्रेरित होता है न कि '**आत्म-तत्त्व**' से।

इष्ट-देवता-मय महा-गणपति-स्वरूप

'**गणपति**' का '**महा-गणपति**'-स्वरूप साक्षात् **इष्ट-देवता** का परिचायक है। '**महा-गणपति**'

के हाथों में वे ही आयुध हैं, जो '**श्री-कुल**' की पर-देवता **श्रीषोडशी** के हाथों में हैं। यथा–**पाश, अंकुश, इक्षु, कोदण्ड** एवं **कुसुम-शर** आदि। इस प्रकार '**महा-गणपति**' के स्वरूप से **शक्ति की एकता** भी पूर्ण-रूपेण प्रगट होती है।

'**प्रपञ्च-सार तन्त्र**' के सोलहवें पटल में '**श्रीगणपति**' के '**आवरण-पूजन**' के सन्दर्भ में जो उल्लिखित है, उससे भी यही स्पष्ट होता है। यथा–''**बिल्व-वृक्ष के नीचे 'श्रीलक्ष्मी' और 'नारायण' उनके सम्मुख स्थित हैं, वट-वृक्ष के नीचे 'श्रीपार्वती' और 'परमेश्वर' उनकी दाहिनी ओर स्थित हैं, पीपल के वृक्ष के नीचे 'रति' और 'कामदेव' उनके पीछे स्थित हैं तथा 'प्रियंगु' के नीचे 'भूमि' और 'वराह' उनकी बाँईं ओर विराजित हैं। मध्य में 'गणपति जी' विराजमान हैं और उनके दस में से आठ हाथों में सभी देवी और देवताओं के आयुध हैं। शेष दो हाथों में से एक में 'अनार का फल' है, दूसरे में टूटा हुआ 'गज-दन्त'। उनकी गोद में उनकी पत्नी 'वल्लभा' बैठी हुई हैं। उनके 'मोदक' अथवा 'रत्न-कलश' अथवा 'अनार के फल' द्वारा उनके आनन्द-रूप-साक्षात् साकार 'आनन्द ब्रह्म' की कल्पना होती है।**''

श्रीमहा-गणपति' की उपासना की प्राचीनता

'**प्रपञ्च-सार तन्त्र**' आदि **शङ्कराचार्य** द्वारा रचित है। '**प्रपञ्च-सार तन्त्र**' के उक्त उद्धरण से स्पष्ट हो जाता है कि '**श्रीमहा-गणपति**' की उपासना का सम्यक् विकास **आदि-शङ्कराचार्य जी** के काल में ही हो चुका था। यही नहीं, **आदि-शङ्कराचार्य जी** के गुरु **श्री गौड़पादाचार्य जी** ने '**चिदानन्द-केलि-विलास**'-नामक ग्रन्थ के मङ्गलाचरण में पहले '**श्रीगणेशाय नमः**' के द्वारा प्रारम्भ किया है और उसके आगे यह श्लोक लिखा है–

गुरुं गणपतिं दुर्गां, वाणीं महिष-मर्दिनीम् । ध्यात्वा सप्तशती-देव्या, व्याकुर्वे विदषां मुदे ।।

अस्तु! '**महा-गणपति**' **की साधना** हम लोगों के लिए अत्यन्त महत्त्व-पूर्ण है। उनके **मन्त्र का सतत चिन्तन एवं जप** तथा उनके **स्वरूप का नित्य ध्यान**–हमारे लिए परम आवश्यक है। इसी उद्देश्य से '**चण्डी**'-आध्यात्मिक पुस्तक-माला द्वारा '**श्रीमहा-गणपति-साधना**' साधकों के समक्ष प्रस्तुत हो ही है। आशा है कि साधक-बन्धु इससे लाभ उठाएँगे।

'महा-गणपति' के प्रादुर्भाव की कथा

'**महा-गणपति**' के प्रादुर्भाव की कथा '**ब्रह्माण्ड-पुराण**' में '**श्रीललितोपाख्यान**' में एवं उनके 'पूजन'-आदि का विवरण '**परशुराम कल्प-सूत्र**', '**शारदा-तिलक तन्त्र**' आदि प्राचीन ग्रन्थों में वर्णित है।

'**श्री ललितोपाख्यान**' में वर्णित कथा के अनुसार **भगवती श्रीमहा-त्रिपुर-सुन्दरी ललिता** के साथ **भण्डासुर दैत्य** का घमासान युद्ध छिड़ा हुआ था। उनकी पुत्री **भगवती बाला-त्रिपुर-सुन्दरी** एवं सेना-नायिका **दण्ड-नाथा** द्वारा '**भण्डासुर**' के तीन सौ पुत्रों का निधन हो चुका था। **श्री त्रिपुरा** की

इस विजय पर **भण्डासुर** के मन्त्री **विशुक्र** ने एक बड़ी भारी शिला पर '**जय-विघ्न-यन्त्र**' लिखकर, उसकी पूजा कर रात्रि के समय उसे **श्रीत्रिपुरा** की सेना की छावनी में एक कोने में रख दिया। उसके प्रभाव से **श्रीत्रिपुरा** की सेना में **१. आलस्य, २. दीनता, ३. निद्रा, ४. शिथिलता, ५. विस्मृति, ६. विवेक-शून्यता, ७. दुर्बल-मानसिकता** एवं **८. उत्साह-हीनता**–ये आठ दोष उत्पन्न हो गए। इन दोषों से अवसर पाकर **विशुक्र** ने **श्रीत्रिपुरा** की शक्ति-सेना पर आक्रमण कर दिया।

श्रीललिता की सेना-नायिका **दण्ड-नाथा** एवं मन्त्रिणी **सची-केशी** ने जब **विशुक्र** द्वारा आक्रमण एवं अपनी सेना की विषम स्थित के बारे में **महा-राज्ञी श्रीललिता** को बताया, तो **श्रीललिता महा-त्रिपुर-सुन्दरी** मुस्कराती हुई अपने समीप स्थित **श्रीमहा-कामेश्वर** के मुख की ओर निहारने लगीं।

श्रीमहा-त्रिपुर-सुन्दरी ललिता के उक्त मन्द हास्य से एक **प्रभा-पुञ्ज** उत्पन्न हुआ और उस प्रभा-पुञ्ज से एक **तेजस्वी देवता का प्रादुर्भाव** हुआ, जिनका मुख **हाथी** के समान था। उनके **गण्ड-स्थल** से **मद-जल की धारा** बह रही थी। उनकी अङ्ग-कान्ति **जपा-कुसुम** के समान सुशोभित थी। उनके दस हाथों एवं शुण्ड में क्रमशः **बीजपूर, गदा, ईख का धनुष, शूल, शङ्ख, पाश, कमल, धान की बाली, वर-मुद्रा, अंकुश** तथा **रत्न-मय कलश** था। उनका शरीर **लम्बे उदरवाला** था। उनके मस्तक पर **चन्द्राकार चूड़ामणि** सुशोभित थी। उनके मुख से मद-मत्त करनेवाली **गर्जन-ध्वनि** निकल रही थी। वह **सिद्धि-लक्ष्मी** से आलिङ्गित था। उन **गजानन देवता** ने प्रकट होते ही **महेश्वरी श्री ललिता** के चरणों में प्रणाम किया।

श्रीत्रिपुर-सुन्दरी ललिता देवी से आशीर्वाद लेकर वे **गजानन** सेना-शिविर में पहुँचे और शिविर में चारों ओर घूमते हुए उन्होंने एक कोने में स्थित '**विघ्न-यन्त्र**' को देखा। शीघ्र ही उसे उन्होंने अपने घोर दन्ताघात से चूर्ण कर आकाश में फेंक दिया। '**विघ्न-यन्त्र**' के नष्ट होते ही **श्री त्रिपुरा** की शक्ति-सेना पुनः सचेत हो गई और वह '**विशुक्र**' की सेना से लड़ने लगी।

श्रीगजानन के मद से '**विशुक्र**' की सेना मूर्छित हो गई और वे अपने **विघ्न-विनायकों** तथा **शक्तियों** के साथ '**विशुक्र**' की सेना के भीतर पहुँच गए। वहाँ उन्होंने सात अक्षौहिणी सेना के साथ **गजासुर** नामक अत्यन्त पराक्रमी दैत्य का संहार किया।

इस प्रकार **गजासुर** को मारकर **श्रीमहा-गणपति** जब अपनी **माँ श्रीललिताम्बा** के समक्ष उपस्थित हुए, तब उन्होंने प्रसन्न होकर उन्हें सबसे पहले पूजे जाने का वर प्रदान किया।

श्रीमहा-गणपति की 'पूजा'

श्रीमहा-गणपति की 'पूजा' के सम्बन्ध में **भगवान् परशुराम** अपने ग्रन्थ '**परशुराम-कल्प-सूत्र**' में लिखते हैं कि सबसे पहले '**श्रीमहा-गणपति**' **का ध्यान** करना चाहिए– '**देवं सिद्ध-लक्ष्मी-समाश्लिष्ट-पार्श्वम्**.....।' अर्थात् **भगवान् महा-गणपति** का वाम-पार्श्व **सिद्ध-लक्ष्मी** से आलिङ्गित है। वे **मणि-मय रत्न-सिंहासन** पर विराजमान हैं। उनका शरीर **करोड़ों सूर्यों के समान**

चमकीला रक्त-वर्णवाला है। मस्तक पर 'चन्द्र-मौलि' है। ग्यारह भुजाएँ हैं। इस प्रकार परमानन्द-पूर्ण गण्ड-स्थल से मद की धारा बहानेवाले सर्व-विघ्न-विध्वंसक महा-गणपति का ध्यान करना चाहिए।

इसके बाद, सिद्ध-पीठ (त्रिकोण-षट्कोण-वृत्त-चतुरस्र आदि) बनाकर उस पर गन्ध-पुष्प से पूजित शुद्ध जल से पूर्ण 'अर्घ्य'-पात्र स्थापित करना चाहिए। उस 'अर्घ्य'-पात्र के जल से श्रीमहा-गणपति की पूजा (पाद्य, अर्घ्य, आचमन, गन्ध, पुष्प, धूप, दीप, नैवद्य, ताम्बूल, नीराजन आदि) अथवा तर्पण करना चाहिए। पूजा एवं तर्पण करने के बाद 'श्रीमहा-गणपति की स्तुति करनी चाहिए। इसके बाद 'श्रीमहा-गणपति के मन्त्र का जप' करना चाहिए। यथा–'देवं गण-नाथं दशधोपतर्प्य···गन्ध-पुष्पाक्षतैरभ्यर्च्य निर्विघ्न-मन्त्र-सिद्धिर्भूयादित्यनुग्रहं कारयित्वा नमस्कृत्य यथा-शक्ति जपेत्।' (परशुराम-कल्प-सूत्र, खण्ड २/९)।

महा-गणपति' के मन्त्र के सम्बन्ध में श्रीगौड़पादाचार्य का सूत्र

'महा-गणपति' के मन्त्र के सम्बन्ध में आदि शङ्कराचार्य के गुरु श्रीगौड़पादाचार्य जी का सूत्र प्रसिद्ध है–अष्टा-विंशति-वर्ण-विशिष्टो महा-हेरम्बस्य मनुः।' अर्थात् महा-गणपति का मन्त्र २८ वर्ण-विशिष्टों से युक्त है। यह मन्त्र दो प्रकार का है, एक में सम्बोधनान्त 'गणपते'-पद है और दूसरे में चतुर्थ्यन्त 'गणपतये' है। सम्बोधनान्त-पद शाक्त-मार्ग का प्रबोधक है और चतुर्थ्यन्त-पद मोक्ष-दायक है–

सम्बुद्ध्यन्त-महा-मन्त्रो, शाक्त-मार्ग-प्रबोधकः। चतुर्थ्यन्त-महा-मन्त्रो, मोक्षमाजैक-हेतुकः ।।

महा-गणपति-मन्त्र-राज के २८ अक्षरों की विशेषता

'क-ट-प' आदि रीति से 'महा-गणपति'-शब्द में २८ की संख्या उपलब्ध होती है, जो 'महा-षोडशी' की संख्या है। 'गणपति' की संख्या १५ निकलती है, जो श्रीविद्या के प्रसिद्ध पञ्च-दशाक्षरी मन्त्र की सूचक है। 'महा-गणपति' का मन्त्र-राज–ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये वर-वरद सर्व-जनं मे वशमानय स्वाहा' भी २८ अक्षरोंवाला है। २८ की संख्या से २८ तत्त्वों– अन्तःकरण, काल, प्रकृति-पुरुष, महत्तत्व आदि का भी बोध होता है। 'मूलाधार'-चक्र में जहाँ 'महा-गणपति' का साधक-गण सबसे पहले ध्यान करते हैं, वहाँ 'पृथ्वी' आदि २८ तत्त्व तथा शिव-शक्ति के भी २८ रूप हैं। अट्ठाइस अक्षरोंवाले महा-गणपति के मन्त्र के 'जप' से इन सबका जागरण होता है। यथा–

मूलाधार-चक्र-स्थित शिव-शक्ति के २८ रूप

१. उड्डीश्वर (उड्डीश्वरी), २. जलेश्वर (जलेश्वरी), ३. कामेश्वर (कामेश्वरी), ४. पूर्णेश्वर (पूर्णेश्वरी), ५. श्रीकण्ठ (गगना), ६. अनन्त (सुरसा), ७. शङ्कर (मति), ८. पिङ्गल (ईश्वर-पर्यन्ता), ९. नाद (डाकिनी), १०. आलस्य (राकिनी), ११. महानन्द (लाकिनी), १२. योग

(शाकिनी), १३. अतीत (शाकिनी), १४. पारद (हाकिनी), १५. आधारेश (रक्ता), १६. चक्रेश (चण्डी), १७. कुरङ्गीश (करालिका), १८. महध्रीश (महोच्छ्वासा), १९. अनादि (विमला), २०. सर्वज्ञ (मातङ्गी,) २१. पुमिहा (विमला), २२. योग-विमद (शाम्भवी), २३. विद्ध-विमल (परा), २४. समय-विमल (कुलालिका), २५. मित्रेश (कुलेश्वरी), २६. कुब्ज (कुब्जा), २७. उड्डीश (नयना), २८. अवेश (चर्या)।

मूलाधार-चक्र-स्थित पृथ्वी आदि २८ तत्त्व

पञ्च-महा-भूत- १. पृथ्वी, २. जल, ३. अग्नि, ४. वायु, ५. आकाश। पञ्च-तन्मात्रा- ६. गन्ध, ७. रस, ८. रूप, ९. स्पर्श, १०. शब्द। पञ्च-ज्ञानेन्द्रिय- ११. त्वक्, १२. चक्षु, १३. श्रोत्र, १४. घ्राण, १५. जिह्वा। पञ्च-कर्मेन्द्रिय- १६. वाक्, १७. पाणि, १८. पाद, १९. पायु, २०. उपस्थ। चार अन्तःकरण- २१. मन, २२. बुद्धि, २३. चित्त, २४. अहङ्कार। २५. काल, २६. प्रकृति, २७. पुरुष, २८. महत्।

श्रीमहा-गणपति की उपासना का महत्त्व

पृथ्वी आदि २८ तत्त्वों के जागरण-कर्त्ता होने के कारण **श्रीमहा-गणपति** की उपासना का बहुत अधिक महत्त्व है। विभिन्न देवता भिन्न-भिन्न प्रकार की कामनाओं की पूर्ति करते हैं किन्तु **श्रीगणपति जी सभी अभिलषित वस्तुओं के प्रदाता** हैं। **महर्षि लौगाक्षि** का कथन है कि–सूर्य से '**आरोग्य**', अग्नि से '**श्री**', शिव से '**ज्ञान**', जनार्दन से '**मोक्ष**', दुर्गा आदि देवियों से '**रक्षा**', भैरव आदि से '**कठिनाईयों से पार पाने**', सरस्वती से '**विद्या**', लक्ष्मी से '**ऐश्वर्य-वृद्धि**', पार्वती से '**सौभाग्य**', स्कन्द से '**सन्तान-वृद्धि**' और गणपति से '**सभी वस्तुओं**' की याचना करनी चाहिए। यही नहीं, **भगवान् महा-गणपति विघ्नों के भी अधिपति** हैं। आपकी कृपा प्राप्त किए बिना किसी भी **देवता, महा-विद्या** की कृपा प्राप्त नहीं होती।

भगवान् गणपति की कृपा प्राप्त करना बहुत सरल भी है क्योंकि आप **ध्यान** अथवा **आवाहन** मात्र से प्रसन्न हो जाते हैं। **पीली मिट्टी** अथवा **सुपाड़ी** पर **लाल कलावा (मौली)** लपेटने मात्र से आपका साकार रूप उपस्थित हो जाता है। उस पर **रोली का छीटा, चावल के दाने, दूर्वा** डालने मात्र से आपकी पूजा हो जाती है। **उच्छिष्ट महा-गणपति की पूजा** तो अत्यन्त सहज रूप से **रक्त-चन्दन से लिप्त ताम्बूल** अथवा **लड्डू** को चबाते हुए मात्र **मन्त्र-जप** के द्वारा की जाती है।

श्रीगणपति–अकारादि-क्षकारान्त-मय हैं। अतएव **वर्ण-माला** में आपके मन्त्रों का जप बहुत ही उपयोगी है। प्रस्तुत **श्रीमहा-गणपति-साधना** में **मन्त्र-कोष** के आधार पर **वर्ण-माला** में **श्रीगणपति** के कुछ मन्त्रों का विधान दिया जा रहा है। आशा है कि इससे सभी लोग लाभान्वित होंगे।

–ऋतशील शर्मा

श्री चण्डी-धाम, प्रयाग-०६

श्रीमहा-गणपति-मातृका-साधना

'राष्ट्र-गुरु' श्रीस्वामी जी महाराज ने 'श्रीगणेश-विज्ञान' के सन्दर्भ में लिखा है कि महा-कवि कालिदास ने 'चिदग्नि-चन्द्रिका' में श्रीगणेश जी के आविर्भाव के सम्बन्ध में निम्न-लिखित श्लोक कहा है–

क्षीरोदं पौर्णमासी-शशधर इव यः प्रस्फुरन्निस्तरङ्गम्,
चिद्-व्योम-स्फार-नादं रुचि-वि-सरल-सद्-विन्दु-वक्रोर्मि-मालम् ।।
आद्य-स्पन्द-स्वरूपः प्रथयति सकृदोंकार-शुण्डः क्रिया-दृग्-
दनन्यास्योऽयं हठात् वः शमयतु दुरितं शक्ति-जन्मा गणेशः।।

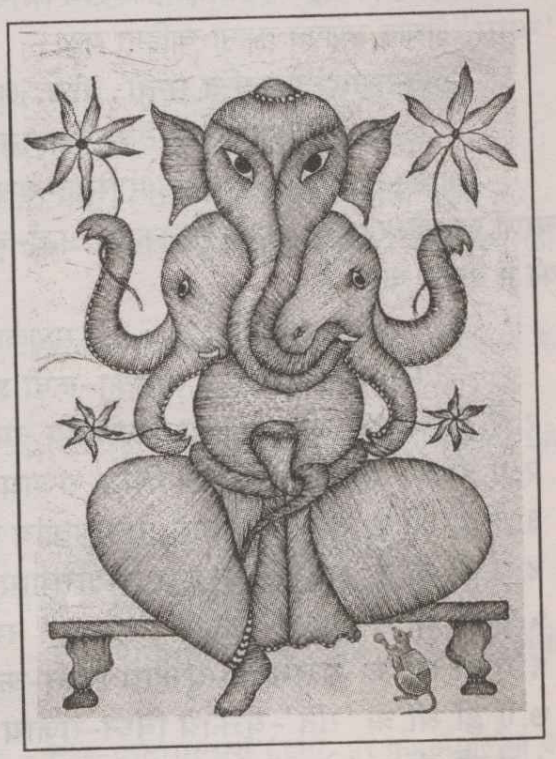

अर्थात् जैसे पूर्णिमा का चन्द्रमा शान्त तरङ्गवाले क्षीर-सागर को ऐसा क्षुब्ध कर देता है कि उसमें गर्जन के साथ गगन-चुम्बिनी ऊर्मि-मालाएँ उठने लगती हैं, उसी प्रकार जो पूर्णतः प्रकाशमान हो एक बार निस्तरङ्ग-चिदाकाश में **प्रणव (ॐ-कार)** के **नाद-तत्त्व** को फैलाकर '**विन्दु-तत्त्व**' की वक्र-लहरों को उद्वेलित कर देता है, जो **शब्द-ब्रह्म** का आदि '**स्पन्दन**'-रूप है, **ॐ-कार** जिसका **शुण्ड-दण्ड** है तथा जो **सम्पूर्ण क्रियाओं का द्रष्टा (साक्षी)** है, वह **शक्ति-नन्दन गज-मुख गणेश** हठात् आप सबके पाप-तापों का शमन करें।

उक्त श्लोक में '**शब्द-ब्रह्म**'-रूप (ॐ) का आविर्भाव तो बताया ही गया है, साथ ही इसी **ॐ-कार** से ही **श्रीगणेश जी की मूर्ति** की रचना भी की गई है, जो इस प्रकार है–१. प्रथम भाग–**उदर**, २. मध्य भाग–**शुण्डाकार-दण्ड**, ३. ऊपर का भाग–**अर्ध-चन्द्र, दन्त**, ४. अनुस्वार–**मोदक**।

ॐ का स्वरूप वैश्य व्यापारी लोग अपनी बहियों में भी बनाते हैं। इसे '**स्वस्तिक**' कहते हैं। ये ही **गणेश जी** के चारों हाथ हैं। यह **चतुर्भुज ॐ-कार** है। संक्षेप में, **ॐ-कार** के स्मरण का हमारे शास्त्रों में बहुत माहात्म्य बताया गया है। '**गीता**' में कहा गया है '**जो पुरुष ॐ-कार-रूपी ब्रह्म का उच्चारण करता हुआ और उसके 'अर्थ'-स्वरूप मेरा चिन्तन करता हुआ 'शरीर' का त्याग करता है, वह पुरुष 'परम गति' को प्राप्त होता है।**'

ॐ-कार-रूपी ब्रह्म (नाद-तत्त्व)–वर्णों का भी अभिव्यञ्जक है, जिन्हें **तन्त्र-शास्त्र** में '**मातृकाएँ**' कहते हैं। ये **मातृकाएँ ५१** हैं। इन **५१ मातृकाओं** को **५१ 'शक्तियों'-सहित गणपति** के रूप में भी बताया गया है (प्रस्तुत **श्रीमहा-गणपति-साधना** में '**प्राण-तोषिणी तन्त्र**' के आधार पर **५१ वर्णात्मक 'शक्तियों-सहित गणेश'** की सूची **पृष्ठ ९०** पर दी गई है)। **तन्त्र-शास्त्र** के अनुसार इन **५१ मातृका-रूपी शक्तियों-सहित गणपति** को साधक-गण अपने शरीर के विभिन्न अङ्गों में स्थापित कर साधना में शीघ्र सफलता प्राप्त करते हैं।

अतएव सभी साधकों को सर्व-प्रथम **श्रीमहा-गणपति-मातृका-साधना** के प्रति ध्यान देना चाहिए। **श्रीमहा-गणपति-मातृका-साधना** के लिए पहले '**ॐ'-कार-रूपी महा-गणपति** का **ध्यान** एवं **मानस-पूजन** करना चाहिए। फिर शरीर के विभिन्न अङ्गों में भावना द्वारा नित्य उनका '**न्यास**' अर्थात् स्थापन करना चाहिए। यथा–

ॐकारमाद्यं प्रवदन्ति सन्तो, वाचः श्रुतीनामऽपि यं गृणन्ति ।
गजाननं देव-गणानताङ्घ्रिं, भजेऽहमर्धेन्दु-कृतावतंसम् ।।

अर्थात् सभी **श्रुति-वाक्य** और **सिद्ध-वचन** जिन्हें '**आद्य ॐकार**' कहते हैं, **देव-गण** जिनके चरणों पर झुके रहते हैं, जिनके मस्तक पर **अर्द्ध-चन्द्र** आभूषण के समान शोभायमान है, उन **गजानन** की मैं वन्दना करता हूँ ।

।। मातृका-न्यास ।।

(मानव-शरीर में **५१ मातृका-रूपी शक्तियों-सहित गणपति** का स्थापन)

१. **ऐं ह्रीं श्रीं अं 'श्री'-युक्ताय विघ्नेशाय नमः – शिरसि** (सिर में)
२. **ऐं ह्रीं श्रीं आं 'ह्री'-युक्ताय विघ्न-राजाय नमः – मुखे** (मुख में)
३. **ऐं ह्रीं श्रीं इं 'तुष्टि'-युक्तायै विनायकाय नमः – दक्ष-नेत्रे** (दाईं आँख में)
४. **ऐं ह्रीं श्रीं ईं 'शान्ति'-युक्ताय शिवोत्तमाय नमः– वाम-नेत्रे** (बाँईं आँख में)
५. **ऐं ह्रीं श्रीं उं 'पुष्टि'-युक्ताय विघ्न-हृते नमः – दक्ष-कर्णे** (दाएँ कान में)
६. **ऐं ह्रीं श्रीं ऊं 'सरस्वती'-युक्ताय विघ्न-कर्त्रे नमः – वाम-कर्णे** (बाँएँ कान में)
७. **ऐं ह्रीं श्रीं ऋं 'रति'-युक्ताय विघ्न-राजाय नमः – दक्ष-नासा-पुटे** (दाएँ नथुने में)
८. **ऐं ह्रीं श्रीं ॠं 'मेधा'-युक्ताय गण-नायकाय नमः – वाम-नासा-पुटे** (बाँएँ नथुने में)
९. **ऐं ह्रीं श्रीं ऌं 'कान्ति'-युक्ताय एक-दन्ताय नमः – दक्ष-गण्डे** (कनपटी-सहित दाएँ गाल में)।
१०. **ऐं ह्रीं श्रीं ॡं 'कामिनी'-युक्ताय द्वि-दन्ताय नमः – वाम-गण्डे** (कनपटी-सहित बाँएँ गाल में)
११. **ऐं ह्रीं श्रीं एं 'मोहिनी'-युक्ताय गज-वक्त्राय नमः – ऊर्ध्व-ओष्ठे** (ऊपरी ओंठ में)
१२. **ऐं ह्रीं श्रीं ऐं 'जटा'-युक्ताय निरञ्जनाय नमः – अधरोष्ठे** (नीचे के ओंठ में)
१३. **ऐं ह्रीं श्रीं ओं 'तीव्रा'-युक्ताय कपर्द-भृते नमः – ऊर्ध्व दन्त-पंक्तौ** (ऊपरी दाँतों की कतार में)

१४. ऐं ह्रीं श्रीं औं 'ज्वालिनी'-युक्ताय दीर्घ-मुखाय नमः – अधो दन्त-पंक्तौ (नीचे के दाँतों में)
१५. ऐं ह्रीं श्रीं अं 'नन्दा'-युक्ताय शंकु-कर्णाय नमः – मुख-वृत्ते (सम्पूर्ण मुख-मण्डल में)
१६. ऐं ह्रीं श्रीं अः 'सुरसा'-युक्ताय वृष-ध्वजाय नमः – कण्ठे (गले में)
१७. ऐं ह्रीं श्रीं कं 'काम-रूपिणी'-युक्ताय गण-नाथाय नमः – दक्ष-बाहु-मूले (दाईं काँख में)
१८. ऐं ह्रीं श्रीं खं 'सु-भ्रू'-युक्ताय गजेन्द्राय नमः – दक्ष-कूर्परे (दाएँ हाथ की कोहनी में)
१९. ऐं ह्रीं श्रीं गं 'जयिनी'-युक्ताय शूर्प-कर्णाय नमः – दक्ष-मणि-बन्धे (दाईं कलाई में)
२०. ऐं ह्रीं श्रीं घं 'सत्या'-युक्ताय त्रि-लोचनाय नमः –दक्ष-करांगुलि-मूले (दाएँ हाथ की अँगुलियों की जड़ में)
२१. ऐं ह्रीं श्रीं ङं 'विघ्नेशी'-युक्ताय लम्बोदराय नमः –दक्ष-करांगुल्यग्रे (दाएँ हाथ की अँगुलियों के अग्र भाग में)
२२. ऐं ह्रीं श्रीं चं 'सु-रूपा'-युक्ताय महा-नादाय नमः – वाम-बाहु-मूले (बाँईं काँख में)
२३. ऐं ह्रीं श्रीं छं 'कामदा'-युक्ताय चतुर्मूर्तये नमः – वाम-कूर्परे (बाँईं कोहनी में)
२४. ऐं ह्रीं श्रीं जं 'मद-विह्वला'-युक्ताय सदा-शिवाय नमः – वाम-मणि-बन्धे (बाँईं कलाई में)
२५. ऐं ह्रीं श्रीं झं 'विकटा'-युक्ताय आमोदाय नमः – वाम-करांगुलि-मूले (बाँएँ हाथ की अँगुलियों की जड़ में)
२६. ऐं ह्रीं श्रीं ञं 'पूर्णा'-युक्ताय दुर्मुखाय नमः–वाम-करांगुल्यग्रे (बाँएँ हाथ की अँगुलियों के अग्र भाग में)
२७. ऐं ह्रीं श्रीं टं 'भूतिदा'-युक्ताय सु-मुखाय नमः – दक्ष-उरु-मूले (दाईं जाँघ एवं कमर की जोड़ में)
२८. ऐं ह्रीं श्रीं ठं 'भूमि'-युक्ताय प्रमोदाय नमः – दक्ष-जानुनि (दाएँ घुटने में)
२९. ऐं ह्रीं श्रीं डं 'शक्ति'-युक्ताय एक-पादांय नमः – दक्ष-गुल्फे (दाएँ टखने में)
३०. ऐं ह्रीं श्रीं ढं 'रमा'-युक्ताय द्वि-जिह्वाय नमः – दक्ष-पादांगुलि-मूले (दाएँ पैर की अँगुलियों की जड़ में)
३१. ऐं ह्रीं श्रीं णं 'मानुषी'-युक्ताय शूराय नमः – दक्ष-पादांगुल्यग्रे (दाएँ पैर की अँगुलियों के अग्र भाग में)
३२. ऐं ह्रीं श्रीं तं 'मकर-ध्वजा'-युक्ताय वीराय नमः – वामोरु-मूले (बाँईं जाँघ एवं कमर की जोड़ में)
३३. ऐं ह्रीं श्रीं थं 'वारिणी'-युक्ताय षण्मुखाय नमः – वाम-जानुनि (बाँएँ घुटने में)
३४. ऐं ह्रीं श्रीं दं 'भृकुटी'-युक्ताय वरदाय नमः – वाम-गुल्फे (बाँएँ टखने में)

३५. ऐं ह्रीं श्रीं धं 'लज्जा'-युक्ताय वाम-देवाय नमः-वाम-पादांगुलि-मूले (बाँएँ पैर की अँगुलियों की जड़ में)

३६. ऐं ह्रीं श्रीं नं 'दीर्घ-घोणा'-युक्ताय वक्र-तुण्डाय नमः – वाम-पादांगुल्यग्रे (बाँएँ पैर की अँगुलियों के अग्र भाग में)

३७. ऐं ह्रीं श्रीं पं 'धनुर्धरा'-युक्ताय द्वि-तुण्डाय नमः – दक्ष-पार्श्वे (दाईं बगल में)

३८. ऐं ह्रीं श्रीं फं 'यामिनी'-युक्ताय सेनान्यै नमः – वाम-पार्श्वे (बाँईं बगल में)

३९. ऐं ह्रीं श्रीं बं 'रात्रि'-युक्ताय ग्रामण्यै नमः – पृष्ठे (पीठ में)

४०. ऐं ह्रीं श्रीं भं 'चन्द्रिका'-युक्ताय मत्ताय नमः – नाभौ (नाभि में)

४१. ऐं ह्रीं श्रीं मं 'शशि-प्रभा'-युक्ताय विमत्ताय नमः – जठरे (पेट में)

४२. ऐं ह्रीं श्रीं यं 'लोला'-युक्ताय मत्त-वाहनाय नमः – हृदि (हृदय में)

४३. ऐं ह्रीं श्रीं रं 'चपला'-युक्ताय जटिने नमः – दक्षांसे (दाँएँ कन्धे में)

४४. ऐं ह्रीं श्रीं लं 'ऋद्धि'-युक्ताय मुण्डिने नमः – ककुदि (गर्दन के पीछे मध्य में)

४५. ऐं ह्रीं श्रीं वं 'दुर्भगा'-युक्ताय खड्गिने नमः – वामांसे (बाँएँ कन्धे में)

४६. ऐं ह्रीं श्रीं शं 'सुभगा'-युक्ताय वरेण्याय नमः – हृदयादि दक्ष-करान्तम् (हृदय से दाहिने हाथ के अन्त तक)

४७. ऐं ह्रीं श्रीं षं 'शिवा'-युक्ताय वृष-केतनाय नमः – हृदयादि वाम-करान्तम् (हृदय से बाँएँ हाथ के अन्त तक)

४८. ऐं ह्रीं श्रीं सं 'दुर्गा'-युक्ताय भक्ष्य-प्रियाय नमः–हृदयादि दक्ष-पादान्तम् (हृदय से दाएँ पैर वे अन्त तक)

४९. ऐं ह्रीं श्रीं हं 'काली'-युक्ताय गणेशाय नमः– हृदयादि वाम-पादान्तम् (हृदय से बाँएँ पैर के अन्त तक)

५०. ऐं ह्रीं श्रीं ळं 'काल-कुब्जिका'-युक्ताय मेघ-नादाय नमः – हृदयादि गुह्यान्तम् (हृदय से गुह्य तक)

५१. ऐं ह्रीं श्रीं क्षं 'विघ्न-हारिणी'-युक्ताय गणेश्वराय नमः – हृदयादि मूर्धान्तम् (हृदय से शिर तक)

विशेष

अन्त में भगवान् महा-गणपति का 'मानसिक पूजन' करना चाहिए। यथा-

ऐं आत्म-तत्त्व-व्यापकाय-महा-गणपतये श्रीपादुकां पूजयामि नमः।
ह्रीं विद्या-तत्त्व-व्यापकाय-महा-गणपतये श्रीपादुकां पूजयामि नमः।
श्रीं शिव-तत्त्व-व्यापकाय-महा-गणपतये श्रीपादुकां पूजयामि नमः।

❖❖❖

श्रीमहा-गणपति-वज्र-पञ्जर-कवचम्

श्रीरुद्र-यामल-तन्त्रोक्त प्रस्तुत 'श्रीमहा-गणपति-वज्र-पञ्जर-कवच' साधकों के लिए बहुत महत्त्व-पूर्ण है। इसमें दी गई 'फल-श्रुति' के अनुसार बिना इसके 'पूजन' एवं 'जप' में सफलता प्राप्त नहीं होती। अतः साधकों को इस 'मन्त्र-मय कवच' का पाठ श्रद्धा-पूर्वक अवश्य करना चाहिए।

–सम्पादक

।। पूर्व-पीठिका ।।

महा-देवि! गणेशस्य, वरदस्य महात्मनः ।
कवचं ते प्रवक्ष्यामि, वज्र-पञ्जरकाभिधम् ।।

विनियोग– ॐ अस्य श्रीमहा-गणपति-वज्र-पञ्जर-कवचस्य श्रीभैरव ऋषिः, गायत्रं छन्दः, श्रीमहा-गणपतिः देवता, गं बीजं, ह्रीं शक्तिः, कुरु कुरु कीलकं, वज्र-विद्यादि-सिद्ध्यर्थे महा-गणपति-वज्र-पञ्जर-कवच-पाठे विनियोगः।

ऋष्यादि-न्यास– श्रीभैरव-ऋषये नमः शिरसि, गायत्र-छन्दसे नमः मुखे, श्रीमहा-गणपति-देवतायै नमः हृदि, गं-बीजाय नमः गुह्ये, ह्रीं-शक्तये नमः नाभौ, कुरु कुरु कीलकाय नमः पादयोः, वज्र-विद्यादि-सिद्ध्यर्थे-महा-गणपति-वज्र-पञ्जर-कवच-पाठे विनियोगाय नमः सर्वाङ्गे।

षडङ्ग-न्यास	कर-न्यास	अङ्ग-न्यास
गां	अंगुष्ठाभ्यां नमः	हृदयाय नमः
गीं	तर्जनीभ्यां नमः	शिरसे स्वाहा
गूं	मध्यमाभ्यां नमः	शिखायै वषट्
गैं	अनामिकाभ्यां नमः	कवचाय हुम्
गौं	कनिष्ठिकाभ्यां नमः	नेत्र-त्रयाय वौषट्
गः	करतल-करपृष्ठाभ्यां नमः	अस्त्राय फट्

ध्यान–

विघ्नेशं विश्व-वन्द्यं सु-विपुल-यशसं लोक-रक्षा-प्रदक्षम्।
साक्षात्-सर्वापदासु प्रशमन-सुमतिं पार्वती-प्राण-सूनुम् ।।
प्रायः सर्वासुरेन्द्रैः स-सुर-मुनि-गणैः साधकैः पूज्यमानम् ।
कारुण्येनान्तरायामित-भय-शमनं विघ्न-राजं नमामि ।।

।। कवच-पाठ ।।

ॐ श्रीं ह्रीं गं शिरः पातु, महा-गण-पतिः प्रभुः । विनायको ललाटं मे, विघ्न-राजो भ्रुवौ मम ।।१
पातु नेत्रे गणाध्यक्षो, नासिकां मे गजाननः। श्रुती मेऽवतु हेरम्बो, गण्डौ मे मोदकाशनः ।।२
द्वै-मातुरो मुखं पातु, चाधरौ पात्वरिन्दमः । दन्तान् ममैक-दन्तोऽव्याद्, वक्र-तुण्डोऽवताद् रसाम् ।।३
गाङ्गेयो मे गलं पातु, स्कन्धौ सिंहासनोऽवतु । विघ्नान्तको भुजौ पातु, हस्तौ मूषक-वाहनः ।।४

ऊरू ममावतान्नित्यं, देवस्त्रि-पुर-घातनः । हृदयं मे कुमारोऽव्याज्जयन्तः पार्श्व-युग्मकम् ।।५
प्रद्युम्नो मेऽवतात् पृष्ठं, नाभिं शङ्कर-नन्दनः । कटिं नन्दि-गणः पातु, शिश्नं वीरेश्वरोऽवतु ।।६
मेढ्रे मेऽवतु सौभाग्यो, भृङ्गिरीटी च गुह्यकम् । विराटकोऽवतादूरू, जानू मे पुष्प-दन्तकः ।।७
जङ्घे मम विकर्तोऽव्याद्, गुल्फावन्त्य-गणोऽवतु । पादौ चित्त-गणः पातु, पादाधो लोहितोऽवतु ।।८
पाद-पृष्ठं सुन्दरोऽव्याद्, नूपुराढ्यो वपुर्मम । विचारो जठरं पातु, भूतानि चोग्र-रूपकः ।।९
शिरसः पाद-पर्यन्तं, वपुः सप्त-गणोऽवतु । पादादि-मूर्ध-पर्यन्तं, वपुः पातु विनर्तकः ।।१०
विस्मारितं तु यत् स्थानं, गणेशस्तत् सदाऽवतु । पूर्वे मां ह्रीं करालोऽव्यादाग्नेये विकरालकः ।।११
दक्षिणे पातु संहारो, नैर्ऋते रुरु-भैरवः । पश्चिमे मां महा-कालो, वायौ कालाग्नि-भैरवः ।।१२
उत्तरे मां सितास्योऽव्यादैशान्यामसितात्मकः। प्रभाते शत-पत्रोऽव्यात्, सहस्त्रारस्तु मध्यमे ।।१३
दन्त-माला दिनान्तेऽव्यान्निशि पात्रं सदाऽवतु । कलशो मां निशीथेऽव्यान्निशान्ते परशुस्तथा ।।
सर्वत्र सर्वदा पातु शङ्ख-युग्मं च मद्-वपुः ।।१४
ॐ ॐ राज-कुले हौं हौं रण-भये ह्रीं ह्रीं कु-द्यूतेऽवतात् ।
श्रीं श्रीं शत्रु-गृहे शशौं जल-भये क्लीं क्लीं वनान्तेऽवतु ।
ग्लौं ग्लूं ग्लैं ग्लं गुं सत्त्व-भीतिषु महा-व्याध्यार्तिषु ग्लौं गं गौं ।
नित्यं यक्ष-पिशाच-भूत-फणिषु ग्लौं गं गणेशोऽवतु ।।१५

।। फल-श्रुति ।।

इतीदं कवचं गुह्यं, सर्व-तन्त्रेषु गोपितम् ।
वज्र-पञ्जर-नामानं, गणेशस्य महात्मनः ।।१
अङ्ग-भूतं मनु-मयं, सर्वाचारैक-साधनम् ।
विनानेन न सिद्धिः स्यात्, पूजनस्य जपस्य च ।।२
तस्मात् तु कवचं पुण्यं, पठेद्वा धारयेत् सदा ।
तस्य सिद्धिर्महा-देवि! करस्था पारलौकिकी ।।३
यं यं कामयते कामं, तं तं प्राप्नोति पाठतः ।
अर्ध-रात्रे पठेन्नित्यं, सर्वाभीष्ट-फलं लभेत् ।।४
इति गुह्यं सु-कवचं, महा-गणपतेः प्रियम् ।
सर्व-सिद्धिमयं दिव्यं, गोपयेत् परमेश्वरि ! ।।५

।। श्रीरुद्र-यामले तन्त्रे 'श्रीमहा-गणपति-कवचम्' ।।

❖❖❖

श्रीमहा-गणपति-द्वादशाक्षर-मन्त्र-साधना

विनियोग–ॐ अस्य श्रीमहा-गणपति-द्वादशाक्षर-मन्त्रस्य श्रीगणक ऋषिः। निवृद्-गायत्री छन्दः। श्रीमहा-गणपति देवता। सर्व-कामना-सिद्ध्यर्थे जपे विनियोगः।

ऋष्यादि-न्यास–शिरसि श्रीगणक-ऋषये नमः। मुखे निवृद्-गायत्री-छन्दसे नमः। हृदये श्रीमहा-गणपतये देवतायै नमः। सर्व-कामना-सिद्ध्यर्थे जपे विनियोगाय नमः अञ्जलौ।

कर-न्यास–ह्रीं अंगुष्ठाभ्यां नमः। गं तर्जनीभ्यां स्वाहा। ह्रीं मध्यमाभ्यां वषट्। महा-गणपतये अनामिकाभ्यां हुम्। स्वाहा कनिष्ठाभ्यां वौषट्। ह्री गं ह्रीं महा-गणपतये स्वाहा करतल-कर-पृष्ठाभ्यां फट्।

षडङ्ग-न्यास–ह्रीं हृदयाय नमः। गं शिरसे स्वाहा। ह्रीं शिखायै वषट्। महा-गणपतये कवचाय हुम्। स्वाहा नेत्र-त्रयाय वौषट्। ह्री गं ह्रीं महा-गणपतये स्वाहा अस्त्राय फट्।

ध्यान–

मुक्ता-गौरं मद-गज-मुखं चन्द्र-चूडं त्रि-नेत्रम्,
हस्तैः स्वीर्यर्दधतमरविन्दांकुशौ रत्न-कुम्भम् ।
अङ्कस्थायाः सरसिज-रुचेस्तद्-ध्वजालम्बि-पाणे-
र्देव्या योनौ विनिहित-करं रत्न-मौलिं भजामः।।

अर्थात् मोतियों के समान गौर-वर्ण। मतवाले हाथी-जैसा मुख। अर्द्ध-चन्द्र से युक्त चूड़ा। तीन नेत्र। तीन हाथों में पद्म, अंकुश और रत्न-कुम्भ। गोद में बैठी, ध्वजाग्र-भाग को अपने हाथ से स्पर्श करती हुई कमल-मुखी देवी की योनि पर चौथा हाथ। रत्न-मुकुट-धारी महा-गणपति की मैं वन्दना करता हूँ।

मानस-पूजा–

लं पृथिव्यात्मकं गन्धं श्रीमहा-गणपतये समर्पयामि नमः।
हं आकाशात्मकं पुष्पं श्रीमहा- गणपतये समर्पयामि नमः।
यं वाय्वात्मकं धूपं श्रीमहा-गणपतये घ्रापयामि नमः।
रं वह्न्यात्मकं दीपं श्रीमहा-गणपतये दर्शयामि नमः।
वं अमृतात्मकं नैवेद्यं श्रीमहा-गणपतये निवेदयामि नमः।
सं सर्वात्मकं ताम्बूलं श्रीमहा-गणपतये समर्पयामि नमः।

मन्त्र– ह्रीं गं ह्रीं महा-गणपतये स्वाहा (१२ अक्षर)।

मन्त्रार्थ-चिन्तन–

ह्रीं गं ह्रीं = माया की अमोघ शक्ति से युक्त 'गं' अर्थात् कष्टों एवं विघ्नों को दूर करनेवाले विश्वात्मा गणेश।

महा-गणपतये स्वाहा = महा-गणपति अर्थात् सर्व-साक्षी विश्वात्मा से एकीकरण।

जप-'**वर्ण-माला**' का ध्यान कर उक्त मन्त्र का 'जप' निम्न प्रकार करें। यथा-

अन्तर्विद्रुम-भासमान-भुजगां, सुप्तोत्थ-वर्णोज्ज्वलाम् ।
आरोहामवरोहिकां शत-मयीं, वर्गाष्टकाष्टोत्तरीम्।।
साक्षात् ब्रह्म-मयीं 'क्ष' मेरु-सहितां, श्रीमातृकाक्षावलीम् ।
विद्यां नौमि समस्त-मन्त्र-जननीं, ज्ञानैक-दीपांकुराम् ।।

ॐ

१. अं ह्रीं गं ह्रीं महा-गणपतये स्वाहा अं
२. आं ह्रीं गं ह्रीं महा-गणपतये स्वाहा आं
३. इं ह्रीं गं ह्रीं महा-गणपतये स्वाहा इं
४. ईं ह्रीं गं ह्रीं महा-गणपतये स्वाहा ईं
५. उं ह्रीं गं ह्रीं महा-गणपतये स्वाहा उं
६. ऊं ह्रीं गं ह्रीं महा-गणपतये स्वाहा ऊं
७. ऋं ह्रीं गं ह्रीं महा-गणपतये स्वाहा ऋं
८. ॠं ह्रीं गं ह्रीं महा-गणपतये स्वाहा ॠं
९. ऌं ह्रीं गं ह्रीं महा-गणपतये स्वाहा ऌं
१०. ॡं ह्रीं गं ह्रीं महा-गणपतये स्वाहा ॡं
११. एं ह्रीं गं ह्रीं महा-गणपतये स्वाहा एं
१२. ऐं ह्रीं गं ह्रीं महा-गणपतये स्वाहा ऐं
१३. ओं ह्रीं गं ह्रीं महा-गणपतये स्वाहा ओं
१४. औं ह्रीं गं ह्रीं महा-गणपतये स्वाहा औं
१५. अं ह्रीं गं ह्रीं महा-गणपतये स्वाहा अं
१६. अः ह्रीं गं ह्रीं महा-गणपतये स्वाहा अः
१७. कं ह्रीं गं ह्रीं महा-गणपतये स्वाहा कं
१८. खं ह्रीं गं ह्रीं महा-गणपतये स्वाहा खं
१९. गं ह्रीं गं ह्रीं महा-गणपतये स्वाहा गं
२०. घं ह्रीं गं ह्रीं महा-गणपतये स्वाहा घं
२१. ङं ह्रीं गं ह्रीं महा-गणपतये स्वाहा ङं
२२. चं ह्रीं गं ह्रीं महा-गणपतये स्वाहा चं
२३. छं ह्रीं गं ह्रीं महा-गणपतये स्वाहा छं
२४. जं ह्रीं गं ह्रीं महा-गणपतये स्वाहा जं
२५. झं ह्रीं गं ह्रीं महा-गणपतये स्वाहा झं
२६. ञं ह्रीं गं ह्रीं महा-गणपतये स्वाहा ञं
२७. टं ह्रीं गं ह्रीं महा-गणपतये स्वाहा टं
२८. ठं ह्रीं गं ह्रीं महा-गणपतये स्वाहा ठं
२९. डं ह्रीं गं ह्रीं महा-गणपतये स्वाहा डं
३०. ढं ह्रीं गं ह्रीं महा-गणपतये स्वाहा ढं
३१. णं ह्रीं गं ह्रीं महा-गणपतये स्वाहा णं
३२. तं ह्रीं गं ह्रीं महा-गणपतये स्वाहा तं
३३. थं ह्रीं गं ह्रीं महा-गणपतये स्वाहा थं
३४. दं ह्रीं गं ह्रीं महा-गणपतये स्वाहा दं
३५. धं ह्रीं गं ह्रीं महा-गणपतये स्वाहा धं
३६. नं ह्रीं गं ह्रीं महा-गणपतये स्वाहा नं
३७. पं ह्रीं गं ह्रीं महा-गणपतये स्वाहा पं
३८. फं ह्रीं गं ह्रीं महा-गणपतये स्वाहा फं
३९. बं ह्रीं गं ह्रीं महा-गणपतये स्वाहा बं
४०. भं ह्रीं गं ह्रीं महा-गणपतये स्वाहा भं
४१. मं ह्रीं गं ह्रीं महा-गणपतये स्वाहा मं
४२. यं ह्रीं गं ह्रीं महा-गणपतये स्वाहा यं
४३. रं ह्रीं गं ह्रीं महा-गणपतये स्वाहा रं
४४. लं ह्रीं गं ह्रीं महा-गणपतये स्वाहा लं
४५. वं ह्रीं गं ह्रीं महा-गणपतये स्वाहा वं
४६. शं ह्रीं गं ह्रीं महा-गणपतये स्वाहा शं
४७. षं ह्रीं गं ह्रीं महा-गणपतये स्वाहा षं
४८. सं ह्रीं गं ह्रीं महा-गणपतये स्वाहा सं
४९. हं ह्रीं गं ह्रीं महा-गणपतये स्वाहा हं
५०. ळं ह्रीं गं ह्रीं महा-गणपतये स्वाहा ळं

क्ष

५१. ळं ह्रीं गं ह्रीं महा-गणपतये स्वाहा ळं
५२. हं ह्रीं गं ह्रीं महा-गणपतये स्वाहा हं
५३. सं ह्रीं गं ह्रीं महा-गणपतये स्वाहा सं
५४. षं ह्रीं गं ह्रीं महा-गणपतये स्वाहा षं
५५. शं ह्रीं गं ह्रीं महा-गणपतये स्वाहा शं
५६. वं ह्रीं गं ह्रीं महा-गणपतये स्वाहा वं
५७. लं ह्रीं गं ह्रीं महा-गणपतये स्वाहा लं
५८. रं ह्रीं गं ह्रीं महा-गणपतये स्वाहा रं
५९. यं ह्रीं गं ह्रीं महा-गणपतये स्वाहा यं
६०. मं ह्रीं गं ह्रीं महा-गणपतये स्वाहा मं
६१. भं ह्रीं गं ह्रीं महा-गणपतये स्वाहा भं
६२. बं ह्रीं गं ह्रीं महा-गणपतये स्वाहा बं
६३. फं ह्रीं गं ह्रीं महा-गणपतये स्वाहा फं
६४. पं ह्रीं गं ह्रीं महा-गणपतये स्वाहा पं
६५. नं ह्रीं गं ह्रीं महा-गणपतये स्वाहा नं
६६. धं ह्रीं गं ह्रीं महा-गणपतये स्वाहा धं
६७. दं ह्रीं गं ह्रीं महा-गणपतये स्वाहा दं
६८. थं ह्रीं गं ह्रीं महा-गणपतये स्वाहा थं
६९. तं ह्रीं गं ह्रीं महा-गणपतये स्वाहा तं
७०. णं ह्रीं गं ह्रीं महा-गणपतये स्वाहा णं
७१. ढं ह्रीं गं ह्रीं महा-गणपतये स्वाहा ढं
७२. डं ह्रीं गं ह्रीं महा-गणपतये स्वाहा डं
७३. ठं ह्रीं गं ह्रीं महा-गणपतये स्वाहा ठं
७४. टं ह्रीं गं ह्रीं महा-गणपतये स्वाहा टं
७५. ञं ह्रीं गं ह्रीं महा-गणपतये स्वाहा ञं
७६. झं ह्रीं गं ह्रीं महा-गणपतये स्वाहा झं
७७. जं ह्रीं गं ह्रीं महा-गणपतये स्वाहा जं
७८. छं ह्रीं गं ह्रीं महा-गणपतये स्वाहा छं
७९. चं ह्रीं गं ह्रीं महा-गणपतये स्वाहा चं
८०. ङं ह्रीं गं ह्रीं महा-गणपतये स्वाहा ङं
८१. घं ह्रीं गं ह्रीं महा-गणपतये स्वाहा घं
८२. गं ह्रीं गं ह्रीं महा-गणपतये स्वाहा गं
८३. खं ह्रीं गं ह्रीं महा-गणपतये स्वाहा खं
८४. कं ह्रीं गं ह्रीं महा-गणपतये स्वाहा कं
८५. अः ह्रीं गं ह्रीं महा-गणपतये स्वाहा अः
८६. अं ह्रीं गं ह्रीं महा-गणपतये स्वाहा अं
८७. औं ह्रीं गं ह्रीं महा-गणपतये स्वाहा औं
८८. ओं ह्रीं गं ह्रीं महा-गणपतये स्वाहा ओं
८९. ऐं ह्रीं गं ह्रीं महा-गणपतये स्वाहा ऐं
९०. एं ह्रीं गं ह्रीं महा-गणपतये स्वाहा एं
९१. ॡं ह्रीं गं ह्रीं महा-गणपतये स्वाहा ॡं
९२. ऌं ह्रीं गं ह्रीं महा-गणपतये स्वाहा ऌं
९३. ॠं ह्रीं गं ह्रीं महा-गणपतये स्वाहा ॠं
९४. ऋं ह्रीं गं ह्रीं महा-गणपतये स्वाहा ऋं
९५. ऊं ह्रीं गं ह्रीं महा-गणपतये स्वाहा ऊं
९६. उं ह्रीं गं ह्रीं महा-गणपतये स्वाहा उं
९७. ईं ह्रीं गं ह्रीं महा-गणपतये स्वाहा ईं
९८. इं ह्रीं गं ह्रीं महा-गणपतये स्वाहा इं
९९. आं ह्रीं गं ह्रीं महा-गणपतये स्वाहा आं
१००. अं ह्रीं गं ह्रीं महा-गणपतये स्वाहा अं
१०१. अं ह्रीं गं ह्रीं महा-गणपतये स्वाहा अं
१०२. कं ह्रीं गं ह्रीं महा-गणपतये स्वाहा कं
१०३. चं ह्रीं गं ह्रीं महा-गणपतये स्वाहा चं
१०४. टं ह्रीं गं ह्रीं महा-गणपतये स्वाहा टं
१०५. तं ह्रीं गं ह्रीं महा-गणपतये स्वाहा तं
१०६. पं ह्रीं गं ह्रीं महा-गणपतये स्वाहा पं
१०७. यं ह्रीं गं ह्रीं महा-गणपतये स्वाहा यं
१०८. शं ह्रीं गं ह्रीं महा-गणपतये स्वाहा शं

होम- यथा-शक्ति 'जप' करने के बाद घृत द्वारा 'होम' करना चाहिए। १. इक्षु-खण्ड के होम से राज्य-श्री की प्राप्ति होती है। २. नारिकेल से होम करने के बाद पके केले के टुकड़ों से होम करने से वशीकरण होता है। ३. घी के होम के द्वारा धन की प्राप्ति होती है।

श्रीमहा-गणपति-एकादशाक्षर-मन्त्र-साधना

विनियोग–ॐ अस्य श्रीमहा-गणपति-एकादशाक्षर-मन्त्रस्य श्रीगणक ऋषिः। निवृद्-गायत्री छन्दः। श्रीमहा-गणपति देवता। सर्व-कामना-सिद्ध्यर्थे जपे विनियोगः।

ऋष्यादि-न्यास–शिरसि श्रीगणक-ऋषये नमः। मुखे निवृद्-गायत्री-छन्दसे नमः। हृदये श्रीमहा-गणपतये देवतायै नमः। सर्व-कामना-सिद्ध्यर्थे जपे विनियोगाय नमः अञ्जलौ।

कर-न्यास–ॐ अंगुष्ठाभ्यां नमः। ह्रीं गं ह्रीं तर्जनीभ्यां स्वाहा। वशं मध्यमाभ्यां वषट्। आनय अनामिकाभ्यां हुम्। स्वाहा कनिष्ठाभ्यां वौषट्। ॐ ह्री गं ह्रीं वशमानय स्वाहा करतल-कर-पृष्ठाभ्यां फट्।

षडङ्ग-न्यास–ॐ हृदयाय नमः। ह्रीं गं ह्रीं शिरसे स्वाहा। वशं शिखायै वषट्। आनय कवचाय हुम्। स्वाहा नेत्र-त्रयाय वौषट्। ॐ ह्री गं ह्रीं वशमानय स्वाहा अस्त्राय फट्।

ध्यान–

हस्तैर्विभ्रतमिक्षु-दण्ड-वरदौ पाशांकुशौ पुष्कर-
स्पृष्ट-स्व-प्रमदा-वराङ्गमनयाश्लिष्टं ध्वजाग्र-स्पृशा।
श्यामाङ्ग्या विधृताब्जया त्रि-नयनं चन्द्रार्द्ध-चूडं जवा-
रक्तं हस्ति-मुखं स्मरामि सततं भोगाति-लोलं विभुम् ।।

अर्थात् हाथों में ईख-दण्ड, वर-मुद्रा, पाश और अंकुश। श्याम-वर्णा कमल-हस्ता और ध्वजाग्र को स्पर्श करनेवाली स्व-पत्नी द्वारा आलिङ्गित। उसके वराङ्ग को स्पर्श करनेवाले। तीन नेत्र, अर्द्ध-चन्द्र से युक्त चूड़ा, जवा-पुष्प के सामन रक्त-वर्ण, गजानन एवं निरन्तर भोगासक्त भगवान् महा-गणपति का मैं स्मरण करता हूँ।

मानस-पूजा–

लं पृथिव्यात्मकं गन्धं श्रीमहा-गणपतये समर्पयामि नमः।
हं आकाशात्मकं पुष्पं श्रीमहा-गणपतये समर्पयामि नमः।
यं वाय्वात्मकं धूपं श्रीमहा-गणपतये घ्रापयामि नमः।
रं वह्न्यात्मकं दीपं श्रीमहा-गणपतये दर्शयामि नमः।
वं अमृतात्मकं नैवेद्यं श्रीमहा-गणपतये निवेदयामि नमः।
सं सर्वात्मकं ताम्बूलं श्रीमहा-गणपतये समर्पयामि नमः।

मन्त्र– ॐ ह्रीं गं ह्रीं वशमानय स्वाहा (११ अक्षर)।

मन्त्रार्थ-चिन्तन– ह्रीं गं ह्रीं = माया की अमोघ शक्ति से युक्त 'गं' अर्थात् कष्टों एवं विघ्नों को दूर करनेवाले विश्वात्मा गणेश।

वशमानय स्वाहा = सर्व-साक्षी महा-गणेश की इच्छा-शक्ति से 'आत्मा' का एकीकरण।

जप-'वर्ण-माला' का ध्यान कर उक्त मन्त्र का 'जप' निम्न प्रकार करें। यथा-

अन्तर्विद्रुम-भासमान-भुजगां, सुप्तोत्थ-वर्णोज्ज्वलाम् ।
आरोहामवरोहिकां शत-मयीं, वर्गाष्टकाष्टोत्तरीम्।।
साक्षात् ब्रह्म-मयीं 'क्ष' मेरु-सहितां, श्रीमातृकाक्षावलीम् ।
विद्यां नौमि समस्त-मन्त्र-जननीं, ज्ञानैक-दीपांकुराम् ।।

ॐ

१. अं ॐ ह्रीं गं ह्रीं वशमानय स्वाहा अं
२. आं ॐ ह्रीं गं ह्रीं वशमानय स्वाहा आं
३. इं ॐ ह्रीं गं ह्रीं वशमानय स्वाहा इं
४. ईं ॐ ह्रीं गं ह्रीं वशमानय स्वाहा ईं
५. उं ॐ ह्रीं गं ह्रीं वशमानय स्वाहा उं
६. ऊं ॐ ह्रीं गं ह्रीं वशमानय स्वाहा ऊं
७. ऋं ॐ ह्रीं गं ह्रीं वशमानय स्वाहा ऋं
८. ॠं ॐ ह्रीं गं ह्रीं वशमानय स्वाहा ॠं
९. ऌं ॐ ह्रीं गं ह्रीं वशमानय स्वाहा ऌं
१०. ॡं ॐ ह्रीं गं ह्रीं वशमानय स्वाहा ॡं
११. एं ॐ ह्रीं गं ह्रीं वशमानय स्वाहा एं
१२. ऐं ॐ ह्रीं गं ह्रीं वशमानय स्वाहा ऐं
१३. ओं ॐ ह्रीं गं ह्रीं वशमानय स्वाहा ओं
१४. औं ॐ ह्रीं गं ह्रीं वशमानय स्वाहा औं
१५. अं ॐ ह्रीं गं ह्रीं वशमानय स्वाहा अं
१६. अः ॐ ह्रीं गं ह्रीं वशमानय स्वाहा अः
१७. कं ॐ ह्रीं गं ह्रीं वशमानय स्वाहा कं
१८. खं ॐ ह्रीं गं ह्रीं वशमानय स्वाहा खं
१९. गं ॐ ह्रीं गं ह्रीं वशमानय स्वाहा गं
२०. घं ॐ ह्रीं गं ह्रीं वशमानय स्वाहा घं
२१. ङं ॐ ह्रीं गं ह्रीं वशमानय स्वाहा ङं
२२. चं ॐ ह्रीं गं ह्रीं वशमानय स्वाहा चं
२३. छं ॐ ह्रीं गं ह्रीं वशमानय स्वाहा छं
२४. जं ॐ ह्रीं गं ह्रीं वशमानय स्वाहा जं
२५. झं ॐ ह्रीं गं ह्रीं वशमानय स्वाहा झं
२६. ञं ॐ ह्रीं गं ह्रीं वशमानय स्वाहा ञं
२७. टं ॐ ह्रीं गं ह्रीं वशमानय स्वाहा टं
२८. ठं ॐ ह्रीं गं ह्रीं वशमानय स्वाहा ठं
२९. डं ॐ ह्रीं गं ह्रीं वशमानय स्वाहा डं
३०. ढं ॐ ह्रीं गं ह्रीं वशमानय स्वाहा ढं
३१. णं ॐ ह्रीं गं ह्रीं वशमानय स्वाहा णं
३२. तं ॐ ह्रीं गं ह्रीं वशमानय स्वाहा तं
३३. थं ॐ ह्रीं गं ह्रीं वशमानय स्वाहा थं
३४. दं ॐ ह्रीं गं ह्रीं वशमानय स्वाहा दं
३५. धं ॐ ह्रीं गं ह्रीं वशमानय स्वाहा धं
३६. नं ॐ ह्रीं गं ह्रीं वशमानय स्वाहा नं
३७. पं ॐ ह्रीं गं ह्रीं वशमानय स्वाहा पं
३८. फं ॐ ह्रीं गं ह्रीं वशमानय स्वाहा फं
३९. बं ॐ ह्रीं गं ह्रीं वशमानय स्वाहा बं
४०. भं ॐ ह्रीं गं ह्रीं वशमानय स्वाहा भं
४१. मं ॐ ह्रीं गं ह्रीं वशमानय स्वाहा मं
४२. यं ॐ ह्रीं गं ह्रीं वशमानय स्वाहा यं
४३. रं ॐ ह्रीं गं ह्रीं वशमानय स्वाहा रं
४४. लं ॐ ह्रीं गं ह्रीं वशमानय स्वाहा लं
४५. वं ॐ ह्रीं गं ह्रीं वशमानय स्वाहा वं
४६. शं ॐ ह्रीं गं ह्रीं वशमानय स्वाहा शं
४७. षं ॐ ह्रीं गं ह्रीं वशमानय स्वाहा षं
४८. सं ॐ ह्रीं गं ह्रीं वशमानय स्वाहा सं
४९. हं ॐ ह्रीं गं ह्रीं वशमानय स्वाहा हं
५०. ळं ॐ ह्रीं गं ह्रीं वशमानय स्वाहा ळं

क्ष

५१. ळं ॐ ह्रीं गं ह्रीं वशमानय स्वाहा ळं
५२. हं ॐ ह्रीं गं ह्रीं वशमानय स्वाहा हं

५३. सं ॐ ह्रीं गं ह्रीं वशमानय स्वाहा सं
५४. षं ॐ ह्रीं गं ह्रीं वशमानय स्वाहा षं
५५. शं ॐ ह्रीं गं ह्रीं वशमानय स्वाहा शं
५६. वं ॐ ह्रीं गं ह्रीं वशमानय स्वाहा वं
५७. लं ॐ ह्रीं गं ह्रीं वशमानय स्वाहा लं
५८. रं ॐ ह्रीं गं ह्रीं वशमानय स्वाहा रं
५९. यं ॐ ह्रीं गं ह्रीं वशमानय स्वाहा यं
६०. मं ॐ ह्रीं गं ह्रीं वशमानय स्वाहा मं
६१. भं ॐ ह्रीं गं ह्रीं वशमानय स्वाहा भं
६२. बं ॐ ह्रीं गं ह्रीं वशमानय स्वाहा बं
६३. फं ॐ ह्रीं गं ह्रीं वशमानय स्वाहा फं
६४. पं ॐ ह्रीं गं ह्रीं वशमानय स्वाहा पं
६५. नं ॐ ह्रीं गं ह्रीं वशमानय स्वाहा नं
६६. धं ॐ ह्रीं गं ह्रीं वशमानय स्वाहा धं
६७. दं ॐ ह्रीं गं ह्रीं वशमानय स्वाहा दं
६८. थं ॐ ह्रीं गं ह्रीं वशमानय स्वाहा थं
६९. तं ॐ ह्रीं गं ह्रीं वशमानय स्वाहा तं
७०. णं ॐ ह्रीं गं ह्रीं वशमानय स्वाहा णं
७१. ढं ॐ ह्रीं गं ह्रीं वशमानय स्वाहा ढं
७२. डं ॐ ह्रीं गं ह्रीं वशमानय स्वाहा डं
७३. ठं ॐ ह्रीं गं ह्रीं वशमानय स्वाहा ठं
७४. टं ॐ ह्रीं गं ह्रीं वशमानय स्वाहा टं
७५. ञं ॐ ह्रीं गं ह्रीं वशमानय स्वाहा ञं
७६. झं ॐ ह्रीं गं ह्रीं वशमानय स्वाहा झं
७७. जं ॐ ह्रीं गं ह्रीं वशमानय स्वाहा जं
७८. छं ॐ ह्रीं गं ह्रीं वशमानय स्वाहा छं
७९. चं ॐ ह्रीं गं ह्रीं वशमानय स्वाहा चं
८०. ङं ॐ ह्रीं गं ह्रीं वशमानय स्वाहा ङं
८१. घं ॐ ह्रीं गं ह्रीं वशमानय स्वाहा घं
८२. गं ॐ ह्रीं गं ह्रीं वशमानय स्वाहा गं
८३. खं ॐ ह्रीं गं ह्रीं वशमानय स्वाहा खं
८४. कं ॐ ह्रीं गं ह्रीं वशमानय स्वाहा कं
८५. अः ॐ ह्रीं गं ह्रीं वशमानय स्वाहा अः
८६. अं ॐ ह्रीं गं ह्रीं वशमानय स्वाहा अं
८७. औं ॐ ह्रीं गं ह्रीं वशमानय स्वाहा औं
८८. ओं ॐ ह्रीं गं ह्रीं वशमानय स्वाहा ओं
८९. ऐं ॐ ह्रीं गं ह्रीं वशमानय स्वाहा ऐं
९०. एं ॐ ह्रीं गं ह्रीं वशमानय स्वाहा एं
९१. ॡं ॐ ह्रीं गं ह्रीं वशमानय स्वाहा ॡं
९२. ऌं ॐ ह्रीं गं ह्रीं वशमानय स्वाहा ऌं
९३. ॠं ॐ ह्रीं गं ह्रीं वशमानय स्वाहा ॠं
९४. ऋं ॐ ह्रीं गं ह्रीं वशमानय स्वाहा ऋं
९५. ऊं ॐ ह्रीं गं ह्रीं वशमानय स्वाहा ऊं
९६. उं ॐ ह्रीं गं ह्रीं वशमानय स्वाहा उं
९७. ईं ॐ ह्रीं गं ह्रीं वशमानय स्वाहा ईं
९८. इं ॐ ह्रीं गं ह्रीं वशमानय स्वाहा इं
९९. आं ॐ ह्रीं गं ह्रीं वशमानय स्वाहा आं
१००. अं ॐ ह्रीं गं ह्रीं वशमानय स्वाहा अं
१०१. अं ॐ ह्रीं गं ह्रीं वशमानय स्वाहा अं
१०२. कं ॐ ह्रीं गं ह्रीं वशमानय स्वाहा कं
१०३. चं ॐ ह्रीं गं ह्रीं वशमानय स्वाहा चं
१०४. टं ॐ ह्रीं गं ह्रीं वशमानय स्वाहा टं
१०५. तं ॐ ह्रीं गं ह्रीं वशमानय स्वाहा तं
१०६. पं ॐ ह्रीं गं ह्रीं वशमानय स्वाहा पं
१०७. यं ॐ ह्रीं गं ह्रीं वशमानय स्वाहा यं
१०८. शं ॐ ह्रीं गं ह्रीं वशमानय स्वाहा शं

होम- यथा-शक्ति 'जप' करने के बाद १. मधुर-त्रय (घी, शहद, शक्कर) से युक्त ईख के टुकड़ों या पिष्टक अर्थात् किसी अनाज के आटे से बनाई गई रोटी या पूरी के टुकड़ों अथवा तिल के लड्डू, तिल-कुट से करे तो साध्य वशीभूत होता है। २. 'चतुर्थी' के दिन नारिकेल के टुकड़ों से होम करे, तो ऐश्वर्य की प्राप्ति होती है। ३. मधु-युक्त लवण (नमक) द्वारा 'होम' करने से भी साध्य का वशीकरण होता है।

श्रीमहा-गणपति-अष्टा-विंशत्यक्षर-मन्त्र-राज-साधना

विनियोग–ॐ अस्य श्रीमहा-गणपति-अष्टा-विंशत्यक्षर-मन्त्रस्य श्रीगणक ऋषिः। निवृद्-गायत्री छन्दः। श्रीमहा-गणपति देवता। सर्व-कामना-सिद्ध्यर्थे जपे विनियोगः।

ऋष्यादि-न्यास–शिरसि श्रीगणक-ऋषये नमः। मुखे निवृद्-गायत्री-छन्दसे नमः। हृदये श्रीमहा-गणपतये देवतायै नमः। सर्व-कामना-सिद्ध्यर्थे जपे विनियोगाय नमः अञ्जलौ।

कर-न्यास–ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गां अंगुष्ठाभ्यां नमः। ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गीं तर्जनीभ्यां स्वाहा। ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गूं मध्यमाभ्यां वषट्। ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गैं अनामिकाभ्यां हुम्। ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गौं कनिष्ठाभ्यां वौषट्। ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गः करतल-कर-पृष्ठाभ्यां फट्।

षडङ्ग-न्यास–ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गां हृदयाय नमः। ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गीं शिरसे स्वाहा। ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गूं शिखायै वषट्। ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गैं कवचाय हुम्। ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गौं नेत्र-त्रयाय वौषट्। ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गः अस्त्राय फट्।

ध्यान–

नव-रत्न-मयं द्वीपं, स्मरेदिक्षु-रसाम्बुधौ।
तद्-वीचि-धौत-पर्यन्तं, मन्द-मारुत-सेवितम् ।।
मन्दार-पारिजातादि-कल्प-वृक्ष-लताऽऽकुलम् ।
उद्भूत-रत्नच्छायाभिररुणी-कृत-भू-तलम् ।।
उद्यद्-दिन-करेन्दुभ्यामुद्-भासित-दिगन्तरम् ।
तस्य मध्ये पारिजातं, नव-रत्नं-मयं स्मरेत् ।।
ऋतुभिः सेवितं षड्भिरनिशं प्रीति-वर्द्धनैः ।
तस्याधस्तान्महा-पीठे, रचिते मातृकाम्बुजे।।
षट्-कोणान्तस्त्रि-कोणस्थं, महा-गणपतिं स्मरेत् ।

अर्थात् ईख के रस के सागर में नव-रत्नों से अलंकृत द्वीप। उस सागर का तट लहरों से स्वच्छ, मन्द पवन से सेवित और मन्दार, पारिजात आदि कल्प-वृक्ष एवं लताओं से परिपूर्ण। रत्नों से उत्पन्न प्रकाश की छाया से द्वीप का धरातल लालिमा से युक्त। उदीयमान सूर्य एवं चन्द्र से दिशाएँ प्रकाश-पूर्ण। इस प्रकार के द्वीप के मध्य में नव-रत्नों से सुशोभित एवं प्रीति को बढ़ानेवाली छः ऋतुओं द्वारा निरन्तर सेवित पारिजात वृक्ष। उस वृक्ष के नीचे षट्-कोण के मध्य में मातृका-वर्णों से रचित कमल पर त्रि-कोणात्मक महा-पीठ पर विराजमान महा-गणपति का ध्यान करें।

हस्तीन्द्राननमिन्दु-चूडमरुणच्छायं त्रि-नेत्रं रसा-
दाश्लिष्टं प्रियया स-पद्य-करया साङ्कस्थया सङ्गतम् ।।
बीजापूर-गदा-धनुस्त्रिशिख-युक्-चक्राब्ज-पाशोत्पलम् ।
ब्रीह्यग्र-स्व-विषाण-रत्न-कलशान् हस्तैर्वहन्तं भजे।।
गण्ड-पाली-गलद्-दान-पूर-लालस-मानसान् ।
द्वि-रेफान् कर्ण - तालाभ्यां वारयन्तं मुहुर्मुहुः ।।
कराग्र-धृत-माणिक्य-कुम्भ-वक्त्र-विनिःसृतैः ।
रत्न-वर्षैः प्रीणयन्तं, साधकान् मद-विह्वलम् ।।
माणिक्य-मुकुटोपेतं, रत्नाभरण-भूषितम् ।।

अर्थात् **गजेन्द्र-मुख** पर **अर्द्ध-चन्द्र-युक्त चूड़ा**। अरुणाभा-युक्त शरीर। **तीन नेत्र**। बाँई ओर विराजमान **पद्य-हस्ता प्रिया** द्वारा प्रीति-पूर्वक आलिङ्गित। हाथों में **अनार, गदा, धनुष, त्रिशूल, चक्र, पद्म, पाश, उत्पल, ब्रीहि-गुच्छ, अपना दाँत** और **रत्न-जटित कलश**। दोनों कनपटियों से झरते हुए **मद-जल** को पीने की इच्छावाले भौंरों को हटाने के लिए बारम्बार अपने दोनों कानों को हिलाते हुए। आगे बढ़े हुए हाथ में स्थित **माणिक्य-कलश** के मुख से रत्नों की वर्षा के द्वारा साधकों को प्रसन्न करते हुए। पानोल्लास से मस्त। **माणिक्य-मुकुट** को धारण करनेवाले। रत्नाभूषणों से सुशोभित **महा-गणपति** की मैं वन्दना करता हूँ।

मानस-पूजा–

लं पृथिव्यात्मकं गन्धं श्रीमहा-गणपतये समर्पयामि नमः।
हं आकाशात्मकं पुष्पं श्रीमहा-गणपतये समर्पयामि नमः।
यं वाय्वात्मकं धूपं श्रीमहा-गणपतये घ्रापयामि नमः।
रं वह्न्यात्मकं दीपं श्रीमहा-गणपतये दर्शयामि नमः।
वं अमृतात्मकं नैवेद्यं श्रीमहा-गणपतये निवेदयामि नमः।
सं सर्वात्मकं ताम्बूलं श्रीमहा-गणपतये समर्पयामि नमः।

मन्त्र– **ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये वर-वरद सर्व-जनं मे वशमानय स्वाहा** (२८)।

मन्त्रार्थ-चिन्तन–

ॐ = मुक्ति या मोक्ष को देनेवाले। **श्रीं** = श्रेयत्व को देनेवाले। **ह्रीं** = माया की अमोघ शक्ति देनेवाले। **क्लीं** = सम्पूर्ण कामनाएँ पूर्ण करनेवाले। **ग्लौं** = दुःख को दूर करनेवाले।
गं गणपतये = कष्टों एवं विघ्नों को दूर करनेवाले सर्व-साक्षी विश्वात्मा महा-गणेश
वर-वरद = श्रेष्ठ वर प्रदान करें,
सर्व-जनं मे वशमानय स्वाहा = सभी लोगों को मेरे अनुकूल बनाएँ।

जप-'वर्ण-माला' का ध्यान कर उक्त मन्त्र का 'जप' निम्न प्रकार करें। यथा-

अन्तर्विद्रुम-भासमान-भुजगां, सुप्तोत्थ-वर्णोज्ज्वलाम् ।
आरोहामवरोहिकां शत-मयीं, वर्गाष्टकाष्टोत्तरीम्।।
साक्षात् ब्रह्म-मयीं 'क्ष' मेरु-सहितां, श्रीमातृकाक्षावलीम् ।
विद्यां नौमि समस्त-मन्त्र-जननीं, ज्ञानैक-दीपांकुराम् ।।

१. अं ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये वर-वरद सर्व-जनं मे वशमानय स्वाहा अं
२. आं ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये वर-वरद सर्व-जनं मे वशमानय स्वाहा आं
३. इं ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये वर-वरद सर्व-जनं मे वशमानय स्वाहा इं
४. ईं ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये वर-वरद सर्व-जनं मे वशमानय स्वाहा ईं
५. उं ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये वर-वरद सर्व-जनं मे वशमानय स्वाहा उं
६. ऊं ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये वर-वरद सर्व-जनं मे वशमानय स्वाहा ऊं
७. ऋं ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये वर-वरद सर्व-जनं मे वशमानय स्वाहा ऋं
८. ॠं ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये वर-वरद सर्व-जनं मे वशमानय स्वाहा ॠं
९. ऌं ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये वर-वरद सर्व-जनं मे वशमानय स्वाहा ऌं
१०. ॡं ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये वर-वरद सर्व-जनं मे वशमानय स्वाहा ॡं
११. एं ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये वर-वरद सर्व-जनं मे वशमानय स्वाहा एं
१२. ऐं ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये वर-वरद सर्व-जनं मे वशमानय स्वाहा ऐं
१३. ओं ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये वर-वरद सर्व-जनं मे वशमानय स्वाहा ओं
१४. औं ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये वर-वरद सर्व-जनं मे वशमानय स्वाहा औं
१५. अं ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये वर-वरद सर्व-जनं मे वशमानय स्वाहा अं
१६. अः ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये वर-वरद सर्व-जनं मे वशमानय स्वाहा अः
१७. कं ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये वर-वरद सर्व-जनं मे वशमानय स्वाहा कं
१८. खं ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये वर-वरद सर्व-जनं मे वशमानय स्वाहा खं
१९. गं ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये वर-वरद सर्व-जनं मे वशमानय स्वाहा गं
२०. घं ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये वर-वरद सर्व-जनं मे वशमानय स्वाहा घं
२१. ङं ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये वर-वरद सर्व-जनं मे वशमानय स्वाहा ङं
२२. चं ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये वर-वरद सर्व-जनं मे वशमानय स्वाहा चं
२३. छं ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये वर-वरद सर्व-जनं मे वशमानय स्वाहा छं
२४. जं ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये वर-वरद सर्व-जनं मे वशमानय स्वाहा जं
२५. झं ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये वर-वरद सर्व-जनं मे वशमानय स्वाहा झं

२६. ञं ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये वर-वरद सर्व-जनं मे वशमानय स्वाहा ञं
२७. टं ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये वर-वरद सर्व-जनं मे वशमानय स्वाहा टं
२८. ठं ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये वर-वरद सर्व-जनं मे वशमानय स्वाहा ठं
२९. डं ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये वर-वरद सर्व-जनं मे वशमानय स्वाहा डं
३०. ढं ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये वर-वरद सर्व-जनं मे वशमानय स्वाहा ढं
३१. णं ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये वर-वरद सर्व-जनं मे वशमानय स्वाहा णं
३२. तं ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये वर-वरद सर्व-जनं मे वशमानय स्वाहा तं
३३. थं ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये वर-वरद सर्व-जनं मे वशमानय स्वाहा थं
३४. दं ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये वर-वरद सर्व-जनं मे वशमानय स्वाहा दं
३५. धं ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये वर-वरद सर्व-जनं मे वशमानय स्वाहा धं
३६. नं ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये वर-वरद सर्व-जनं मे वशमानय स्वाहा नं
३७. पं ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये वर-वरद सर्व-जनं मे वशमानय स्वाहा पं
३८. फं ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये वर-वरद सर्व-जनं मे वशमानय स्वाहा फं
३९. बं ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये वर-वरद सर्व-जनं मे वशमानय स्वाहा बं
४०. भं ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये वर-वरद सर्व-जनं मे वशमानय स्वाहा भं
४१. मं ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये वर-वरद सर्व-जनं मे वशमानय स्वाहा मं
४२. यं ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये वर-वरद सर्व-जनं मे वशमानय स्वाहा यं
४३. रं ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये वर-वरद सर्व-जनं मे वशमानय स्वाहा रं
४४. लं ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये वर-वरद सर्व-जनं मे वशमानय स्वाहा लं
४५. वं ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये वर-वरद सर्व-जनं मे वशमानय स्वाहा वं
४६. शं ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये वर-वरद सर्व-जनं मे वशमानय स्वाहा शं
४७. षं ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये वर-वरद सर्व-जनं मे वशमानय स्वाहा षं
४८. सं ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये वर-वरद सर्व-जनं मे वशमानय स्वाहा सं
४९. हं ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये वर-वरद सर्व-जनं मे वशमानय स्वाहा हं
५०. ळं ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये वर-वरद सर्व-जनं मे वशमानय स्वाहा ळं

क्ष

५१. ळं ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये वर-वरद सर्व-जनं मे वशमानय स्वाहा ळं
५२. हं ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये वर-वरद सर्व-जनं मे वशमानय स्वाहा हं
५३. सं ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये वर-वरद सर्व-जनं मे वशमानय स्वाहा सं
५४. षं ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये वर-वरद सर्व-जनं मे वशमानय स्वाहा षं
५५. शं ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये वर-वरद सर्व-जनं मे वशमानय स्वाहा शं

५६. वं ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये वर-वरद सर्व-जनं मे वशमानय स्वाहा वं
५७. लं ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये वर-वरद सर्व-जनं मे वशमानय स्वाहा लं
५८. रं ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये वर-वरद सर्व-जनं मे वशमानय स्वाहा रं
५९. यं ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये वर-वरद सर्व-जनं मे वशमानय स्वाहा यं
६०. मं ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये वर-वरद सर्व-जनं मे वशमानय स्वाहा मं
६१. भं ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये वर-वरद सर्व-जनं मे वशमानय स्वाहा भं
६२. बं ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये वर-वरद सर्व-जनं मे वशमानय स्वाहा बं
६३. फं ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये वर-वरद सर्व-जनं मे वशमानय स्वाहा फं
६४. पं ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये वर-वरद सर्व-जनं मे वशमानय स्वाहा पं
६५. नं ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये वर-वरद सर्व-जनं मे वशमानय स्वाहा नं
६६. धं ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये वर-वरद सर्व-जनं मे वशमानय स्वाहा धं
६७. दं ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये वर-वरद सर्व-जनं मे वशमानय स्वाहा दं
६८. थं ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये वर-वरद सर्व-जनं मे वशमानय स्वाहा थं
६९. तं ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये वर-वरद सर्व-जनं मे वशमानय स्वाहा तं
७०. णं ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये वर-वरद सर्व-जनं मे वशमानय स्वाहा णं
७१. ढं ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये वर-वरद सर्व-जनं मे वशमानय स्वाहा ढं
७२. डं ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये वर-वरद सर्व-जनं मे वशमानय स्वाहा डं
७३. ठं ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये वर-वरद सर्व-जनं मे वशमानय स्वाहा ठं
७४. टं ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये वर-वरद सर्व-जनं मे वशमानय स्वाहा टं
७५. ञं ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये वर-वरद सर्व-जनं मे वशमानय स्वाहा ञं
७६. झं ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये वर-वरद सर्व-जनं मे वशमानय स्वाहा झं
७७. जं ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये वर-वरद सर्व-जनं मे वशमानय स्वाहा जं
७८. छं ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये वर-वरद सर्व-जनं मे वशमानय स्वाहा छं
७९. चं ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये वर-वरद सर्व-जनं मे वशमानय स्वाहा चं
८०. ङं ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये वर-वरद सर्व-जनं मे वशमानय स्वाहा ङं
८१. घं ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये वर-वरद सर्व-जनं मे वशमानय स्वाहा घं
८२. गं ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये वर-वरद सर्व-जनं मे वशमानय स्वाहा गं
८३. खं ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये वर-वरद सर्व-जनं मे वशमानय स्वाहा खं
८४. कं ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये वर-वरद सर्व-जनं मे वशमानय स्वाहा कं
८५. अः ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये वर-वरद सर्व-जनं मे वशमानय स्वाहा अः
८६. अं ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये वर-वरद सर्व-जनं मे वशमानय स्वाहा अं

८७. औं ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये वर-वरद सर्व-जनं मे वशमानय स्वाहा औं
८८. ओं ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये वर-वरद सर्व-जनं मे वशमानय स्वाहा ओं
८९. ऐं ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये वर-वरद सर्व-जनं मे वशमानय स्वाहा ऐं
९०. एं ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये वर-वरद सर्व-जनं मे वशमानय स्वाहा एं
९१. लृं ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये वर-वरद सर्व-जनं मे वशमानय स्वाहा लृं
९२. ऌं ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये वर-वरद सर्व-जनं मे वशमानय स्वाहा ऌं
९३. ॠं ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये वर-वरद सर्व-जनं मे वशमानय स्वाहा ॠं
९४. ऋं ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये वर-वरद सर्व-जनं मे वशमानय स्वाहा ऋं
९५. ऊं ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये वर-वरद सर्व-जनं मे वशमानय स्वाहा ऊं
९६. उं ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये वर-वरद सर्व-जनं मे वशमानय स्वाहा उं
९७. ईं ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये वर-वरद सर्व-जनं मे वशमानय स्वाहा ईं
९८. इं ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये वर-वरद सर्व-जनं मे वशमानय स्वाहा इं
९९. आं ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये वर-वरद सर्व-जनं मे वशमानय स्वाहा आं
१००. अं ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये वर-वरद सर्व-जनं मे वशमानय स्वाहा अं
१०१. अं ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये वर-वरद सर्व-जनं मे वशमानय स्वाहा अं
१०२. कं ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये वर-वरद सर्व-जनं मे वशमानय स्वाहा कं
१०३. चं ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये वर-वरद सर्व-जनं मे वशमानय स्वाहा चं
१०४. टं ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये वर-वरद सर्व-जनं मे वशमानय स्वाहा टं
१०५. तं ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये वर-वरद सर्व-जनं मे वशमानय स्वाहा तं
१०६. पं ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये वर-वरद सर्व-जनं मे वशमानय स्वाहा पं
१०७. यं ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये वर-वरद सर्व-जनं मे वशमानय स्वाहा यं
१०८. शं ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये वर-वरद सर्व-जनं मे वशमानय स्वाहा शं

होम– यथा-शक्ति '**जप**' करने के बाद **१. पद्म (कमल)** के पुष्पों एवं **पीपल** की समिधा या **गूलर** की समिधा या **वट** की समिधा के द्वारा '**होम**' करने से साध्य का वशीकरण होता है। **२. मधु** (शहद) के '**होम**' से 'स्वर्ण' की प्राप्ति होती है। **३. गो-दुग्ध** के होम से गो-धन की प्राप्ति होती है। **४. 'घृत'** के होम से महती श्री का लाभ होता है। **५. 'दधि'** के होम से सर्व-समृद्धि की प्राप्ति होती है। **६. 'अन्न'** के होम से अन्न की वृद्धि होती है। **७. कुसुम्भ (केसर)** के पुष्पों से 'होम' करने से वस्त्र की प्राप्ति होती है।

❖❖❖

श्रीउच्छिष्ट-महा-गणपति-एकाधिक-चत्वारिंशदक्षर-मन्त्र-साधना

विनियोग– ॐ अस्य श्री उच्छिष्ट-महा-गणपति-एकाधिक-चत्वारिंशदक्षर-मन्त्रस्य श्रीमतङ्ग भगवान् ऋषिः। गायत्री छन्दः। श्री उच्छिष्ट-महा-गणपति देवता। 'गं' बीजं। 'स्वाहा' शक्तिः। 'ह्रीं' कीलकं। मम अभीष्ट-सिद्ध्यर्थे जपे विनियोगः।

ऋष्यादि-न्यास– शिरसि श्रीमतङ्ग-भगवान्-ऋषये नमः। मुखे गायत्री-छन्दसे नमः। हृदये श्री उच्छिष्ट-महा-गणपति देवतायै नमः। लिङ्गे 'गं'-बीजाय नमः। नाभौ 'स्वाहा'-शक्तये नमः। पादयोः 'ह्रीं'-कीलकाय नमः। मम अभीष्ट-सिद्ध्यर्थे जपे विनियोगाय नमः अञ्जलौ।

कर-न्यास– ॐ नमो भगवते अंगुष्ठाभ्यां नमः। एक-दंष्ट्राय हस्ति-मुखाय तर्जनीभ्यां स्वाहा। लम्बोदराय मध्यमाभ्यां वषट्। उच्छिष्ट-महात्मने अनामिकाभ्यां हुम्। आं क्रों ह्रीं गं घे घे कनिष्ठाभ्यां वौषट्। उच्छिष्टाय स्वाहा करतल-कर-पृष्ठाभ्यां फट्।

षडङ्ग-न्यास– ॐ नमो भगवते हृदयाय नमः। एक-दंष्ट्राय हस्ति-मुखाय शिरसे स्वाहा। लम्बोदराय शिखायै वषट्। उच्छिष्ट-महात्मने कवचाय हुम्। आं क्रों ह्रीं गं घे घे नेत्र-त्रयाय वौषट्। उच्छिष्टाय स्वाहा अस्त्राय फट्।

ध्यान–

शरान् धनुः पाश-सृणी स्व-हस्तैर्दधानमारक्त-सरोरुहस्थम् ।
विवस्त्र-पत्न्यां सुरत-प्रवृत्तमुच्छिष्टमम्बा-सुतमाश्रयेऽहम् ।।

अर्थात् लाल कमल पर आसीन, बाँएँ हाथों में धनुष एवं पाश, दाहिने हाथों में शर एवं अंकुश धारण किए हुए, अपनी विवस्त्र पत्नियों से रति में निरत पार्वती-पुत्र श्रीउच्छिष्ट-महा-गणपति का मैं आश्रय लेता हूँ।

मानस-पूजा– लं पृथिव्यात्मकं गन्धं श्रीउच्छिष्ट-महा-गणपतये समर्पयामि नमः।
हं आकाशात्मकं पुष्पं श्रीउच्छिष्ट-महा-गणपतये समर्पयामि नमः।
यं वाय्वात्मकं धूपं श्रीउच्छिष्ट-महा-गणपतये घ्रापयामि नमः।
रं वह्न्यात्मकं दीपं श्रीउच्छिष्ट-महा-गणपतये दर्शयामि नमः।
वं अमृतात्मकं नैवेद्यं श्रीउच्छिष्ट-महा-गणपतये निवेदयामि नमः।
सं सर्वात्मकं ताम्बूलं श्रीउच्छिष्ट-महा-गणपतये समर्पयामि नमः।

मन्त्र– ॐ नमो भगवते एक-दंष्ट्राय हस्ति-मुखाय लम्बोदराय उच्छिष्ट-महात्मने आं क्रों ह्रीं गं घे घे उच्छिष्टाय स्वाहा (४१ अक्षर)।

मन्त्रार्थ-चिन्तन– ॐ = मुक्ति या मोक्ष को देनेवाले। **एक-दंष्ट्राय** अर्थात् एक-दन्तधारी (आदि-मध्य-अन्त-हीन अद्वितीय), **हस्ति-मुखाय** अर्थात् हस्ति-मुखवाले (भू-तत्त्वात्मक), **लम्बोदराय** अर्थात् लम्बे उदरवाले। **उच्छिष्ट-महात्मने** अर्थात् हम सबके अन्तर में अवशिष्ट-रूप से रहनेवाले, अत्यन्त उदार चित्तवाले, सिद्धियों के द्वार-स्वरूप, सर्व-साक्षी पूज्य विश्वात्मा को प्रणाम।

आं = 'पाश'-धारण करनेवाले

क्रों = 'अंकुश'-धारण करनेवाले

ह्रीं गं घे घे उच्छिष्टाय स्वाहा = माया की अमोघ शक्ति से युक्त सर्व-साक्षी विश्वात्मा महा-गणेश की मेघ-स्वरूपा उस कृपा-शक्ति से एकीकरण, जो उच्छिष्ट-रूप में हमें सदा-सर्वदा प्राप्त होती है।

जप-'**वर्ण-माला**' का ध्यान कर उक्त मन्त्र का '**जप**' निम्न प्रकार करें। यथा-

अन्तर्विद्रुम-भासमान-भुजगां, सुप्तोत्थ-वर्णोज्ज्वलाम् ।
आरोहामवरोहिकां शत-मयीं, वर्गाष्टकाष्टोत्तरीम्।।
साक्षात् ब्रह्म-मयीं 'क्ष' मेरु-सहितां, श्रीमातृकाक्षावलीम् ।
विद्यां नौमि समस्त-मन्त्र-जननीं, ज्ञानैक-दीपांकुराम् ।।

१. अं ॐ नमो भगवते एक-दंष्ट्राय हस्ति-मुखाय लम्बोदराय उच्छिष्ट-महात्मने आं क्रों ह्रीं गं घे घे उच्छिष्टाय स्वाहा अं

२. आं ॐ नमो भगवते एक-दंष्ट्राय हस्ति-मुखाय लम्बोदराय उच्छिष्ट-महात्मने आं क्रों ह्रीं गं घे घे उच्छिष्टाय स्वाहा आं

३. इं ॐ नमो भगवते एक-दंष्ट्राय हस्ति-मुखाय लम्बोदराय उच्छिष्ट-महात्मने आं क्रों ह्रीं गं घे घे उच्छिष्टाय स्वाहा इं

४. ईं ॐ नमो भगवते एक-दंष्ट्राय हस्ति-मुखाय लम्बोदराय उच्छिष्ट-महात्मने आं क्रों ह्रीं गं घे घे उच्छिष्टाय स्वाहा ईं

५. उं ॐ नमो भगवते एक-दंष्ट्राय हस्ति-मुखाय लम्बोदराय उच्छिष्ट-महात्मने आं क्रों ह्रीं गं घे घे उच्छिष्टाय स्वाहा उं

६. ऊं ॐ नमो भगवते एक-दंष्ट्राय हस्ति-मुखाय लम्बोदराय उच्छिष्ट-महात्मने आं क्रों ह्रीं गं घे घे उच्छिष्टाय स्वाहा ऊं

७. ऋं ॐ नमो भगवते एक-दंष्ट्राय हस्ति-मुखाय लम्बोदराय उच्छिष्ट-महात्मने आं क्रों ह्रीं गं घे घे उच्छिष्टाय स्वाहा ऋं

८. ॠं ॐ नमो भगवते एक-दंष्ट्राय हस्ति-मुखाय लम्बोदराय उच्छिष्ट-महात्मने आं क्रों ह्रीं गं घे घे उच्छिष्टाय स्वाहा ॠं

९. लृं ॐ नमो भगवते एक-दंष्ट्राय हस्ति-मुखाय लम्बोदराय उच्छिष्ट-महात्मने आं क्रों ह्रीं गं घे घे उच्छिष्टाय स्वाहा लृं

१०. लॄं ॐ नमो भगवते एक-दंष्ट्राय हस्ति-मुखाय लम्बोदराय उच्छिष्ट-महात्मने आं क्रों ह्रीं गं घे घे उच्छिष्टाय स्वाहा लॄं

११. एं ॐ नमो भगवते एक-दंष्ट्राय हस्ति-मुखाय लम्बोदराय उच्छिष्ट-महात्मने आं क्रों ह्रीं गं घे घे उच्छिष्टाय स्वाहा एं

१२. ऐं ॐ नमो भगवते एक-दंष्ट्राय हस्ति-मुखाय लम्बोदराय उच्छिष्ट-महात्मने आं क्रों ह्रीं गं घे घे उच्छिष्टाय स्वाहा ऐं

१३. ओं ॐ नमो भगवते एक-दंष्ट्राय हस्ति-मुखाय लम्बोदराय उच्छिष्ट-महात्मने आं क्रों ह्रीं गं घे घे उच्छिष्टाय स्वाहा ओं

१४. औं ॐ नमो भगवते एक-दंष्ट्राय हस्ति-मुखाय लम्बोदराय उच्छिष्ट-महात्मने आं क्रों ह्रीं गं घे घे उच्छिष्टाय स्वाहा औं

१५. अं ॐ नमो भगवते एक-दंष्ट्राय हस्ति-मुखाय लम्बोदराय उच्छिष्ट-महात्मने आं क्रों ह्रीं गं घे घे उच्छिष्टाय स्वाहा अं

१६. अः ॐ नमो भगवते एक-दंष्ट्राय हस्ति-मुखाय लम्बोदराय उच्छिष्ट-महात्मने आं क्रों ह्रीं गं घे घे उच्छिष्टाय स्वाहा अः

१७. कं ॐ नमो भगवते एक-दंष्ट्राय हस्ति-मुखाय लम्बोदराय उच्छिष्ट-महात्मने आं क्रों ह्रीं गं घे घे उच्छिष्टाय स्वाहा कं

१८. खं ॐ नमो भगवते एक-दंष्ट्राय हस्ति-मुखाय लम्बोदराय उच्छिष्ट-महात्मने आं क्रों ह्रीं गं घे घे उच्छिष्टाय स्वाहा खं

१९. गं ॐ नमो भगवते एक-दंष्ट्राय हस्ति-मुखाय लम्बोदराय उच्छिष्ट-महात्मने आं क्रों ह्रीं गं घे घे उच्छिष्टाय स्वाहा गं

२०. घं ॐ नमो भगवते एक-दंष्ट्राय हस्ति-मुखाय लम्बोदराय उच्छिष्ट-महात्मने आं क्रों ह्रीं गं घे घे उच्छिष्टाय स्वाहा घं

२१. ङं ॐ नमो भगवते एक-दंष्ट्राय हस्ति-मुखाय लम्बोदराय उच्छिष्ट-महात्मने आं क्रों ह्रीं गं घे घे उच्छिष्टाय स्वाहा ङं

२२. चं ॐ नमो भगवते एक-दंष्ट्राय हस्ति-मुखाय लम्बोदराय उच्छिष्ट-महात्मने आं क्रों ह्रीं गं घे घे उच्छिष्टाय स्वाहा चं

२३. छं ॐ नमो भगवते एक-दंष्ट्राय हस्ति-मुखाय लम्बोदराय उच्छिष्ट-महात्मने आं क्रों ह्रीं गं घे घे उच्छिष्टाय स्वाहा छं

२४. जं ॐ नमो भगवते एक-दंष्ट्राय हस्ति-मुखाय लम्बोदराय उच्छिष्ट-महात्मने आं क्रों ह्रीं गं घे घे उच्छिष्टाय स्वाहा जं

२५. झं ॐ नमो भगवते एक-दंष्ट्राय हस्ति-मुखाय लम्बोदराय उच्छिष्ट-महात्मने आं क्रों ह्रीं गं घे घे उच्छिष्टाय स्वाहा झं

२६. ञं ॐ नमो भगवते एक-दंष्ट्राय हस्ति-मुखाय लम्बोदराय उच्छिष्ट-महात्मने आं क्रों ह्रीं गं घे घे उच्छिष्टाय स्वाहा ञं

२७. टं ॐ नमो भगवते एक-दंष्ट्राय हस्ति-मुखाय लम्बोदराय उच्छिष्ट-महात्मने आं क्रों ह्रीं गं घे घे उच्छिष्टाय स्वाहा टं

२८. ठं ॐ नमो भगवते एक-दंष्ट्राय हस्ति-मुखाय लम्बोदराय उच्छिष्ट-महात्मने आं क्रों ह्रीं गं घे घे उच्छिष्टाय स्वाहा ठं

२९. डं ॐ नमो भगवते एक-दंष्ट्राय हस्ति-मुखाय लम्बोदराय उच्छिष्ट-महात्मने आं क्रों ह्रीं गं घे घे उच्छिष्टाय स्वाहा डं

३०. ढं ॐ नमो भगवते एक-दंष्ट्राय हस्ति-मुखाय लम्बोदराय उच्छिष्ट-महात्मने आं क्रों ह्रीं गं घे घे उच्छिष्टाय स्वाहा ढं

३१. णं ॐ नमो भगवते एक-दंष्ट्राय हस्ति-मुखाय लम्बोदराय उच्छिष्ट-महात्मने आं क्रों ह्रीं गं घे घे उच्छिष्टाय स्वाहा णं

३२. तं ॐ नमो भगवते एक-दंष्ट्राय हस्ति-मुखाय लम्बोदराय उच्छिष्ट-महात्मने आं क्रों ह्रीं गं घे घे उच्छिष्टाय स्वाहा तं

३३. थं ॐ नमो भगवते एक-दंष्ट्राय हस्ति-मुखाय लम्बोदराय उच्छिष्ट-महात्मने आं क्रों ह्रीं गं घे घे उच्छिष्टाय स्वाहा थं

३४. दं ॐ नमो भगवते एक-दंष्ट्राय हस्ति-मुखाय लम्बोदराय उच्छिष्ट-महात्मने आं क्रों ह्रीं गं घे घे उच्छिष्टाय स्वाहा दं

३५. धं ॐ नमो भगवते एक-दंष्ट्राय हस्ति-मुखाय लम्बोदराय उच्छिष्ट-महात्मने आं क्रों ह्रीं गं घे घे उच्छिष्टाय स्वाहा धं

३६. नं ॐ नमो भगवते एक-दंष्ट्राय हस्ति-मुखाय लम्बोदराय उच्छिष्ट-महात्मने आं क्रों ह्रीं गं घे घे उच्छिष्टाय स्वाहा नं

३७. पं ॐ नमो भगवते एक-दंष्ट्राय हस्ति-मुखाय लम्बोदराय उच्छिष्ट-महात्मने आं क्रों ह्रीं गं घे घे उच्छिष्टाय स्वाहा पं

३८. फं ॐ नमो भगवते एक-दंष्ट्राय हस्ति-मुखाय लम्बोदराय उच्छिष्ट-महात्मने आं क्रों ह्रीं गं घे घे उच्छिष्टाय स्वाहा फं

३९. बं ॐ नमो भगवते एक-दंष्ट्राय हस्ति-मुखाय लम्बोदराय उच्छिष्ट-महात्मने आं क्रों ह्रीं गं घे घे उच्छिष्टाय स्वाहा बं

४०. भं ॐ नमो भगवते एक-दंष्ट्राय हस्ति-मुखाय लम्बोदराय उच्छिष्ट-महात्मने आं क्रों ह्रीं गं घे घे उच्छिष्टाय स्वाहा भं

४१. मं ॐ नमो भगवते एक-दंष्ट्राय हस्ति-मुखाय लम्बोदराय उच्छिष्ट-महात्मने आं क्रों ह्रीं गं घे घे उच्छिष्टाय स्वाहा मं

४२. यं ॐ नमो भगवते एक-दंष्ट्राय हस्ति-मुखाय लम्बोदराय उच्छिष्ट-महात्मने आं क्रों ह्रीं गं घे घे उच्छिष्टाय स्वाहा यं

४३. रं ॐ नमो भगवते एक-दंष्ट्राय हस्ति-मुखाय लम्बोदराय उच्छिष्ट-महात्मने आं क्रों ह्रीं गं घे घे उच्छिष्टाय स्वाहा रं

४४. लं ॐ नमो भगवते एक-दंष्ट्राय हस्ति-मुखाय लम्बोदराय उच्छिष्ट-महात्मने आं क्रों ह्रीं गं घे घे उच्छिष्टाय स्वाहा लं

४५. वं ॐ नमो भगवते एक-दंष्ट्राय हस्ति-मुखाय लम्बोदराय उच्छिष्ट-महात्मने आं क्रों ह्रीं गं घे घे उच्छिष्टाय स्वाहा वं

४६. शं ॐ नमो भगवते एक-दंष्ट्राय हस्ति-मुखाय लम्बोदराय उच्छिष्ट-महात्मने आं क्रों ह्रीं गं घे घे उच्छिष्टाय स्वाहा शं

४७. षं ॐ नमो भगवते एक-दंष्ट्राय हस्ति-मुखाय लम्बोदराय उच्छिष्ट-महात्मने आं क्रों ह्रीं गं घे घे उच्छिष्टाय स्वाहा षं

४८. सं ॐ नमो भगवते एक-दंष्ट्राय हस्ति-मुखाय लम्बोदराय उच्छिष्ट-महात्मने आं क्रों ह्रीं गं घे घे उच्छिष्टाय स्वाहा सं

४९. हं ॐ नमो भगवते एक-दंष्ट्राय हस्ति-मुखाय लम्बोदराय उच्छिष्ट-महात्मने आं क्रों ह्रीं गं घे घे उच्छिष्टाय स्वाहा हं

५०. ळं ॐ नमो भगवते एक-दंष्ट्राय हस्ति-मुखाय लम्बोदराय उच्छिष्ट-महात्मने आं क्रों ह्रीं गं घे घे उच्छिष्टाय स्वाहा ळं

क्षं

५१. ळं ॐ नमो भगवते एक-दंष्ट्राय हस्ति-मुखाय लम्बोदराय उच्छिष्ट-महात्मने आं क्रों ह्रीं गं घे घे उच्छिष्टाय स्वाहा ळं

५२. हं ॐ नमो भगवते एक-दंष्ट्राय हस्ति-मुखाय लम्बोदराय उच्छिष्ट-महात्मने आं क्रों ह्रीं गं घे घे उच्छिष्टाय स्वाहा हं

५३. सं ॐ नमो भगवते एक-दंष्ट्राय हस्ति-मुखाय लम्बोदराय उच्छिष्ट-महात्मने आं क्रों ह्रीं गं घे घे उच्छिष्टाय स्वाहा सं

५४. षं ॐ नमो भगवते एक-दंष्ट्राय हस्ति-मुखाय लम्बोदराय उच्छिष्ट-महात्मने आं क्रों ह्रीं गं घे घे उच्छिष्टाय स्वाहा षं

५५. शं ॐ नमो भगवते एक-दंष्ट्राय हस्ति-मुखाय लम्बोदराय उच्छिष्ट-महात्मने आं क्रों ह्रीं गं घे घे उच्छिष्टाय स्वाहा शं

५६. वं ॐ नमो भगवते एक-दंष्ट्राय हस्ति-मुखाय लम्बोदराय उच्छिष्ट-महात्मने आं क्रों ह्रीं गं घे घे उच्छिष्टाय स्वाहा वं

५७. लं ॐ नमो भगवते एक-दंष्ट्राय हस्ति-मुखाय लम्बोदराय उच्छिष्ट-महात्मने आं क्रों ह्रीं गं घे घे उच्छिष्टाय स्वाहा लं

५८. रं ॐ नमो भगवते एक-दंष्ट्राय हस्ति-मुखाय लम्बोदराय उच्छिष्ट-महात्मने आं क्रों ह्रीं गं घे घे उच्छिष्टाय स्वाहा रं

५९. यं ॐ नमो भगवते एक-दंष्ट्राय हस्ति-मुखाय लम्बोदराय उच्छिष्ट-महात्मने आं क्रों ह्रीं गं घे घे उच्छिष्टाय स्वाहा यं

६०. मं ॐ नमो भगवते एक-दंष्ट्राय हस्ति-मुखाय लम्बोदराय उच्छिष्ट-महात्मने आं क्रों ह्रीं गं घे घे उच्छिष्टाय स्वाहा मं

६१. भं ॐ नमो भगवते एक-दंष्ट्राय हस्ति-मुखाय लम्बोदराय उच्छिष्ट-महात्मने आं क्रों ह्रीं गं घे घे उच्छिष्टाय स्वाहा भं

६२. बं ॐ नमो भगवते एक-दंष्ट्राय हस्ति-मुखाय लम्बोदराय उच्छिष्ट-महात्मने आं क्रों ह्रीं गं घे घे उच्छिष्टाय स्वाहा बं

६३. फं ॐ नमो भगवते एक-दंष्ट्राय हस्ति-मुखाय लम्बोदराय उच्छिष्ट-महात्मने आं क्रों ह्रीं गं घे घे उच्छिष्टाय स्वाहा फं

६४. पं ॐ नमो भगवते एक-दंष्ट्राय हस्ति-मुखाय लम्बोदराय उच्छिष्ट-महात्मने आं क्रों ह्रीं गं घे घे उच्छिष्टाय स्वाहा पं

६५. नं ॐ नमो भगवते एक-दंष्ट्राय हस्ति-मुखाय लम्बोदराय उच्छिष्ट-महात्मने आं क्रों ह्रीं गं घे घे उच्छिष्टाय स्वाहा नं

६६. धं ॐ नमो भगवते एक-दंष्ट्राय हस्ति-मुखाय लम्बोदराय उच्छिष्ट-महात्मने आं क्रों ह्रीं गं घे घे उच्छिष्टाय स्वाहा धं

६७. दं ॐ नमो भगवते एक-दंष्ट्राय हस्ति-मुखाय लम्बोदराय उच्छिष्ट-महात्मने आं क्रों ह्रीं गं घे घे उच्छिष्टाय स्वाहा दं

६८. थं ॐ नमो भगवते एक-दंष्ट्राय हस्ति-मुखाय लम्बोदराय उच्छिष्ट-महात्मने आं क्रों ह्रीं गं घे घे उच्छिष्टाय स्वाहा थं

६९. तं ॐ नमो भगवते एक-दंष्ट्राय हस्ति-मुखाय लम्बोदराय उच्छिष्ट-महात्मने आं क्रों ह्रीं गं घे घे उच्छिष्टाय स्वाहा तं

७०. णं ॐ नमो भगवते एक-दंष्ट्राय हस्ति-मुखाय लम्बोदराय उच्छिष्ट-महात्मने आं क्रों ह्रीं गं घे घे उच्छिष्टाय स्वाहा णं

७१. ढं ॐ नमो भगवते एक-दंष्ट्राय हस्ति-मुखाय लम्बोदराय उच्छिष्ट-महात्मने आं क्रों ह्रीं गं घे घे उच्छिष्टाय स्वाहा ढं

७२. डं ॐ नमो भगवते एक-दंष्ट्राय हस्ति-मुखाय लम्बोदराय उच्छिष्ट-महात्मने आं क्रों ह्रीं गं घे घे उच्छिष्टाय स्वाहा डं

७३. ठं ॐ नमो भगवते एक-दंष्ट्राय हस्ति-मुखाय लम्बोदराय उच्छिष्ट-महात्मने आं क्रों ह्रीं गं घे घे उच्छिष्टाय स्वाहा ठं

७४. टं ॐ नमो भगवते एक-दंष्ट्राय हस्ति-मुखाय लम्बोदराय उच्छिष्ट-महात्मने आं क्रों ह्रीं गं घे घे उच्छिष्टाय स्वाहा टं

७५. ठं ॐ नमो भगवते एक-दंष्ट्राय हस्ति-मुखाय लम्बोदराय उच्छिष्ट-महात्मने आं क्रों ह्रीं गं घे घे उच्छिष्टाय स्वाहा ठं

७६. डं ॐ नमो भगवते एक-दंष्ट्राय हस्ति-मुखाय लम्बोदराय उच्छिष्ट-महात्मने आं क्रों ह्रीं गं घे घे उच्छिष्टाय स्वाहा डं

७७. ढं ॐ नमो भगवते एक-दंष्ट्राय हस्ति-मुखाय लम्बोदराय उच्छिष्ट-महात्मने आं क्रों ह्रीं गं घे घे उच्छिष्टाय स्वाहा ढं

७८. णं ॐ नमो भगवते एक-दंष्ट्राय हस्ति-मुखाय लम्बोदराय उच्छिष्ट-महात्मने आं क्रों ह्रीं गं घे घे उच्छिष्टाय स्वाहा णं

७९. तं ॐ नमो भगवते एक-दंष्ट्राय हस्ति-मुखाय लम्बोदराय उच्छिष्ट-महात्मने आं क्रों ह्रीं गं घे घे उच्छिष्टाय स्वाहा तं

८०. थं ॐ नमो भगवते एक-दंष्ट्राय हस्ति-मुखाय लम्बोदराय उच्छिष्ट-महात्मने आं क्रों ह्रीं गं घे घे उच्छिष्टाय स्वाहा थं

८१. दं ॐ नमो भगवते एक-दंष्ट्राय हस्ति-मुखाय लम्बोदराय उच्छिष्ट-महात्मने आं क्रों ह्रीं गं घे घे उच्छिष्टाय स्वाहा दं

८२. धं ॐ नमो भगवते एक-दंष्ट्राय हस्ति-मुखाय लम्बोदराय उच्छिष्ट-महात्मने आं क्रों ह्रीं गं घे घे उच्छिष्टाय स्वाहा धं

८३. नं ॐ नमो भगवते एक-दंष्ट्राय हस्ति-मुखाय लम्बोदराय उच्छिष्ट-महात्मने आं क्रों ह्रीं गं घे घे उच्छिष्टाय स्वाहा नं

८४. कं ॐ नमो भगवते एक-दंष्ट्राय हस्ति-मुखाय लम्बोदराय उच्छिष्ट-महात्मने आं क्रों ह्रीं गं घे घे उच्छिष्टाय स्वाहा कं

८५. अः ॐ नमो भगवते एक-दंष्ट्राय हस्ति-मुखाय लम्बोदराय उच्छिष्ट-महात्मने आं क्रों ह्रीं गं घे घे उच्छिष्टाय स्वाहा अः

८६. अं ॐ नमो भगवते एक-दंष्ट्राय हस्ति-मुखाय लम्बोदराय उच्छिष्ट-महात्मने आं क्रों ह्रीं गं घे घे उच्छिष्टाय स्वाहा अं

८७. औं ॐ नमो भगवते एक-दंष्ट्राय हस्ति-मुखाय लम्बोदराय उच्छिष्ट-महात्मने आं क्रों ह्रीं गं घे घे उच्छिष्टाय स्वाहा औं

८८. ओं ॐ नमो भगवते एक-दंष्ट्राय हस्ति-मुखाय लम्बोदराय उच्छिष्ट-महात्मने आं क्रों ह्रीं गं घे घे उच्छिष्टाय स्वाहा ओं

८९. ऐं ॐ नमो भगवते एक-दंष्ट्राय हस्ति-मुखाय लम्बोदराय उच्छिष्ट-महात्मने आं क्रों ह्रीं गं घे घे उच्छिष्टाय स्वाहा ऐं

९०. एं ॐ नमो भगवते एक-दंष्ट्राय हस्ति-मुखाय लम्बोदराय उच्छिष्ट-महात्मने आं क्रों ह्रीं गं घे घे उच्छिष्टाय स्वाहा एं

९१. लृं ॐ नमो भगवते एक-दंष्ट्राय हस्ति-मुखाय लम्बोदराय उच्छिष्ट-महात्मने आं क्रों ह्रीं गं घे घे उच्छिष्टाय स्वाहा लृं

९२. लॄं ॐ नमो भगवते एक-दंष्ट्राय हस्ति-मुखाय लम्बोदराय उच्छिष्ट-महात्मने आं क्रों ह्रीं गं घे घे उच्छिष्टाय स्वाहा लॄं

९३. ऋं ॐ नमो भगवते एक-दंष्ट्राय हस्ति-मुखाय लम्बोदराय उच्छिष्ट-महात्मने आं क्रों ह्रीं गं घे घे उच्छिष्टाय स्वाहा ऋं

९४. ऋं ॐ नमो भगवते एक-दंष्ट्राय हस्ति-मुखाय लम्बोदराय उच्छिष्ट-महात्मने आं क्रों ह्रीं गं घे घे उच्छिष्टाय स्वाहा ऋं

९५. ऊं ॐ नमो भगवते एक-दंष्ट्राय हस्ति-मुखाय लम्बोदराय उच्छिष्ट-महात्मने आं क्रों ह्रीं गं घे घे उच्छिष्टाय स्वाहा ऊं

९६. उं ॐ नमो भगवते एक-दंष्ट्राय हस्ति-मुखाय लम्बोदराय उच्छिष्ट-महात्मने आं क्रों ह्रीं गं घे घे उच्छिष्टाय स्वाहा उं

९७. ईं ॐ नमो भगवते एक-दंष्ट्राय हस्ति-मुखाय लम्बोदराय उच्छिष्ट-महात्मने आं क्रों ह्रीं गं घे घे उच्छिष्टाय स्वाहा ईं

९८. इं ॐ नमो भगवते एक-दंष्ट्राय हस्ति-मुखाय लम्बोदराय उच्छिष्ट-महात्मने आं क्रों ह्रीं गं घे घे उच्छिष्टाय स्वाहा इं

९९. आं ॐ नमो भगवते एक-दंष्ट्राय हस्ति-मुखाय लम्बोदराय उच्छिष्ट-महात्मने आं क्रों ह्रीं गं घे घे उच्छिष्टाय स्वाहा आं

१००. अं ॐ नमो भगवते एक-दंष्ट्राय हस्ति-मुखाय लम्बोदराय उच्छिष्ट-महात्मने आं क्रों ह्रीं गं घे घे उच्छिष्टाय स्वाहा अं

१०१. अं ॐ नमो भगवते एक-दंष्ट्राय हस्ति-मुखाय लम्बोदराय उच्छिष्ट-महात्मने आं क्रों ह्रीं गं घे घे उच्छिष्टाय स्वाहा अं

१०२. कं ॐ नमो भगवते एक-दंष्ट्राय हस्ति-मुखाय लम्बोदराय उच्छिष्ट-महात्मने आं क्रों ह्रीं गं घे घे उच्छिष्टाय स्वाहा कं

१०३. चं ॐ नमो भगवते एक-दंष्ट्राय हस्ति-मुखाय लम्बोदराय उच्छिष्ट-महात्मने आं क्रों ह्रीं गं घे घे उच्छिष्टाय स्वाहा चं

१०४. टं ॐ नमो भगवते एक-दंष्ट्राय हस्ति-मुखाय लम्बोदराय उच्छिष्ट-महात्मने आं क्रों ह्रीं गं घे घे उच्छिष्टाय स्वाहा टं

१०५. तं ॐ नमो भगवते एक-दंष्ट्राय हस्ति-मुखाय लम्बोदराय उच्छिष्ट-महात्मने आं क्रों ह्रीं गं घे घे उच्छिष्टाय स्वाहा तं

१०६. पं ॐ नमो भगवते एक-दंष्ट्राय हस्ति-मुखाय लम्बोदराय उच्छिष्ट-महात्मने आं क्रों ह्रीं गं घे घे उच्छिष्टाय स्वाहा पं

१०७. यं ॐ नमो भगवते एक-दंष्ट्राय हस्ति-मुखाय लम्बोदराय उच्छिष्ट-महात्मने आं क्रों ह्रीं गं घे घे उच्छिष्टाय स्वाहा यं

१०८. शं ॐ नमो भगवते एक-दंष्ट्राय हस्ति-मुखाय लम्बोदराय उच्छिष्ट-महात्मने आं क्रों ह्रीं गं घे घे उच्छिष्टाय स्वाहा शं

होम– यथा-शक्ति '**जप**' करने के बाद **घृत** द्वारा '**होम**' करना चाहिए।

प्रयोग– १. नित्य '**जप**' एवं '**होम**' तथा '**तर्पण**' करने से धन-धान्य, पुत्र-पौत्रादि का सुख एवं सौभाग्य प्राप्त होता है। २. शुभ दिन में '**नीम**' की लकड़ी द्वारा **भगवान् श्रीगणेश** की मूर्ति बनाकर, उसमें प्राण-प्रतिष्ठा कर पूजन करने तथा उसके समक्ष '**साध्य**' का चिन्तन करते हुए उक्त मन्त्र का '**जप**' करने से वशीकरण होता है। ३. नदी के जल को उक्त मन्त्र द्वारा २७ बार अभिमन्त्रित कर उससे अपना मुख धोने से '**वाक्-सिद्धि**' होती है। ४. **भगवान् श्रीगणेश की पूजित मूर्ति** को मद्य-पात्र के मध्य में रखकर एक हाथ नीचे भूमि में गाड़े और उसके ऊपर बैठकर नित्य '**जप**' करे, तो एक सप्ताह के भीतर सभी प्रकार के उपद्रव शान्त होते हैं और **धन-वैभव की प्राप्ति** होती है।

श्रीउच्छिष्ट-महा-गणपति-षड्-त्रिंशदक्षर-मन्त्र-साधना

विनियोग– ॐ अस्य श्री उच्छिष्ट-महा-गणपति-षड्-त्रिंशदक्षर-मन्त्रस्य श्रीकङ्काल ऋषिः। विराट् छन्दः। श्री उच्छिष्ट-महा-गणपति देवता। मम अभीष्ट-सिद्ध्यर्थे जपे विनियोगः।

ऋष्यादि-न्यास– शिरसि श्रीकङ्काल-ऋषये नमः। मुखे विराट्-छन्दसे नमः। हृदये श्री उच्छिष्ट-महा-गणपति देवतायै नमः। मम अभीष्ट-सिद्ध्यर्थे जपे विनियोगाय नमः अञ्जलौ।

कर-न्यास– क्रौं अंगुष्ठाभ्यां नमः। क्लूं तर्जनीभ्यां स्वाहा। हुं मध्यमाभ्यां वषट्। घें अनामिकाभ्यां हुम्। घें कनिष्ठाभ्यां वौषट्। क्रौं क्लौं ह्रौं ह्रूं घें घें करतल-करं-पृष्ठाभ्यां फट्।

षडङ्ग-न्यास– ॐ क्रौं हृदयाय नमः। क्लूं शिरसे स्वाहा। हुं शिखायै वषट्। घें कवचाय हुम्। घें नेत्र-त्रयाय वौषट्। क्रौं क्लौं ह्रौं ह्रूं घें घें अस्त्राय फट्।

ध्यान–

उद्यद्-दिनेश्वर-रुचिं निज-हस्त-पद्मैः, पाशांकुशाभय-वरान् दधतं गजास्यम् ।
रक्ताम्बरं सकल-दुःख-हरं गणेशं, ध्याये प्रसन्नमखिलाभरणाभिरामम् ।।

अर्थात् बाँएँ हाथों में 'पाश' एवं 'अभय'-मुद्रा तथा दाहिने हाथों में 'वर'-मुद्रा एवं 'अंकुश' धारण करनेवाले, उगते सूर्य की कान्ति के समान आभावाले, हाथी के समान मुखवाले, समस्त दुःखों को दूर करनेवाले, समस्त आभूषणों से सुशोभित प्रसन्न-मुद्रावाले गणेशजी का ध्यान करता हूँ।

मानस-पूजा–

लं पृथिव्यात्मकं गन्धं श्रीउच्छिष्ट-महा-गणपतये समर्पयामि नमः।
हं आकाशात्मकं पुष्पं श्रीउच्छिष्ट-महा-गणपतये समर्पयामि नमः।
यं वाय्वात्मकं धूपं श्रीउच्छिष्ट-महा-गणपतये घ्रापयामि नमः।
रं वह्न्यात्मकं दीपं श्रीउच्छिष्ट-महा-गणपतये दर्शयामि नमः।
वं अमृतात्मकं नैवेद्यं श्रीउच्छिष्ट-महा-गणपतये निवेदयामि नमः।
सं सर्वात्मकं ताम्बूलं श्रीउच्छिष्ट-महा-गणपतये समर्पयामि नमः।

मन्त्र– ॐ नमो भगवते एक-दंष्ट्राय हस्ति-मुख-लम्बोदराय उच्छिष्ट-महात्मने क्रों क्लौं ह्रौं ह्रुं घें घें स्वाहा (३६ अक्षर)।

मन्त्रार्थ-चिन्तन– ॐ = मुक्ति या मोक्ष को देनेवाले। नमो भगवते एक-दंष्ट्राय अर्थात् एक-दन्तधारी (आदि-मध्य-अन्त-हीन अद्वितीय), हस्ति-मुख-लम्बोदराय अर्थात् हस्ति-मुख एवं लम्बे उदरवाले, उच्छिष्ट-महात्मने अर्थात् सबके अन्तर में अवशिष्ट-रूप से रहनेवाले, अत्यन्त उदार चित्तवाले, सिद्धियों के द्वार-स्वरूप, सर्व-साक्षी पूज्य विश्वात्मा को प्रणाम।

क्रों = 'महा-अंकुश' को धारण करनेवाले

क्लौं = 'महा-मोह-रूपी मोदक' को धारण करनेवाले

ह्रौं हुं घें घें स्वाहा = वह्नि (र), चतुर्दश-स्वर (ौ), पञ्चम-स्वर (ु) एवं नाद-विन्दु (.) से विभूषित सर्व-कल्याणकारी 'शिव-वीज' (ह्रौं हुँ) के समान जिनके द्वारा मेघों के समान कृपा की वर्षा हो रही है, उंनसे 'आत्मा' का एकीकरण।

जप– 'वर्ण-माला' का ध्यान कर उक्त मन्त्र का 'जप' निम्न प्रकार करें। यथा–

अन्तर्विद्रुम-भासमान-भुजगां, सुप्तोत्थ-वर्णोज्ज्वलाम् ।
आरोहामवरोहिकां शत-मयीं, वर्गाष्टकाष्टोत्तरीम्।।
साक्षात् ब्रह्म-मयीं 'क्ष' मेरु-सहितां, श्रीमातृकाक्षावलीम् ।
विद्यां नौमि समस्त-मन्त्र-जननीं, ज्ञानैक-दीपांकुराम् ।।

ॐ

१. अं ॐ नमो भगवते एक-दंष्ट्राय हस्ति-मुख-लम्बोदराय उच्छिष्ट-महात्मने क्रों क्लौं ह्रौं हुं घें घें स्वाहा अं

२. आं ॐ नमो भगवते एक-दंष्ट्राय हस्ति-मुख-लम्बोदराय उच्छिष्ट-महात्मने क्रों क्लौं ह्रौं हुं घें घें स्वाहा आं

३. इं ॐ नमो भगवते एक-दंष्ट्राय हस्ति-मुख-लम्बोदराय उच्छिष्ट-महात्मने क्रों क्लौं ह्रौं हुं घें घें स्वाहा इं

४. ईं ॐ नमो भगवते एक-दंष्ट्राय हस्ति-मुख-लम्बोदराय उच्छिष्ट-महात्मने क्रों क्लौं ह्रौं हुं घें घें स्वाहा ईं

५. उं ॐ नमो भगवते एक-दंष्ट्राय हस्ति-मुख-लम्बोदराय उच्छिष्ट-महात्मने क्रों क्लौं ह्रौं हुं घें घें स्वाहा उं

६. ऊं ॐ नमो भगवते एक-दंष्ट्राय हस्ति-मुख-लम्बोदराय उच्छिष्ट-महात्मने क्रों क्लौं ह्रौं हुं घें घें स्वाहा ऊं

७. ऋं ॐ नमो भगवते एक-दंष्ट्राय हस्ति-मुख-लम्बोदराय उच्छिष्ट-महात्मने क्रों क्लौं ह्रौं हुं घें घें स्वाहा ऋं

८. ॠं ॐ नमो भगवते एक-दंष्ट्राय हस्ति-मुख-लम्बोदराय उच्छिष्ट-महात्मने क्रों क्लौं ह्रौं हुं घें घें स्वाहा ॠं

९. लृं ॐ नमो भगवते एक-दंष्ट्राय हस्ति-मुख-लम्बोदराय उच्छिष्ट-महात्मने क्रों क्लौं ह्रौं हुं घें घें स्वाहा लृं

१०. लॄं ॐ नमो भगवते एक-दंष्ट्राय हस्ति-मुख-लम्बोदराय उच्छिष्ट-महात्मने क्रों क्लौं ह्रौं हुं घें घें स्वाहा लॄं

११. एं ॐ नमो भगवते एक-दंष्ट्राय हस्ति-मुख-लम्बोदराय उच्छिष्ट-महात्मने क्रों क्लौं ह्रौं हुं घें घें स्वाहा एं

१२. ऐं ॐ नमो भगवते एक-दंष्ट्राय हस्ति-मुख-लम्बोदराय उच्छिष्ट-महात्मने क्रों क्लौं ह्रौं हुं घें घें स्वाहा ऐं

१३. ओं ॐ नमो भगवते एक-दंष्ट्राय हस्ति-मुख-लम्बोदराय उच्छिष्ट-महात्मने क्रों क्लौं ह्रौं हुं घें घें स्वाहा ओं

१४. औं ॐ नमो भगवते एक-दंष्ट्राय हस्ति-मुख-लम्बोदराय उच्छिष्ट-महात्मने क्रों क्लौं ह्रौं हुं घें घें स्वाहा औं

१५. अं ॐ नमो भगवते एक-दंष्ट्राय हस्ति-मुख-लम्बोदराय उच्छिष्ट-महात्मने क्रों क्लौं ह्रौं हुं घें घें स्वाहा अं

१६. अः ॐ नमो भगवते एक-दंष्ट्राय हस्ति-मुख-लम्बोदराय उच्छिष्ट-महात्मने क्रों क्लौं ह्रौं हुं घें घें.स्वाहा अः

१७. कं ॐ नमो भगवते एक-दंष्ट्राय हस्ति-मुख-लम्बोदराय उच्छिष्ट-महात्मने क्रों क्लौं ह्रौं हुं घें घें स्वाहा कं

१८. खं ॐ नमो भगवते एक-दंष्ट्राय हस्ति-मुख-लम्बोदराय उच्छिष्ट-महात्मने क्रों क्लौं ह्रौं हुं घें घें स्वाहा खं

१९. गं ॐ नमो भगवते एक-दंष्ट्राय हस्ति-मुख-लम्बोदराय उच्छिष्ट-महात्मने क्रों क्लौं ह्रौं हुं घें घें स्वाहा गं

२०. घं ॐ नमो भगवते एक-दंष्ट्राय हस्ति-मुख-लम्बोदराय उच्छिष्ट-महात्मने क्रों क्लौं ह्रौं हुं घें घें स्वाहा घं

२१. ङं ॐ नमो भगवते एक-दंष्ट्राय हस्ति-मुख-लम्बोदराय उच्छिष्ट-महात्मने क्रों क्लौं ह्रौं हुं घें घें स्वाहा ङं

२२. चं ॐ नमो भगवते एक-दंष्ट्राय हस्ति-मुख-लम्बोदराय उच्छिष्ट-महात्मने क्रों क्लौं ह्रौं हुं घें घें स्वाहा चं

२३. छं ॐ नमो भगवते एक-दंष्ट्राय हस्ति-मुख-लम्बोदराय उच्छिष्ट-महात्मने क्रों क्लौं ह्रौं हुं घें घें स्वाहा छं

२४. जं ॐ नमो भगवते एक-दंष्ट्राय हस्ति-मुख-लम्बोदराय उच्छिष्ट-महात्मने क्रों क्लौं ह्रौं हुं घें घें स्वाहा जं

२५. झं ॐ नमो भगवते एक-दंष्ट्राय हस्ति-मुख-लम्बोदराय उच्छिष्ट-महात्मने क्रों क्लौं ह्रौं हुं घें घें स्वाहा झं

२६. ञं ॐ नमो भगवते एक-दंष्ट्राय हस्ति-मुख-लम्बोदराय उच्छिष्ट-महात्मने क्रों क्लौं ह्रौं हुं घें घें स्वाहा ञं

२७. टं ॐ नमो भगवते एक-दंष्ट्राय हस्ति-मुख-लम्बोदराय उच्छिष्ट-महात्मने क्रों क्लौं ह्रौं हुं घें घें स्वाहा टं

२८. ठं ॐ नमो भगवते एक-दंष्ट्राय हस्ति-मुख-लम्बोदराय उच्छिष्ट-महात्मने क्रों क्लौं ह्रौं हुं घें घें स्वाहा ठं

२९. डं ॐ नमो भगवते एक-दंष्ट्राय हस्ति-मुख-लम्बोदराय उच्छिष्ट-महात्मने क्रों क्लौं ह्रौं हुं घें घें स्वाहा डं

३०. ढं ॐ नमो भगवते एक-दंष्ट्राय हस्ति-मुख-लम्बोदराय उच्छिष्ट-महात्मने क्रों क्लौं ह्रौं हुं घें घें स्वाहा ढं

३१. णं ॐ नमो भगवते एक-दंष्ट्राय हस्ति-मुख-लम्बोदराय उच्छिष्ट-महात्मने क्रों क्लौं ह्रौं हुं घें घें स्वाहा णं

३२. तं ॐ नमो भगवते एक-दंष्ट्राय हस्ति-मुख-लम्बोदराय उच्छिष्ट-महात्मने क्रों क्लौं ह्रौं हुं घें घें स्वाहा तं

३३. थं ॐ नमो भगवते एक-दंष्ट्राय हस्ति-मुख-लम्बोदराय उच्छिष्ट-महात्मने क्रों क्लौं ह्रौं हुं घें घें स्वाहा थं

३४. दं ॐ नमो भगवते एक-दंष्ट्राय हस्ति-मुख-लम्बोदराय उच्छिष्ट-महात्मने क्रों क्लौं ह्रौं हुं घें घें स्वाहा दं

३५. धं ॐ नमो भगवते एक-दंष्ट्राय हस्ति-मुख-लम्बोदराय उच्छिष्ट-महात्मने क्रों क्लौं ह्रौं हुं घें घें स्वाहा धं

३६. नं ॐ नमो भगवते एक-दंष्ट्राय हस्ति-मुख-लम्बोदराय उच्छिष्ट-महात्मने क्रों क्लौं ह्रौं हुं घें घें स्वाहा नं

३७. पं ॐ नमो भगवते एक-दंष्ट्राय हस्ति-मुख-लम्बोदराय उच्छिष्ट-महात्मने क्रों क्लौं ह्रौं हुं घें घें स्वाहा पं

३८. फं ॐ नमो भगवते एक-दंष्ट्राय हस्ति-मुख-लम्बोदराय उच्छिष्ट-महात्मने क्रों क्लौं ह्रौं हुं घें घें स्वाहा फं

३९. बं ॐ नमो भगवते एक-दंष्ट्राय हस्ति-मुख-लम्बोदराय उच्छिष्ट-महात्मने क्रों क्लौं ह्रौं हुं घें घें स्वाहा बं

४०. भं ॐ नमो भगवते एक-दंष्ट्राय हस्ति-मुख-लम्बोदराय उच्छिष्ट-महात्मने क्रों क्लौं ह्रौं हुं घें घें स्वाहा भं

४१. मं ॐ नमो भगवते एक-दंष्ट्राय हस्ति-मुख-लम्बोदराय उच्छिष्ट-महात्मने क्रों क्लौं ह्रौं हुं घें घें स्वाहा मं

४२. यं ॐ नमो भगवते एक-दंष्ट्राय हस्ति-मुख-लम्बोदराय उच्छिष्ट-महात्मने क्रों क्लौं ह्रौं हुं घें घें स्वाहा यं

४३. रं ॐ नमो भगवते एक-दंष्ट्राय हस्ति-मुख-लम्बोदराय उच्छिष्ट-महात्मने क्रों क्लौं ह्रौं हुं घें घें स्वाहा रं

४४. लं ॐ नमो भगवते एक-दंष्ट्राय हस्ति-मुख-लम्बोदराय उच्छिष्ट-महात्मने क्रों क्लौं ह्रौं हुं घें घें स्वाहा लं

४५. वं ॐ नमो भगवते एक-दंष्ट्राय हस्ति-मुख-लम्बोदराय उच्छिष्ट-महात्मने क्रों क्लौं ह्रौं हुं घें घें स्वाहा वं

४६. शं ॐ नमो भगवते एक-दंष्ट्राय हस्ति-मुख-लम्बोदराय उच्छिष्ट-महात्मने क्रों क्लौं ह्रौं हुं घें घें स्वाहा शं

४७. षं ॐ नमो भगवते एक-दंष्ट्राय हस्ति-मुख-लम्बोदराय उच्छिष्ट-महात्मने क्रों क्लौं ह्रौं हुं घें घें स्वाहा षं

४८. सं ॐ नमो भगवते एक-दंष्ट्राय हस्ति-मुख-लम्बोदराय उच्छिष्ट-महात्मने क्रों क्लौं ह्रौं हुं घें घें स्वाहा सं

४९. हं ॐ नमो भगवते एक-दंष्ट्राय हस्ति-मुख-लम्बोदराय उच्छिष्ट-महात्मने क्रों क्लौं ह्रौं हुं घें घें स्वाहा हं

५०. ळं ॐ नमो भगवते एक-दंष्ट्राय हस्ति-मुख-लम्बोदराय उच्छिष्ट-महात्मने क्रों क्लौं ह्रौं हुं घें घें स्वाहा ळं

५१. ळं ॐ नमो भगवते एक-दंष्ट्राय हस्ति-मुख-लम्बोदराय उच्छिष्ट-महात्मने क्रों क्लौं ह्रौं हुं घें घें स्वाहा ळं

५२. हं ॐ नमो भगवते एक-दंष्ट्राय हस्ति-मुख-लम्बोदराय उच्छिष्ट-महात्मने क्रों क्लौं ह्रौं हुं घें घें स्वाहा हं

५३. सं ॐ नमो भगवते एक-दंष्ट्राय हस्ति-मुख-लम्बोदराय उच्छिष्ट-महात्मने क्रों क्लौं ह्रौं हुं घें घें स्वाहा सं

५४. षं ॐ नमो भगवते एक-दंष्ट्राय हस्ति-मुख-लम्बोदराय उच्छिष्ट-महात्मने क्रों क्लौं ह्रौं हुं घें घें स्वाहा षं

५५. शं ॐ नमो भगवते एक-दंष्ट्राय हस्ति-मुख-लम्बोदराय उच्छिष्ट-महात्मने क्रों क्लौं ह्रौं हुं घें घें स्वाहा शं

५६. वं ॐ नमो भगवते एक-दंष्ट्राय हस्ति-मुख-लम्बोदराय उच्छिष्ट-महात्मने क्रों क्लौं ह्रौं हुं घें घें स्वाहा वं

५७. लं ॐ नमो भगवते एक-दंष्ट्राय हस्ति-मुख-लम्बोदराय उच्छिष्ट-महात्मने क्रों क्लौं ह्रौं हुं घें घें स्वाहा लं

५८. रं ॐ नमो भगवते एक-दंष्ट्राय हस्ति-मुख-लम्बोदराय उच्छिष्ट-महात्मने क्रों क्लौं ह्रौं हुं घें घें स्वाहा रं

५९. यं ॐ नमो भगवते एक-दंष्ट्राय हस्ति-मुख-लम्बोदराय उच्छिष्ट-महात्मने क्रों क्लौं ह्रौं हुं घें घें स्वाहा यं

६०. मं ॐ नमो भगवते एक-दंष्ट्राय हस्ति-मुख-लम्बोदराय उच्छिष्ट-महात्मने क्रों क्लौं ह्रौं हुं घें घें स्वाहा मं

६१. भं ॐ नमो भगवते एक-दंष्ट्राय हस्ति-मुख-लम्बोदराय उच्छिष्ट-महात्मने क्रों क्लौं ह्रौं हुं घें घें स्वाहा भं

६२. बं ॐ नमो भगवते एक-दंष्ट्राय हस्ति-मुख-लम्बोदराय उच्छिष्ट-महात्मने क्रों क्लौं ह्रौं हुं घें घें स्वाहा बं

६३. फं ॐ नमो भगवते एक-दंष्ट्राय हस्ति-मुख-लम्बोदराय उच्छिष्ट-महात्मने क्रों क्लौं ह्रौं हुं घें घें स्वाहा फं

६४. पं ॐ नमो भगवते एक-दंष्ट्राय हस्ति-मुख-लम्बोदराय उच्छिष्ट-महात्मने क्रों क्लौं ह्रौं हुं घें घें स्वाहा पं

६५. नं ॐ नमो भगवते एक-दंष्ट्राय हस्ति-मुख-लम्बोदराय उच्छिष्ट-महात्मने क्रों क्लौं ह्रौं हुं घें घें स्वाहा नं

६६. धं ॐ नमो भगवते एक-दंष्ट्राय हस्ति-मुख-लम्बोदराय उच्छिष्ट-महात्मने क्रों क्लौं ह्रौं हुं घें घें स्वाहा धं

६७. दं ॐ नमो भगवते एक-दंष्ट्राय हस्ति-मुख-लम्बोदराय उच्छिष्ट-महात्मने क्रों क्लौं ह्रौं हुं घें घें स्वाहा दं

६८. थं ॐ नमो भगवते एक-दंष्ट्राय हस्ति-मुख-लम्बोदराय उच्छिष्ट-महात्मने क्रों क्लौं ह्रौं हुं घें घें स्वाहा थं

६९. तं ॐ नमो भगवते एक-दंष्ट्राय हस्ति-मुख-लम्बोदराय उच्छिष्ट-महात्मने क्रों क्लौं ह्रौं हुं घें घें स्वाहा तं

७०. णं ॐ नमो भगवते एक-दंष्ट्राय हस्ति-मुख-लम्बोदराय उच्छिष्ट-महात्मने क्रों क्लौं ह्रौं हुं घें घें स्वाहा णं

७१. ढं ॐ नमो भगवते एक-दंष्ट्राय हस्ति-मुख-लम्बोदराय उच्छिष्ट-महात्मने क्रों क्लौं ह्रौं हुं घें घें स्वाहा ढं

७२. डं ॐ नमो भगवते एक-दंष्ट्राय हस्ति-मुख-लम्बोदराय उच्छिष्ट-महात्मने क्रों क्लौं ह्रौं हुं घें घें स्वाहा डं

७३. ठं ॐ नमो भगवते एक-दंष्ट्राय हस्ति-मुख-लम्बोदराय उच्छिष्ट-महात्मने क्रों क्लौं ह्रौं हुं घें घें स्वाहा ठं

७४. टं ॐ नमो भगवते एक-दंष्ट्राय हस्ति-मुख-लम्बोदराय उच्छिष्ट-महात्मने क्रों क्लौं ह्रौं हुं घें घें स्वाहा टं

७५. ञं ॐ नमो भगवते एक-दंष्ट्राय हस्ति-मुख-लम्बोदराय उच्छिष्ट-महात्मने क्रों क्लौं ह्रौं हुं घें घें स्वाहा ञं

७६. झं ॐ नमो भगवते एक-दंष्ट्राय हस्ति-मुख-लम्बोदराय उच्छिष्ट-महात्मने क्रों क्लौं ह्रौं हुं घें घें स्वाहा झं

७७. जं ॐ नमो भगवते एक-दंष्ट्राय हस्ति-मुख-लम्बोदराय उच्छिष्ट-महात्मने क्रों क्लौं ह्रौं हुं घें घें स्वाहा जं

७८. छं ॐ नमो भगवते एक-दंष्ट्राय हस्ति-मुख-लम्बोदराय उच्छिष्ट-महात्मने क्रों क्लौं ह्रौं हुं घें घें स्वाहा छं

७९. चं ॐ नमो भगवते एक-दंष्ट्राय हस्ति-मुख-लम्बोदराय उच्छिष्ट-महात्मने क्रों क्लौं ह्रौं हुं घें घें स्वाहा चं

८०. ङं ॐ नमो भगवते एक-दंष्ट्राय हस्ति-मुख-लम्बोदराय उच्छिष्ट-महात्मने क्रों क्लौं ह्रौं हुं घें घें स्वाहा ङं

८१. घं ॐ नमो भगवते एक-दंष्ट्राय हस्ति-मुख-लम्बोदराय उच्छिष्ट-महात्मने क्रों क्लौं ह्रौं हुं घें घें स्वाहा घं

८२. गं ॐ नमो भगवते एक-दंष्ट्राय हस्ति-मुख-लम्बोदराय उच्छिष्ट-महात्मने क्रों क्लौं ह्रौं हुं घें घें स्वाहा गं

८३. खं ॐ नमो भगवते एक-दंष्ट्राय हस्ति-मुख-लम्बोदराय उच्छिष्ट-महात्मने क्रों क्लौं ह्रौं हुं घें घें स्वाहा खं

८४. कं ॐ नमो भगवते एक-दंष्ट्राय हस्ति-मुख-लम्बोदराय उच्छिष्ट-महात्मने क्रों क्लौं ह्रौं हुं घें घें स्वाहा कं

८५. अः ॐ नमो भगवते एक-दंष्ट्राय हस्ति-मुख-लम्बोदराय उच्छिष्ट-महात्मने क्रों क्लौं ह्रौं हुं घें घें स्वाहा अः

८६. अं ॐ नमो भगवते एक-दंष्ट्राय हस्ति-मुख-लम्बोदराय उच्छिष्ट-महात्मने क्रों क्लौं ह्रौं हुं घें घें स्वाहा अं

८७. औं ॐ नमो भगवते एक-दंष्ट्राय हस्ति-मुख-लम्बोदराय उच्छिष्ट-महात्मने क्रों क्लौं ह्रौं हुं घें घें स्वाहा औं

८८. ओं ॐ नमो भगवते एक-दंष्ट्राय हस्ति-मुख-लम्बोदराय उच्छिष्ट-महात्मने क्रों क्लौं ह्रौं हुं घें घें स्वाहा ओं

८९. ऐं ॐ नमो भगवते एक-दंष्ट्राय हस्ति-मुख-लम्बोदराय उच्छिष्ट-महात्मने क्रों क्लौं ह्रौं हुं घें घें स्वाहा ऐं

९०. एं ॐ नमो भगवते एक-दंष्ट्राय हस्ति-मुख-लम्बोदराय उच्छिष्ट-महात्मने क्रों क्लौं ह्रौं हुं घें घें स्वाहा एं

९१. लृं ॐ नमो भगवते एक-दंष्ट्राय हस्ति-मुख-लम्बोदराय उच्छिष्ट-महात्मने क्रों क्लौं ह्रौं हुं घें घें स्वाहा लृं

९२. ॡं ॐ नमो भगवते एक-दंष्ट्राय हस्ति-मुख-लम्बोदराय उच्छिष्ट-महात्मने क्रों क्लौं ह्रौं हुं घें घें स्वाहा ॡं

९३. ॠं ॐ नमो भगवते एक-दंष्ट्राय हस्ति-मुख-लम्बोदराय उच्छिष्ट-महात्मने क्रों क्लौं ह्रौं हुं घें घें स्वाहा ॠं

९४. ऋं ॐ नमो भगवते एक-दंष्ट्राय हस्ति-मुख-लम्बोदराय उच्छिष्ट-महात्मने क्रों क्लौं ह्रौं हुं घें घें स्वाहा ऋं

९५. ऊं ॐ नमो भगवते एक-दंष्ट्राय हस्ति-मुख-लम्बोदराय उच्छिष्ट-महात्मने क्रों क्लौं ह्रौं हुं घें घें स्वाहा ऊं

९६. उं ॐ नमो भगवते एक-दंष्ट्राय हस्ति-मुख-लम्बोदराय उच्छिष्ट-महात्मने क्रों क्लौं ह्रौं हुं घें घें स्वाहा उं

९७. ईं ॐ नमो भगवते एक-दंष्ट्राय हस्ति-मुख-लम्बोदराय उच्छिष्ट-महात्मने क्रों क्लौं ह्रौं हुं घें घें स्वाहा ईं

९८. इं ॐ नमो भगवते एक-दंष्ट्राय हस्ति-मुख-लम्बोदराय उच्छिष्ट-महात्मने क्रों क्लौं ह्रौं हुं घें घें स्वाहा इं

९९. आं ॐ नमो भगवते एक-दंष्ट्राय हस्ति-मुख-लम्बोदराय उच्छिष्ट-महात्मने क्रों क्लौं ह्रौं हुं घें घें स्वाहा आं

१००. अं ॐ नमो भगवते एक-दंष्ट्राय हस्ति-मुख-लम्बोदराय उच्छिष्ट-महात्मने क्रों क्लौं ह्रौं हुं घें घें स्वाहा अं

१०१. अं ॐ नमो भगवते एक-दंष्ट्राय हस्ति-मुख-लम्बोदराय उच्छिष्ट-महात्मने क्रों क्लौं ह्रौं हुं घें घें स्वाहा अं

१०२. कं ॐ नमो भगवते एक-दंष्ट्राय हस्ति-मुख-लम्बोदराय उच्छिष्ट-महात्मने क्रों क्लौं ह्रौं हुं घें घें स्वाहा कं

१०३. चं ॐ नमो भगवते एक-दंष्ट्राय हस्ति-मुख-लम्बोदराय उच्छिष्ट-महात्मने क्रों क्लौं ह्रौं हुं घें घें स्वाहा चं

१०४. टं ॐ नमो भगवते एक-दंष्ट्राय हस्ति-मुख-लम्बोदराय उच्छिष्ट-महात्मने क्रों क्लौं ह्रौं हुं घें घें स्वाहा टं

१०५. तं ॐ नमो भगवते एक-दंष्ट्राय हस्ति-मुख-लम्बोदराय उच्छिष्ट-महात्मने क्रों क्लौं ह्रौं हुं घें घें स्वाहा तं

१०६. पं ॐ नमो भगवते एक-दंष्ट्राय हस्ति-मुख-लम्बोदराय उच्छिष्ट-महात्मने क्रों क्लौं ह्रौं हुं घें घें स्वाहा पं

१०७. यं ॐ नमो भगवते एक-दंष्ट्राय हस्ति-मुख-लम्बोदराय उच्छिष्ट-महात्मने क्रों क्लौं ह्रौं हुं घें घें स्वाहा यं

१०८. शं ॐ नमो भगवते एक-दंष्ट्राय हस्ति-मुख-लम्बोदराय उच्छिष्ट-महात्मने क्रों क्लौं ह्रौं हुं घें घें स्वाहा शं

विशेष– '**उच्छिष्ट-गणेश**' के सभी मन्त्र **सर्व-साक्षी विश्वात्मा श्रीगणेश भगवान्** की अत्यन्त उदार '**कृपा-शक्ति**' से सम्बन्धित होते हैं। अतएव वे शीघ्र ही सिद्धि-दायक होते हैं। **होम** आदि की विशेष आ प्रकता नहीं होती। केवल **जप की गोपनीयता** को बनाए रखना आवश्यक होता है। अतएव पूर्ण श्रद्धा एवं भक्ति के साथ गोपनीय ढङ्ग से उक्त मन्त्र का यथा-शक्ति '**जप**'-मात्र करना चाहिए।

❖❖❖

श्रीलक्ष्मी-विनायक-अष्टा-विंशत्यक्षर-मन्त्र-साधना

विनियोग– ॐ अस्य श्रीलक्ष्मी-विनायक-अष्टा-विंशत्यक्षर -मन्त्रस्य श्रीअन्तर्यामी ऋषिः। गायत्री छन्दः। श्रीलक्ष्मी-विनायक देवता। 'श्रीं' बीजं। 'स्वाहा' शक्तिः। मम अभीष्ट-सिद्ध्यर्थे जपे विनियोगः।

ऋष्यादि-न्यास– शिरसि श्रीअन्तर्यामी-ऋषये नमः। मुखे गायत्री-छन्दसे नमः। हृदये श्रीलक्ष्मी-विनायक देवतायै नमः। लिङ्गे 'श्रीं'-बीजाय नमः। नाभौ 'स्वाहा'-शक्तये नमः। मम अभीष्ट-सिद्ध्यर्थे जपे विनियोगाय नमः अञ्जलौ।

कर-न्यास– ॐ श्रां गां अंगुष्ठाभ्यां नमः। ॐ श्रीं गीं तर्जनीभ्यां स्वाहा। ॐ श्रूं गूं मध्यमाभ्यां वषट्। ॐ श्रैं गैं अनामिकाभ्यां हुम्। ॐ श्रौं गौं कनिष्ठाभ्यां वौषट्। ॐ श्रः गः करतल-कर-पृष्ठाभ्यां फट्।

षडङ्ग-न्यास– ॐ श्रां गां हृदयाय नमः। ॐ श्रीं गीं शिरसे स्वाहा। ॐ श्रूं गूं शिखायै वषट्। ॐ श्रैं गैं कवचाय हुम्। ॐ श्रौं गौं नेत्र-त्रयाय वौषट्। ॐ श्रः गः अस्त्राय फट्।

ध्यान–

दन्ताभये चक्र-वरौ दधानं, कराग्रगं स्वर्ण-घटं त्रि-नेत्रम् ।
धृताब्जयालिङ्गितमब्धि-पुत्र्या, लक्ष्मी-गणेशं कनाकाभमीडे ।।

अर्थात् दाहिने हाथों में 'दन्त' एवं 'अभय'-मुद्रा तथा बाँएँ हाथों में 'वर'-मुद्रा एवं 'चक्र' को धारण किए हुए, सूँड़ के अग्र-भाग में सुवर्ण घट लिए हुए, हाथ में कमल धारण करनेवाली लक्ष्मी द्वारा आलिङ्गित, तीन नेत्रोंवाले एवं सुवर्ण के समान आभावाले लक्ष्मी-गणेश की मैं वन्दना करता हूँ।

मानस-पूजा– लं पृथिव्यात्मकं गन्धं श्रीलक्ष्मी-विनायकाय समर्पयामि नमः। हं आकाशात्मकं पुष्पं श्रीलक्ष्मी-विनायकाय समर्पयामि नमः। यं वाय्वात्मकं धूपं श्रीलक्ष्मी-विनायकाय घ्रापयामि नमः। रं वह्न्यात्मकं दीपं श्रीलक्ष्मी-विनायकाय दर्शयामि नमः। वं अमृतात्मकं नैवेद्यं श्रीलक्ष्मी-विनायकाय निवेदयामि नमः। सं सर्वात्मकं ताम्बूलं श्रीलक्ष्मी-विनायकाय समर्पयामि नमः।

मन्त्र– ॐ श्रीं गं सौम्याय गण-पतये वर-वरद सर्व-जनं मे वशमानय स्वाहा (२८ अक्षर)।

मन्त्रार्थ-चिन्तन– ॐ = मुक्ति या मोक्ष को देनेवाले। श्रीं = ऐश्वर्य को देनेवाले। गं सौम्याय गण-पतये = अत्यन्त सुखद सर्व-साक्षी विश्वात्मा महा-गणपति। वर-वरद = श्रेष्ठ वर प्रदान करें। सर्व-जनं मे वशमानय स्वाहा = सभी लोगों को मेरे अनुकूल बनाएँ।

जप-'वर्ण-माला' का ध्यान कर उक्त मन्त्र का 'जप' निम्न प्रकार करें। यथा–

अन्तर्विद्रुम-भासमान-भुजगां, सुप्तोत्थ-वर्णोज्ज्वलाम् ।
आरोहामवरोहिकां शत-मयीं, वर्गाष्टकाष्टोत्तरीम्।।
साक्षात् ब्रह्म-मयीं 'क्ष' मेरु-सहितां, श्रीमातृकाक्षावलीम् ।
विद्यां नौमि समस्त-मन्त्र-जननीं, ज्ञानैक-दीपांकुराम् ।।

ॐ

१. अं ॐ श्रीं गं सौम्याय गणपतये वर-वरद सर्व-जनं मे वशमानय स्वाहा अं

२. आं ॐ श्रीं गं सौम्याय गणपतये वर-वरद सर्व-जनं मे वशमानय स्वाहा आं

३. इं ॐ श्रीं गं सौम्याय गणपतये वर-वरद सर्व-जनं मे वशमानय स्वाहा इं

४. ईं ॐ श्रीं गं सौम्याय गणपतये वर-वरद सर्व-जनं मे वशमानय स्वाहा ईं

५. उं ॐ श्रीं गं सौम्याय गणपतये वर-वरद सर्व-जनं मे वशमानय स्वाहा उं

६. ऊं ॐ श्रीं गं सौम्याय गणपतये वर-वरद सर्व-जनं मे वशमानय स्वाहा ऊं

७. ऋं ॐ श्रीं गं सौम्याय गणपतये वर-वरद सर्व-जनं मे वशमानय स्वाहा ऋं

८. ॠं ॐ श्रीं गं सौम्याय गणपतये वर-वरद सर्व-जनं मे वशमानय स्वाहा ॠं

९. ऌं ॐ श्रीं गं सौम्याय गणपतये वर-वरद सर्व-जनं मे वशमानय स्वाहा ऌं

१०. ॡं ॐ श्रीं गं सौम्याय गणपतये वर-वरद सर्व-जनं मे वशमानय स्वाहा ॡं

११. एं ॐ श्रीं गं सौम्याय गणपतये वर-वरद सर्व-जनं मे वशमानय स्वाहा एं

१२. ऐं ॐ श्रीं गं सौम्याय गणपतये वर-वरद सर्व-जनं मे वशमानय स्वाहा ऐं

१३. ओं ॐ श्रीं गं सौम्याय गणपतये वर-वरद सर्व-जनं मे वशमानय स्वाहा ओं

१४. औं ॐ श्रीं गं सौम्याय गणपतये वर-वरद सर्व-जनं मे वशमानय स्वाहा औं

१५. अं ॐ श्रीं गं सौम्याय गणपतये वर-वरद सर्व-जनं मे वशमानय स्वाहा अं

१६. अः ॐ श्रीं गं सौम्याय गणपतये वर-वरद सर्व-जनं मे वशमानय स्वाहा अः

१७. कं ॐ श्रीं गं सौम्याय गणपतये वर-वरद सर्व-जनं मे वशमानय स्वाहा कं

१८. खं ॐ श्रीं गं सौम्याय गणपतये वर-वरद सर्व-जनं मे वशमानय स्वाहा खं

१९. गं ॐ श्रीं गं सौम्याय गणपतये वर-वरद सर्व-जनं मे वशमानय स्वाहा गं

२०. घं ॐ श्रीं गं सौम्याय गणपतये वर-वरद सर्व-जनं मे वशमानय स्वाहा घं

२१. ङं ॐ श्रीं गं सौम्याय गणपतये वर-वरद सर्व-जनं मे वशमानय स्वाहा ङं

२२. चं ॐ श्रीं गं सौम्याय गणपतये वर-वरद सर्व-जनं मे वशमानय स्वाहा चं

२३. छं ॐ श्रीं गं सौम्याय गणपतये वर-वरद सर्व-जनं मे वशमानय स्वाहा छं

२४. जं ॐ श्रीं गं सौम्याय गणपतये वर-वरद सर्व-जनं मे वशमानय स्वाहा जं

२५. झं ॐ श्रीं गं सौम्याय गणपतये वर-वरद सर्व-जनं मे वशमानय स्वाहा झं

२६. ञं ॐ श्रीं गं सौम्याय गणपतये वर-वरद सर्व-जनं मे वशमानय स्वाहा ञं

२७. टं ॐ श्रीं गं सौम्याय गणपतये वर-वरद सर्व-जनं मे वशमानय स्वाहा टं

२८. ठं ॐ श्रीं गं सौम्याय गणपतये वर-वरद सर्व-जनं मे वशमानय स्वाहा ठं

२९. डं ॐ श्रीं गं सौम्याय गणपतये वर-वरद सर्व-जनं मे वशमानय स्वाहा डं

३०. ढं ॐ श्रीं गं सौम्याय गणपतये वर-वरद सर्व-जनं मे वशमानय स्वाहा ढं

३१. णं ॐ श्रीं गं सौम्याय गणपतये वर-वरद सर्व-जनं मे वशमानय स्वाहा णं

३२. तं ॐ श्रीं गं सौम्याय गणपतये वर-वरद सर्व-जनं मे वशमानय स्वाहा तं

३३. थं ॐ श्रीं गं सौम्याय गणपतये वर-वरद सर्व-जनं मे वशमानय स्वाहा थं

३४. दं ॐ श्रीं गं सौम्याय गणपतये वर-वरद सर्व-जनं मे वशमानय स्वाहा दं

३५. धं ॐ श्रीं गं सौम्याय गणपतये वर-वरद सर्व-जनं मे वशमानय स्वाहा धं

३६. नं ॐ श्रीं गं सौम्याय गणपतये वर-वरद सर्व-जनं मे वशमानय स्वाहा नं

३७. पं ॐ श्रीं गं सौम्याय गणपतये वर-वरद सर्व-जनं मे वशमानय स्वाहा पं

३८. फं ॐ श्रीं गं सौम्याय गणपतये वर-वरद सर्व-जनं मे वशमानय स्वाहा फं

३९. बं ॐ श्रीं गं सौम्याय गणपतये वर-वरद सर्व-जनं मे वशमानय स्वाहा बं

४०. भं ॐ श्रीं गं सौम्याय गणपतये वर-वरद सर्व-जनं मे वशमानय स्वाहा भं

४१. मं ॐ श्रीं गं सौम्याय गणपतये वर-वरद सर्व-जनं मे वशमानय स्वाहा मं

४२. यं ॐ श्रीं गं सौम्याय गणपतये वर-वरद सर्व-जनं मे वशमानय स्वाहा यं

४३. रं ॐ श्रीं गं सौम्याय गणपतये वर-वरद सर्व-जनं मे वशमानय स्वाहा रं

४४. लं ॐ श्रीं गं सौम्याय गणपतये वर-वरद सर्व-जनं मे वशमानय स्वाहा लं

४५. वं ॐ श्रीं गं सौम्याय गणपतये वर-वरद सर्व-जनं मे वशमानय स्वाहा वं

४६. शं ॐ श्रीं गं सौम्याय गणपतये वर-वरद सर्व-जनं मे वशमानय स्वाहा शं

४७. षं ॐ श्रीं गं सौम्याय गणपतये वर-वरद सर्व-जनं मे वशमानय स्वाहा षं

४८. सं ॐ श्रीं गं सौम्याय गणपतये वर-वरद सर्व-जनं मे वशमानय स्वाहा सं

४९. हं ॐ श्रीं गं सौम्याय गणपतये वर-वरद सर्व-जनं मे वशमानय स्वाहा हं

५०. ळं ॐ श्रीं गं सौम्याय गणपतये वर-वरद सर्व-जनं मे वशमानय स्वाहा ळं

क्षं

५१. ळं ॐ श्रीं गं सौम्याय गणपतये वर-वरद सर्व-जनं मे वशमानय स्वाहा ळं

५२. हं ॐ श्रीं गं सौम्याय गणपतये वर-वरद सर्व-जनं मे वशमानय स्वाहा हं

५३. सं ॐ श्रीं गं सौम्याय गणपतये वर-वरद सर्व-जनं मे वशमानय स्वाहा सं

५४. षं ॐ श्रीं गं सौम्याय गणपतये वर-वरद सर्व-जनं मे वशमानय स्वाहा षं

५५. शं ॐ श्रीं गं सौम्याय गणपतये वर-वरद सर्व-जनं मे वशमानय स्वाहा शं

५६. वं ॐ श्रीं गं सौम्याय गणपतये वर-वरद सर्व-जनं मे वशमानय स्वाहा वं

५७. लं ॐ श्रीं गं सौम्याय गणपतये वर-वरद सर्व-जनं मे वशमानय स्वाहा लं

५८. रं ॐ श्रीं गं सौम्याय गणपतये वर-वरद सर्व-जनं मे वशमानय स्वाहा रं

५९. यं ॐ श्रीं गं सौम्याय गणपतये वर-वरद सर्व-जनं मे वशमानय स्वाहा यं

६०. मं ॐ श्रीं गं सौम्याय गणपतये वर-वरद सर्व-जनं मे वशमानय स्वाहा मं

६१. भं ॐ श्रीं गं सौम्याय गणपतये वर-वरद सर्व-जनं मे वशमानय स्वाहा भं

६२. बं ॐ श्रीं गं सौम्याय गणपतये वर-वरद सर्व-जनं मे वशमानय स्वाहा बं

६३. फं ॐ श्रीं गं सौम्याय गणपतये वर-वरद सर्व-जनं मे वशमानय स्वाहा फं

६४. पं ॐ श्रीं गं सौम्याय गणपतये वर-वरद सर्व-जनं मे वशमानय स्वाहा पं

६५. नं ॐ श्रीं गं सौम्याय गणपतये वर-वरद सर्व-जनं मे वशमानय स्वाहा नं

६६. धं ॐ श्रीं गं सौम्याय गणपतये वर-वरद सर्व-जनं मे वशमानय स्वाहा धं

६७. दं ॐ श्रीं गं सौम्याय गणपतये वर-वरद सर्व-जनं मे वशमानय स्वाहा दं

६८. थं ॐ श्रीं गं सौम्याय गणपतये वर-वरद सर्व-जनं मे वशमानय स्वाहा थं

६९. तं ॐ श्रीं गं सौम्याय गणपतये वर-वरद सर्व-जनं मे वशमानय स्वाहा तं

७०. णं ॐ श्रीं गं सौम्याय गणपतये वर-वरद सर्व-जनं मे वशमानय स्वाहा णं

७१. ढं ॐ श्रीं गं सौम्याय गणपतये वर-वरद सर्व-जनं मे वशमानय स्वाहा ढं

७२. डं ॐ श्रीं गं सौम्याय गणपतये वर-वरद सर्व-जनं मे वशमानय स्वाहा डं

७३. ठं ॐ श्रीं गं सौम्याय गणपतये वर-वरद सर्व-जनं मे वशमानय स्वाहा ठं

७४. टं ॐ श्रीं गं सौम्याय गणपतये वर-वरद सर्व-जनं मे वशमानय स्वाहा टं

७५. ञं ॐ श्रीं गं सौम्याय गणपतये वर-वरद सर्व-जनं मे वशमानय स्वाहा ञं

७६. झं ॐ श्रीं गं सौम्याय गणपतये वर-वरद सर्व-जनं मे वशमानय स्वाहा झं

७७. जं ॐ श्रीं गं सौम्याय गणपतये वर-वरद सर्व-जनं मे वशमानय स्वाहा जं

७८. छं ॐ श्रीं गं सौम्याय गणपतये वर-वरद सर्व-जनं मे वशमानय स्वाहा छं

७९. चं ॐ श्रीं गं सौम्याय गणपतये वर-वरद सर्व-जनं मे वशमानय स्वाहा चं

८०. ङं ॐ श्रीं गं सौम्याय गणपतये वर-वरद सर्व-जनं मे वशमानय स्वाहा ङं

८१. घं ॐ श्रीं गं सौम्याय गणपतये वर-वरद सर्व-जनं मे वशमानय स्वाहा घं

८२. गं ॐ श्रीं गं सौम्याय गणपतये वर-वरद सर्व-जनं मे वशमानय स्वाहा गं

८३. खं ॐ श्रीं गं सौम्याय गणपतये वर-वरद सर्व-जनं मे वशमानय स्वाहा खं

८४. कं ॐ श्रीं गं सौम्याय गणपतये वर-वरद सर्व-जनं मे वशमानय स्वाहा कं

८५. अः ॐ श्रीं गं सौम्याय गणपतये वर-वरद सर्व-जनं मे वशमानय स्वाहा अः

८६. अं ॐ श्रीं गं सौम्याय गणपतये वर-वरद सर्व-जनं मे वशमानय स्वाहा अं

८७. औं ॐ श्रीं गं सौम्याय गणपतये वर-वरद सर्व-जनं मे वशमानय स्वाहा औं

८८. ओं ॐ श्रीं गं सौम्याय गणपतये वर-वरद सर्व-जनं मे वशमानय स्वाहा ओं

८९. ऐं ॐ श्रीं गं सौम्याय गणपतये वर-वरद सर्व-जनं मे वशमानय स्वाहा ऐं

९०. एं ॐ श्रीं गं सौम्याय गणपतये वर-वरद सर्व-जनं मे वशमानय स्वाहा एं

९१. लृं ॐ श्रीं गं सौम्याय गणपतये वर-वरद सर्व-जनं मे वशमानय स्वाहा लृं

९२. लॄं ॐ श्रीं गं सौम्याय गणपतये वर-वरद सर्व-जनं मे वशमानय स्वाहा लॄं

९३. ऋं ॐ श्रीं गं सौम्याय गणपतये वर-वरद सर्व-जनं मे वशमानय स्वाहा ऋं

९४. ॠं ॐ श्रीं गं सौम्याय गणपतये वर-वरद सर्व-जनं मे वशमानय स्वाहा ॠं

९५. ऊं ॐ श्रीं गं सौम्याय गणपतये वर-वरद सर्व-जनं मे वशमानय स्वाहा ऊं

९६. उं ॐ श्रीं गं सौम्याय गणपतये वर-वरद सर्व-जनं मे वशमानय स्वाहा उं

९७. ईं ॐ श्रीं गं सौम्याय गणपतये वर-वरद सर्व-जनं मे वशमानय स्वाहा ईं

९८. इं ॐ श्रीं गं सौम्याय गणपतये वर-वरद सर्व-जनं मे वशमानय स्वाहा इं

९९. आं ॐ श्रीं गं सौम्याय गणपतये वर-वरद सर्व-जनं मे वशमानय स्वाहा आं

१००. अं ॐ श्रीं गं सौम्याय गणपतये वर-वरद सर्व-जनं मे वशमानय स्वाहा अं

१०१. अं ॐ श्रीं गं सौम्याय गणपतये वर-वरद सर्व-जनं मे वशमानय स्वाहा अं

१०२. कं ॐ श्रीं गं सौम्याय गणपतये वर-वरद सर्व-जनं मे वशमानय स्वाहा कं

१०३. चं ॐ श्रीं गं सौम्याय गणपतये वर-वरद सर्व-जनं मे वशमानय स्वाहा चं

१०४. टं ॐ श्रीं गं सौम्याय गणपतये वर-वरद सर्व-जनं मे वशमानय स्वाहा टं

१०५. तं ॐ श्रीं गं सौम्याय गणपतये वर-वरद सर्व-जनं मे वशमानय स्वाहा तं

१०६. पं ॐ श्रीं गं सौम्याय गणपतये वर-वरद सर्व-जनं मे वशमानय स्वाहा पं

१०७. यं ॐ श्रीं गं सौम्याय गणपतये वर-वरद सर्व-जनं मे वशमानय स्वाहा यं

१०८. शं ॐ श्रीं गं सौम्याय गणपतये वर-वरद सर्व-जनं मे वशमानय स्वाहा शं

होम– यथा-शक्ति उक्त मन्त्र का 'जप' करने के बाद बिल्व की लकड़ी द्वारा 'होम' करना चाहिए।

विशेष– १. हृदय-पर्यन्त जल में खड़े होकर सूर्य-मण्डल में लक्ष्मी-विनायक का ध्यान करते हुए नित्य जप करने से वैभव की प्राप्ति होती है। २. बिल्व-वृक्ष के नीचे बैठकर उक्त मन्त्र का जप करने से धन की प्राप्ति होती है। ३. पायस (खीर) की आहुतियाँ देने से लक्ष्मी की कृपा प्राप्त होती है।

❖❖❖

श्रीलक्ष्मी-गणेश-अष्टा-विंशत्यक्षर-मन्त्र-साधना

विनियोग– ॐ अस्य श्रीलक्ष्मी-गणेश-अष्टा-विंशत्यक्षर-मन्त्रस्य श्रीअन्तर्यामी ऋषिः। निवृदन्विता गायत्री छन्दः। श्रीलक्ष्मी-गणेश देवता। 'श्रीं' बीजं। 'स्वाहा' शक्तिः। मम अभीष्ट-सिद्ध्यर्थे जपे विनियोगः।

ऋष्यादि-न्यास– शिरसि श्रीअन्तर्यामी-ऋषये नमः। मुखे निवृदन्विता-गायत्री-छन्दसे नमः। हृदये श्रीलक्ष्मी-गणेश-देवतायै नमः। लिङ्गे 'श्रीं'-बीजाय नमः। नाभौ 'स्वाहा'-शक्तये नमः। मम अभीष्ट-सिद्ध्यर्थे जपे विनियोगाय नमः अञ्जलौ।

कर-न्यास– ॐ श्रां गां अंगुष्ठाभ्यां नमः। ॐ श्रीं गीं तर्जनीभ्यां स्वाहा। ॐ श्रूं गूं मध्यमाभ्यां वषट्। ॐ श्रैं गैं अनामिकाभ्यां हुम्। ॐ श्रौं गौं कनिष्ठाभ्यां वौषट्। ॐ श्रः गः करतल-कर-पृष्ठाभ्यां फट्।

षडङ्ग-न्यास–ॐ श्रां गां हृदयाय नमः। ॐ श्रीं गीं शिरसे स्वाहा। ॐ श्रूं गूं शिखायै वषट्। ॐ श्रैं गैं कवचाय हुम्। ॐ श्रौं गौं नेत्र-त्रयाय वौषट्। ॐ श्रः गः अस्त्राय फट्।

ध्यान–

हेमाभं पीत-वसनं शङ्ख-चक्र-गदाभयान्,
दक्षोर्ध्व-करमारभ्य दक्षिणेऽधः-करावधि ।
दधतं शुण्ड्या स्वर्ण-घटं पद्मोपरि-स्थितं,
वामाङ्के विष्णुः-लक्ष्म्या चाश्लिष्टं दक्ष-भुजेन तु ।।

अर्थात् स्वर्ण-जैसी आभावाले, पीले वस्त्र धारण करनेवाले, दाहिने हाथों में 'शङ्ख' एवं 'चक्र' तथा बाँएँ हाथों में 'गदा' एवं 'अभय'-मुद्रा धारण करनेवाले, सूँड़ में स्वर्ण-घट धारण करनेवाले कमल पर आसीन लक्ष्मी-गणेश का ध्यान करता हूँ, जिनके बाँएँ दाहिने हाथ से आलिङ्गन करती हुई विष्णु-पत्नी लक्ष्मी स्थित हैं।

मानस-पूजा–लं पृथिव्यात्मकं गन्धं श्रीलक्ष्मी-गणेशाय समर्पयामि नमः। हं आकाशात्मकं पुष्पं श्रीलक्ष्मी-गणेशाय समर्पयामि नमः। यं वाय्वात्मकं धूपं श्रीलक्ष्मी-गणेशाय घ्रापयामि नमः। रं वह्न्यात्मकं दीपं श्रीलक्ष्मी-गणेशाय दर्शयामि नमः। वं अमृतात्मकं नैवेद्यं श्रीलक्ष्मी-गणेशाय निवेदयामि नमः। सं सर्वात्मकं ताम्बूलं श्रीलक्ष्मी-गणेशाय समर्पयामि नमः।

मन्त्र- ॐ सौम्याय महा-गणपतये वर-वरद सर्व-जनं मे वशमानय स्वाहा (२८ अक्षर)।

मन्त्रार्थ-चिन्तन– ॐ = मुक्ति या मोक्ष को देनेवाले। सौम्याय महा-गणपतये = अत्यन्त सुखद सर्व-साक्षी विश्वात्मा महा-गणपति। वर-वरद = श्रेष्ठ वर प्रदान करें। सर्व-जनं मे वशमानय स्वाहा = सभी लोगों को मेरे अनुकूल बनाएँ।

जप-'वर्ण-माला' का ध्यान कर उक्त मन्त्र का 'जप' निम्न प्रकार करें। यथा-

अन्तर्विद्रुम-भासमान-भुजगां, सुप्तोत्थ-वर्णोज्ज्वलाम् ।
आरोहामवरोहिकां शत-मयीं, वर्गाष्टकाष्टोत्तरीम्।।
साक्षात् ब्रह्म-मयीं 'क्ष' मेरु-सहितां, श्रीमातृकाक्षावलीम् ।
विद्यां नौमि समस्त-मन्त्र-जननीं, ज्ञानैक-दीपांकुराम् ।।

ॐ

१. अं ॐ सौम्याय महा-गणपतये वर-वरद सर्व-जनं मे वशमानय स्वाहा अं

२. आं ॐ सौम्याय महा-गणपतये वर-वरद सर्व-जनं मे वशमानय स्वाहा आं

३. इं ॐ सौम्याय महा-गणपतये वर-वरद सर्व-जनं मे वशमानय स्वाहा इं

४. ईं ॐ सौम्याय महा-गणपतये वर-वरद सर्व-जनं मे वशमानय स्वाहा ईं

५. उं ॐ सौम्याय महा-गणपतये वर-वरद सर्व-जनं मे वशमानय स्वाहा उं

६. ऊं ॐ सौम्याय महा-गणपतये वर-वरद सर्व-जनं मे वशमानय स्वाहा ऊं

७. ऋं ॐ सौम्याय महा-गणपतये वर-वरद सर्व-जनं मे वशमानय स्वाहा ऋं

८. ॠं ॐ सौम्याय महा-गणपतये वर-वरद सर्व-जनं मे वशमानय स्वाहा ॠं

९. ऌं ॐ सौम्याय महा-गणपतये वर-वरद सर्व-जनं मे वशमानय स्वाहा ऌं

१०. ॡं ॐ सौम्याय महा-गणपतये वर-वरद सर्व-जनं मे वशमानय स्वाहा ॡं

११. एं ॐ सौम्याय महा-गणपतये वर-वरद सर्व-जनं मे वशमानय स्वाहा एं

१२. ऐं ॐ सौम्याय महा-गणपतये वर-वरद सर्व-जनं मे वशमानय स्वाहा ऐं

१३. ओं ॐ सौम्याय महा-गणपतये वर-वरद सर्व-जनं मे वशमानय स्वाहा ओं

१४. औं ॐ सौम्याय महा-गणपतये वर-वरद सर्व-जनं मे वशमानय स्वाहा औं

१५. अं ॐ सौम्याय महा-गणपतये वर-वरद सर्व-जनं मे वशमानय स्वाहा अं

१६. अः ॐ सौम्याय महा-गणपतये वर-वरद सर्व-जनं मे वशमानय स्वाहा अः

१७. कं ॐ सौम्याय महा-गणपतये वर-वरद सर्व-जनं मे वशमानय स्वाहा कं

१८. खं ॐ सौम्याय महा-गणपतये वर-वरद सर्व-जनं मे वशमानय स्वाहा खं

१९. गं ॐ सौम्याय महा-गणपतये वर-वरद सर्व-जनं मे वशमानय स्वाहा गं

२०. घं ॐ सौम्याय महा-गणपतये वर-वरद सर्व-जनं मे वशमानय स्वाहा घं

२१. ङं ॐ सौम्याय महा-गणपतये वर-वरद सर्व-जनं मे वशमानय स्वाहा ङं

२२. चं ॐ सौम्याय महा-गणपतये वर-वरद सर्व-जनं मे वशमानय स्वाहा चं

२३. छं ॐ सौम्याय महा-गणपतये वर-वरद सर्व-जनं मे वशमानय स्वाहा छं

२४. जं ॐ सौम्याय महा-गणपतये वर-वरद सर्व-जनं मे वशमानय स्वाहा जं

२५. झं ॐ सौम्याय महा-गणपतये वर-वरद सर्व-जनं मे वशमानय स्वाहा झं

२६. ञं ॐ सौम्याय महा-गणपतये वर-वरद सर्व-जनं मे वशमानय स्वाहा ञं

२७. टं ॐ सौम्याय महा-गणपतये वर-वरद सर्व-जनं मे वशमानय स्वाहा टं

२८. ठं ॐ सौम्याय महा-गणपतये वर-वरद सर्व-जनं मे वशमानय स्वाहा ठं

२९. डं ॐ सौम्याय महा-गणपतये वर-वरद सर्व-जनं मे वशमानय स्वाहा डं

३०. ढं ॐ सौम्याय महा-गणपतये वर-वरद सर्व-जनं मे वशमानय स्वाहा ढं

३१. णं ॐ सौम्याय महा-गणपतये वर-वरद सर्व-जनं मे वशमानय स्वाहा णं

३२. तं ॐ सौम्याय महा-गणपतये वर-वरद सर्व-जनं मे वशमानय स्वाहा तं

३३. थं ॐ सौम्याय महा-गणपतये वर-वरद सर्व-जनं मे वशमानय स्वाहा थं

३४. दं ॐ सौम्याय महा-गणपतये वर-वरद सर्व-जनं मे वशमानय स्वाहा दं

३५. धं ॐ सौम्याय महा-गणपतये वर-वरद सर्व-जनं मे वशमानय स्वाहा धं

३६. नं ॐ सौम्याय महा-गणपतये वर-वरद सर्व-जनं मे वशमानय स्वाहा नं

३७. पं ॐ सौम्याय महा-गणपतये वर-वरद सर्व-जनं मे वशमानय स्वाहा पं

३८. फं ॐ सौम्याय महा-गणपतये वर-वरद सर्व-जनं मे वशमानय स्वाहा फं

३९. बं ॐ सौम्याय महा-गणपतये वर-वरद सर्व-जनं मे वशमानय स्वाहा बं

४०. भं ॐ सौम्याय महा-गणपतये वर-वरद सर्व-जनं मे वशमानय स्वाहा भं

४१. मं ॐ सौम्याय महा-गणपतये वर-वरद सर्व-जनं मे वशमानय स्वाहा मं

४२. यं ॐ सौम्याय महा-गणपतये वर-वरद सर्व-जनं मे वशमानय स्वाहा यं

४३. रं ॐ सौम्याय महा-गणपतये वर-वरद सर्व-जनं मे वशमानय स्वाहा रं

४४. लं ॐ सौम्याय महा-गणपतये वर-वरद सर्व-जनं मे वशमानय स्वाहा लं

४५. वं ॐ सौम्याय महा-गणपतये वर-वरद सर्व-जनं मे वशमानय स्वाहा वं

४६. शं ॐ सौम्याय महा-गणपतये वर-वरद सर्व-जनं मे वशमानय स्वाहा शं

४७. षं ॐ सौम्याय महा-गणपतये वर-वरद सर्व-जनं मे वशमानय स्वाहा षं

४८. सं ॐ सौम्याय महा-गणपतये वर-वरद सर्व-जनं मे वशमानय स्वाहा सं

४९. हं ॐ सौम्याय महा-गणपतये वर-वरद सर्व-जनं मे वशमानय स्वाहा हं

५०. ळं ॐ सौम्याय महा-गणपतये वर-वरद सर्व-जनं मे वशमानय स्वाहा ळं

५१. ळं ॐ सौम्याय महा-गणपतये वर-वरद सर्व-जनं मे वशमानय स्वाहा ळं

५२. हं ॐ सौम्याय महा-गणपतये वर-वरद सर्व-जनं मे वशमानय स्वाहा हं

५३. सं ॐ सौम्याय महा-गणपतये वर-वरद सर्व-जनं मे वशमानय स्वाहा सं

५४. षं ॐ सौम्याय महा-गणपतये वर-वरद सर्व-जनं मे वशमानय स्वाहा षं

५५. शं ॐ सौम्याय महा-गणपतये वर-वरद सर्व-जनं मे वशमानय स्वाहा शं

५६. वं ॐ सौम्याय महा-गणपतये वर-वरद सर्व-जनं मे वशमानय स्वाहा वं

५७. लं ॐ सौम्याय महा-गणपतये वर-वरद सर्व-जनं मे वशमानय स्वाहा लं

५८. रं ॐ सौम्याय महा-गणपतये वर-वरद सर्व-जनं मे वशमानय स्वाहा रं

५९. यं ॐ सौम्याय महा-गणपतये वर-वरद सर्व-जनं मे वशमानय स्वाहा यं

६०. मं ॐ सौम्याय महा-गणपतये वर-वरद सर्व-जनं मे वशमानय स्वाहा मं

६१. भं ॐ सौम्याय महा-गणपतये वर-वरद सर्व-जनं मे वशमानय स्वाहा भं

६२. बं ॐ सौम्याय महा-गणपतये वर-वरद सर्व-जनं मे वशमानय स्वाहा बं

६३. फं ॐ सौम्याय महा-गणपतये वर-वरद सर्व-जनं मे वशमानय स्वाहा फं

६४. पं ॐ सौम्याय महा-गणपतये वर-वरद सर्व-जनं मे वशमानय स्वाहा पं

६५. नं ॐ सौम्याय महा-गणपतये वर-वरद सर्व-जनं मे वशमानय स्वाहा नं

६६. धं ॐ सौम्याय महा-गणपतये वर-वरद सर्व-जनं मे वशमानय स्वाहा धं

६७. दं ॐ सौम्याय महा-गणपतये वर-वरद सर्व-जनं मे वशमानय स्वाहा दं

६८. थं ॐ सौम्याय महा-गणपतये वर-वरद सर्व-जनं मे वशमानय स्वाहा थं

६९. तं ॐ सौम्याय महा-गणपतये वर-वरद सर्व-जनं मे वशमानय स्वाहा तं

७०. णं ॐ सौम्याय महा-गणपतये वर-वरद सर्व-जनं मे वशमानय स्वाहा णं

७१. ढं ॐ सौम्याय महा-गणपतये वर-वरद सर्व-जनं मे वशमानय स्वाहा ढं

७२. डं ॐ सौम्याय महा-गणपतये वर-वरद सर्व-जनं मे वशमानय स्वाहा डं

७३. ठं ॐ सौम्याय महा-गणपतये वर-वरद सर्व-जनं मे वशमानय स्वाहा ठं

७४. टं ॐ सौम्याय महा-गणपतये वर-वरद सर्व-जनं मे वशमानय स्वाहा टं

७५. ञं ॐ सौम्याय महा-गणपतये वर-वरद सर्व-जनं मे वशमानय स्वाहा ञं

७६. झं ॐ सौम्याय महा-गणपतये वर-वरद सर्व-जनं मे वशमानय स्वाहा झं

७७. जं ॐ सौम्याय महा-गणपतये वर-वरद सर्व-जनं मे वशमानय स्वाहा जं

७८. छं ॐ सौम्याय महा-गणपतये वर-वरद सर्व-जनं मे वशमानय स्वाहा छं

७९. चं ॐ सौम्याय महा-गणपतये वर-वरद सर्व-जनं मे वशमानय स्वाहा चं

८०. ङं ॐ सौम्याय महा-गणपतये वर-वरद सर्व-जनं मे वशमानय स्वाहा ङं

८१. घं ॐ सौम्याय महा-गणपतये वर-वरद सर्व-जनं मे वशमानय स्वाहा घं

८२. गं ॐ सौम्याय महा-गणपतये वर-वरद सर्व-जनं मे वशमानय स्वाहा गं

८३. खं ॐ सौम्याय महा-गणपतये वर-वरद सर्व-जनं मे वशमानय स्वाहा खं

८४. कं ॐ सौम्याय महा-गणपतये वर-वरद सर्व-जनं मे वशमानय स्वाहा कं

८५. अः ॐ सौम्याय महा-गणपतये वर-वरद सर्व-जनं मे वशमानय स्वाहा अः

८६. अं ॐ सौम्याय महा-गणपतये वर-वरद सर्व-जनं मे वशमानय स्वाहा अं

८७. औं ॐ सौम्याय महा-गणपतये वर-वरद सर्व-जनं मे वशमानय स्वाहा औं

८८. ओं ॐ सौम्याय महा-गणपतये वर-वरद सर्व-जनं मे वशमानय स्वाहा ओं

८९. ऐं ॐ सौम्याय महा-गणपतये वर-वरद सर्व-जनं मे वशमानय स्वाहा ऐं

९०. एं ॐ सौम्याय महा-गणपतये वर-वरद सर्व-जनं मे वशमानय स्वाहा एं

९१. लृं ॐ सौम्याय महा-गणपतये वर-वरद सर्व-जनं मे वशमानय स्वाहा लृं

९२. लॄं ॐ सौम्याय महा-गणपतये वर-वरद सर्व-जनं मे वशमानय स्वाहा लॄं

९३. ऋं ॐ सौम्याय महा-गणपतये वर-वरद सर्व-जनं मे वशमानय स्वाहा ऋं

९४. ॠं ॐ सौम्याय महा-गणपतये वर-वरद सर्व-जनं मे वशमानय स्वाहा ॠं

९५. ऊं ॐ सौम्याय महा-गणपतये वर-वरद सर्व-जनं मे वशमानय स्वाहा ऊं

९६. उं ॐ सौम्याय महा-गणपतये वर-वरद सर्व-जनं मे वशमानय स्वाहा उं

९७. ईं ॐ सौम्याय महा-गणपतये वर-वरद सर्व-जनं मे वशमानय स्वाहा ईं

९८. इं ॐ सौम्याय महा-गणपतये वर-वरद सर्व-जनं मे वशमानय स्वाहा इं

९९. आं ॐ सौम्याय महा-गणपतये वर-वरद सर्व-जनं मे वशमानय स्वाहा आं

१००. अं ॐ सौम्याय महा-गणपतये वर-वरद सर्व-जनं मे वशमानय स्वाहा अं

१०१. अं ॐ सौम्याय महा-गणपतये वर-वरद सर्व-जनं मे वशमानय स्वाहा अं

१०२. कं ॐ सौम्याय महा-गणपतये वर-वरद सर्व-जनं मे वशमानय स्वाहा कं

१०३. चं ॐ सौम्याय महा-गणपतये वर-वरद सर्व-जनं मे वशमानय स्वाहा चं

१०४. टं ॐ सौम्याय महा-गणपतये वर-वरद सर्व-जनं मे वशमानय स्वाहा टं

१०५. तं ॐ सौम्याय महा-गणपतये वर-वरद सर्व-जनं मे वशमानय स्वाहा तं

१०६. पं ॐ सौम्याय महा-गणपतये वर-वरद सर्व-जनं मे वशमानय स्वाहा पं

१०७. यं ॐ सौम्याय महा-गणपतये वर-वरद सर्व-जनं मे वशमानय स्वाहा यं

१०८. शं ॐ सौम्याय महा-गणपतये वर-वरद सर्व-जनं मे वशमानय स्वाहा शं

होम– यथा-शक्ति 'जप' करने के बाद बिल्व की लकड़ी द्वारा 'होम' करना चाहिए।

❖❖❖

श्रीसर्व-विघ्न-हर-गणपति-त्रिंशदक्षर-मन्त्र-साधना

'मन्त्र-महार्णव' में 'वीरभद्रोड्डीश तन्त्र' के आधार पर नवाक्षर 'ॐ गं गणपतये नमः' एवं त्रिंशदक्षर 'गं गणपतये सर्व-विघ्न-हराय सर्वाय सर्व-गुरवे लम्बोदराय ह्रीं गं नमः' इस प्रकार से दो मन्त्र दिए गए हैं। इन दोनों मन्त्रों में से पहले नवाक्षर 'ॐ गं गणपतये नमः' मन्त्र से 'चण्डी' के पाठक बन्धु भली-भाँति परिचित हैं। अतएव यहाँ तीस अक्षरवाले **सर्व-विघ्न-हर मन्त्र** का विधान दिया जा रहा है। इस मन्त्र के '**जप**' से सभी प्रकार के **विघ्नों का निवारण** तो होता ही है, साथ ही **कल्याणकारी मार्ग-दर्शन** भी प्राप्त होता है।

'**जप**' करने से पहले '**गं**'-वीज-मय **गणपति का ध्यान** निम्न प्रकार करना चाहिए। यथा-

सिन्दूराभं त्रि-नेत्रं पृथुतर-जठरं हस्त-पद्मैर्दधानम् ।
दन्तं पाशांकुशेष्टान्युरु-कर-विलसद्-वीजपूराभिरामम् ।।
बालेन्दु-द्योति-मौलिं करि-पति-वदनं दान-पूरार्द्र-गण्डम् ।
भोगीन्द्राबद्ध-भूषं भजत गण-पतिं रक्त-वस्त्राङ्ग-रागम् ।।

अर्थात् सिन्दूर के समान **रक्त-वर्ण**, **त्रिनेत्र** एवं **स्थूल उदर**, चार कर-कमलों में **दाँत**, **पाश**, **अंकुश** एवं **वर-मुद्रा**-धारी, **सूँड़** पर **मनोहर बीजपूर**, मस्तक पर **बाल-चन्द्र**, **गज-मुख**, **मद-वारि** से **आर्द्र कनपटियाँ**, **सर्पाभूषणों** से अलंकृत, **रक्त-वस्त्र** एवं **रक्त-अङ्गराग** से युक्त **श्री गणपति** की मैं वन्दना करता हूँ।

फिर **सर्व-विघ्न-हर-गणपति** का **मानस-पूजन** करे। यथा-

मानस-पूजा- **लं पृथिव्यात्मकं गन्धं सर्व-विघ्न-हर-गणपतये समर्पयामि नमः। हं आकाशात्मकं पुष्पं सर्व-विघ्न-हर-गणपतये समर्पयामि नमः। यं वाय्वात्मकं धूपं सर्व-विघ्न-हर-गणपतये घ्रापयामि नमः। रं वह्न्यात्मकं दीपं सर्व-विघ्न-हर-गणपतये दर्शयामि नमः। वं अमृतात्मकं नैवेद्यं सर्व-विघ्न-हर-गणपतये निवेदयामि नमः। सं सर्वात्मकं ताम्बूलं सर्व-विघ्न-हर-गणपतये समर्पयामि नमः।**

मन्त्र- **गं गणपतये सर्व-विघ्न-हराय सर्वाय सर्व-गुरवे लम्बोदराय ह्रीं गं नमः** (३० अक्षर)।

मन्त्रार्थ-चिन्तन-

गं गणपतये सर्व-विघ्न-हराय सर्वाय सर्व-गुरवे लम्बोदराय ह्रीं गं नमः = सभी प्रकार के दुःखों एवं विघ्नों को दूर करनेवाले, सबको सभी प्रकार से मार्ग-दर्शन देनेवाले, लम्बे उदरवाले सर्व-साक्षी विश्वात्मा गणपति की माया की अमोघ शक्ति से युक्त शक्ति को नमस्कार।

जप-'**वर्ण-माला**' का ध्यान कर उक्त मन्त्र का '**जप**' निम्न प्रकार करें। यथा-

अन्तर्विद्रुम-भासमान-भुजगां, सुप्तोत्थ-वर्णोज्ज्वलाम् ।
आरोहामवरोहिकां शत-मयीं, वर्गाष्टकाष्टोत्तरीम्।।
साक्षात् ब्रह्म-मयीं 'क्ष' मेरु-सहितां, श्रीमातृकाक्षावलीम् ।
विद्यां नौमि समस्त-मन्त्र-जननीं, ज्ञानैक-दीपांकुराम् ।।

ॐ

१. अं गं गणपतये सर्व-विघ्न-हराय सर्वाय सर्व-गुरवे लम्बोदराय ह्रीं गं नमः अं

२. आं गं गणपतये सर्व-विघ्न-हराय सर्वाय सर्व-गुरवे लम्बोदराय ह्रीं गं नमः आं

३. इं गं गणपतये सर्व-विघ्न-हराय सर्वाय सर्व-गुरवे लम्बोदराय ह्रीं गं नमः इं

४. ईं गं गणपतये सर्व-विघ्न-हराय सर्वाय सर्व-गुरवे लम्बोदराय ह्रीं गं नमः ईं

५. उं गं गणपतये सर्व-विघ्न-हराय सर्वाय सर्व-गुरवे लम्बोदराय ह्रीं गं नमः उं

६. ऊं गं गणपतये सर्व-विघ्न-हराय सर्वाय सर्व-गुरवे लम्बोदराय ह्रीं गं नमः ऊं

७. ऋं गं गणपतये सर्व-विघ्न-हराय सर्वाय सर्व-गुरवे लम्बोदराय ह्रीं गं नमः ऋं

८. ॠं गं गणपतये सर्व-विघ्न-हराय सर्वाय सर्व-गुरवे लम्बोदराय ह्रीं गं नमः ॠं

९. ऌं गं गणपतये सर्व-विघ्न-हराय सर्वाय सर्व-गुरवे लम्बोदराय ह्रीं गं नमः ऌं

१०. ॡं गं गणपतये सर्व-विघ्न-हराय सर्वाय सर्व-गुरवे लम्बोदराय ह्रीं गं नमः ॡं

११. एं गं गणपतये सर्व-विघ्न-हराय सर्वाय सर्व-गुरवे लम्बोदराय ह्रीं गं नमः एं

१२. ऐं गं गणपतये सर्व-विघ्न-हराय सर्वाय सर्व-गुरवे लम्बोदराय ह्रीं गं नमः ऐं

१३. ओं गं गणपतये सर्व-विघ्न-हराय सर्वाय सर्व-गुरवे लम्बोदराय ह्रीं गं नमः ओं

१४. औं गं गणपतये सर्व-विघ्न-हराय सर्वाय सर्व-गुरवे लम्बोदराय ह्रीं गं नमः औं

१५. अं गं गणपतये सर्व-विघ्न-हराय सर्वाय सर्व-गुरवे लम्बोदराय ह्रीं गं नमः अं

१६. अः गं गणपतये सर्व-विघ्न-हराय सर्वाय सर्व-गुरवे लम्बोदराय ह्रीं गं नमः अः

१७. कं गं गणपतये सर्व-विघ्न-हराय सर्वाय सर्व-गुरवे लम्बोदराय ह्रीं गं नमः कं

१८. खं गं गणपतये सर्व-विघ्न-हराय सर्वाय सर्व-गुरवे लम्बोदराय ह्रीं गं नमः खं

१९. गं गं गणपतये सर्व-विघ्न-हराय सर्वाय सर्व-गुरवे लम्बोदराय ह्रीं गं नमः गं

२०. घं गं गणपतये सर्व-विघ्न-हराय सर्वाय सर्व-गुरवे लम्बोदराय ह्रीं गं नमः घं

२१. ङं गं गणपतये सर्व-विघ्न-हराय सर्वाय सर्व-गुरवे लम्बोदराय ह्रीं गं नमः ङं

२२. चं गं गणपतये सर्व-विघ्न-हराय सर्वाय सर्व-गुरवे लम्बोदराय ह्रीं गं नमः चं

२३. छं गं गणपतये सर्व-विघ्न-हराय सर्वाय सर्व-गुरवे लम्बोदराय ह्रीं गं नमः छं

२४. जं गं गणपतये सर्व-विघ्न-हराय सर्वाय सर्व-गुरवे लम्बोदराय ह्रीं गं नमः जं

२५. झं गं गणपतये सर्व-विघ्न-हराय सर्वाय सर्व-गुरवे लम्बोदराय ह्रीं गं नमः झं

२६. ञं गं गणपतये सर्व-विघ्न-हराय सर्वाय सर्व-गुरवे लम्बोदराय ह्रीं गं नमः ञं

२७. टं गं गणपतये सर्व-विघ्न-हराय सर्वाय सर्व-गुरवे लम्बोदराय ह्रीं गं नमः टं

२८. ठं गं गणपतये सर्व-विघ्न-हराय सर्वाय सर्व-गुरवे लम्बोदराय ह्रीं गं नमः ठं

२९. डं गं गणपतये सर्व-विघ्न-हराय सर्वाय सर्व-गुरवे लम्बोदराय ह्रीं गं नमः डं

३०. ढं गं गणपतये सर्व-विघ्न-हराय सर्वाय सर्व-गुरवे लम्बोदराय ह्रीं गं नमः ढं

३१. णं गं गणपतये सर्व-विघ्न-हराय सर्वाय सर्व-गुरवे लम्बोदराय ह्रीं गं नमः णं

३२. तं गं गणपतये सर्व-विघ्न-हराय सर्वाय सर्व-गुरवे लम्बोदराय ह्रीं गं नमः तं

३३. थं गं गणपतये सर्व-विघ्न-हराय सर्वाय सर्व-गुरवे लम्बोदराय ह्रीं गं नमः थं

३४. दं गं गणपतये सर्व-विघ्न-हराय सर्वाय सर्व-गुरवे लम्बोदराय ह्रीं गं नमः दं

३५. धं गं गणपतये सर्व-विघ्न-हराय सर्वाय सर्व-गुरवे लम्बोदराय ह्रीं गं नमः धं

३६. नं गं गणपतये सर्व-विघ्न-हराय सर्वाय सर्व-गुरवे लम्बोदराय ह्रीं गं नमः नं

३७. पं गं गणपतये सर्व-विघ्न-हराय सर्वाय सर्व-गुरवे लम्बोदराय ह्रीं गं नमः पं

३८. फं गं गणपतये सर्व-विघ्न-हराय सर्वाय सर्व-गुरवे लम्बोदराय ह्रीं गं नमः फं

३९. बं गं गणपतये सर्व-विघ्न-हराय सर्वाय सर्व-गुरवे लम्बोदराय ह्रीं गं नमः बं

४०. भं गं गणपतये सर्व-विघ्न-हराय सर्वाय सर्व-गुरवे लम्बोदराय ह्रीं गं नमः भं

४१. मं गं गणपतये सर्व-विघ्न-हराय सर्वाय सर्व-गुरवे लम्बोदराय ह्रीं गं नमः मं

४२. यं गं गणपतये सर्व-विघ्न-हराय सर्वाय सर्व-गुरवे लम्बोदराय ह्रीं गं नमः यं

४३. रं गं गणपतये सर्व-विघ्न-हराय सर्वाय सर्व-गुरवे लम्बोदराय ह्रीं गं नमः रं

४४. लं गं गणपतये सर्व-विघ्न-हराय सर्वाय सर्व-गुरवे लम्बोदराय ह्रीं गं नमः लं

४५. वं गं गणपतये सर्व-विघ्न-हराय सर्वाय सर्व-गुरवे लम्बोदराय ह्रीं गं नमः वं

४६. शं गं गणपतये सर्व-विघ्न-हराय सर्वाय सर्व-गुरवे लम्बोदराय ह्रीं गं नमः शं

४७. षं गं गणपतये सर्व-विघ्न-हराय सर्वाय सर्व-गुरवे लम्बोदराय ह्रीं गं नमः षं

४८. सं गं गणपतये सर्व-विघ्न-हराय सर्वाय सर्व-गुरवे लम्बोदराय ह्रीं गं नमः सं

४९. हं गं गणपतये सर्व-विघ्न-हराय सर्वाय सर्व-गुरवे लम्बोदराय ह्रीं गं नमः हं

५०. ळं गं गणपतये सर्व-विघ्न-हराय सर्वाय सर्व-गुरवे लम्बोदराय ह्रीं गं नमः ळं

५१. ळं गं गणपतये सर्व-विघ्न-हराय सर्वाय सर्व-गुरवे लम्बोदराय ह्रीं गं नमः ळं

५२. हं गं गणपतये सर्व-विघ्न-हराय सर्वाय सर्व-गुरवे लम्बोदराय ह्रीं गं नमः हं

५३. सं गं गणपतये सर्व-विघ्न-हराय सर्वाय सर्व-गुरवे लम्बोदराय ह्रीं गं नमः सं

५४. षं गं गणपतये सर्व-विघ्न-हराय सर्वाय सर्व-गुरवे लम्बोदराय ह्रीं गं नमः षं

५५. शं गं गणपतये सर्व-विघ्न-हराय सर्वाय सर्व-गुरवे लम्बोदराय ह्रीं गं नमः शं

५६. वं गं गणपतये सर्व-विघ्न-हराय सर्वाय सर्व-गुरवे लम्बोदराय ह्रीं गं नमः वं

५७. लं गं गणपतये सर्व-विघ्न-हराय सर्वाय सर्व-गुरवे लम्बोदराय ह्रीं गं नमः लं

५८. रं गं गणपतये सर्व-विघ्न-हराय सर्वाय सर्व-गुरवे लम्बोदराय ह्रीं गं नमः रं

५९. यं गं गणपतये सर्व-विघ्न-हराय सर्वाय सर्व-गुरवे लम्बोदराय ह्रीं गं नमः यं

६०. मं गं गणपतये सर्व-विघ्न-हराय सर्वाय सर्व-गुरवे लम्बोदराय ह्रीं गं नमः मं

६१. भं गं गणपतये सर्व-विघ्न-हराय सर्वाय सर्व-गुरवे लम्बोदराय ह्रीं गं नमः भं

६२. बं गं गणपतये सर्व-विघ्न-हराय सर्वाय सर्व-गुरवे लम्बोदराय ह्रीं गं नमः बं

६३. फं गं गणपतये सर्व-विघ्न-हराय सर्वाय सर्व-गुरवे लम्बोदराय ह्रीं गं नमः फं

६४. पं गं गणपतये सर्व-विघ्न-हराय सर्वाय सर्व-गुरवे लम्बोदराय ह्रीं गं नमः पं

६५. नं गं गणपतये सर्व-विघ्न-हराय सर्वाय सर्व-गुरवे लम्बोदराय ह्रीं गं नमः नं

६६. धं गं गणपतये सर्व-विघ्न-हराय सर्वाय सर्व-गुरवे लम्बोदराय ह्रीं गं नमः धं

६७. दं गं गणपतये सर्व-विघ्न-हराय सर्वाय सर्व-गुरवे लम्बोदराय ह्रीं गं नमः दं

६८. थं गं गणपतये सर्व-विघ्न-हराय सर्वाय सर्व-गुरवे लम्बोदराय ह्रीं गं नमः थं

६९. तं गं गणपतये सर्व-विघ्न-हराय सर्वाय सर्व-गुरवे लम्बोदराय ह्रीं गं नमः तं

७०. णं गं गणपतये सर्व-विघ्न-हराय सर्वाय सर्व-गुरवे लम्बोदराय ह्रीं गं नमः णं

७१. ढं गं गणपतये सर्व-विघ्न-हराय सर्वाय सर्व-गुरवे लम्बोदराय ह्रीं गं नमः ढं

७२. डं गं गणपतये सर्व-विघ्न-हराय सर्वाय सर्व-गुरवे लम्बोदराय ह्रीं गं नमः डं

७३. ठं गं गणपतये सर्व-विघ्न-हराय सर्वाय सर्व-गुरवे लम्बोदराय ह्रीं गं नमः ठं

७४. टं गं गणपतये सर्व-विघ्न-हराय सर्वाय सर्व-गुरवे लम्बोदराय ह्रीं गं नमः टं

७५. ञं गं गणपतये सर्व-विघ्न-हराय सर्वाय सर्व-गुरवे लम्बोदराय ह्रीं गं नमः ञं

७६. झं गं गणपतये सर्व-विघ्न-हराय सर्वाय सर्व-गुरवे लम्बोदराय ह्रीं गं नमः झं

७७. जं गं गणपतये सर्व-विघ्न-हराय सर्वाय सर्व-गुरवे लम्बोदराय ह्रीं गं नमः जं

७८. छं गं गणपतये सर्व-विघ्न-हराय सर्वाय सर्व-गुरवे लम्बोदराय ह्रीं गं नमः छं

७९. चं गं गणपतये सर्व-विघ्न-हराय सर्वाय सर्व-गुरवे लम्बोदराय ह्रीं गं नमः चं

८०. ङं गं गणपतये सर्व-विघ्न-हराय सर्वाय सर्व-गुरवे लम्बोदराय ह्रीं गं नमः ङं

८१. घं गं गणपतये सर्व-विघ्न-हराय सर्वाय सर्व-गुरवे लम्बोदराय ह्रीं गं नमः घं

८२. गं गं गणपतये सर्व-विघ्न-हराय सर्वाय सर्व-गुरवे लम्बोदराय ह्रीं गं नमः गं

८३. खं गं गणपतये सर्व-विघ्न-हराय सर्वाय सर्व-गुरवे लम्बोदराय ह्रीं गं नमः खं

८४. कं गं गणपतये सर्व-विघ्न-हराय सर्वाय सर्व-गुरवे लम्बोदराय ह्रीं गं नमः कं

८५. अः गं गणपतये सर्व-विघ्न-हराय सर्वाय सर्व-गुरवे लम्बोदराय ह्रीं गं नमः अः

८६. अं गं गणपतये सर्व-विघ्न-हराय सर्वाय सर्व-गुरवे लम्बोदराय ह्रीं गं नमः अं

८७. औं गं गणपतये सर्व-विघ्न-हराय सर्वाय सर्व-गुरवे लम्बोदराय ह्रीं गं नमः औं

८८. ओं गं गणपतये सर्व-विघ्न-हराय सर्वाय सर्व-गुरवे लम्बोदराय ह्रीं गं नमः ओं

८९. ऐं गं गणपतये सर्व-विघ्न-हराय सर्वाय सर्व-गुरवे लम्बोदराय ह्रीं गं नमः ऐं

९०. एं गं गणपतये सर्व-विघ्न-हराय सर्वाय सर्व-गुरवे लम्बोदराय ह्रीं गं नमः एं

९१. लृं गं गणपतये सर्व-विघ्न-हराय सर्वाय सर्व-गुरवे लम्बोदराय ह्रीं गं नमः लृं

९२. ॡं गं गणपतये सर्व-विघ्न-हराय सर्वाय सर्व-गुरवे लम्बोदराय ह्रीं गं नमः ॡं

९३. ॠं गं गणपतये सर्व-विघ्न-हराय सर्वाय सर्व-गुरवे लम्बोदराय ह्रीं गं नमः ॠं

९४. ऋं गं गणपतये सर्व-विघ्न-हराय सर्वाय सर्व-गुरवे लम्बोदराय ह्रीं गं नमः ऋं

९५. ऊं गं गणपतये सर्व-विघ्न-हराय सर्वाय सर्व-गुरवे लम्बोदराय ह्रीं गं नमः ऊं

९६. उं गं गणपतये सर्व-विघ्न-हराय सर्वाय सर्व-गुरवे लम्बोदराय ह्रीं गं नमः उं

९७. ईं गं गणपतये सर्व-विघ्न-हराय सर्वाय सर्व-गुरवे लम्बोदराय ह्रीं गं नमः ईं

९८. इं गं गणपतये सर्व-विघ्न-हराय सर्वाय सर्व-गुरवे लम्बोदराय ह्रीं गं नमः इं

९९. आं गं गणपतये सर्व-विघ्न-हराय सर्वाय सर्व-गुरवे लम्बोदराय ह्रीं गं नमः आं

१००. अं गं गणपतये सर्व-विघ्न-हराय सर्वाय सर्व-गुरवे लम्बोदराय ह्रीं गं नमः अं

१०१. अं गं गणपतये सर्व-विघ्न-हराय सर्वाय सर्व-गुरवे लम्बोदराय ह्रीं गं नमः अं

१०२. कं गं गणपतये सर्व-विघ्न-हराय सर्वाय सर्व-गुरवे लम्बोदराय ह्रीं गं नमः कं

१०३. चं गं गणपतये सर्व-विघ्न-हराय सर्वाय सर्व-गुरवे लम्बोदराय ह्रीं गं नमः चं

१०४. टं गं गणपतये सर्व-विघ्न-हराय सर्वाय सर्व-गुरवे लम्बोदराय ह्रीं गं नमः टं

१०५. तं गं गणपतये सर्व-विघ्न-हराय सर्वाय सर्व-गुरवे लम्बोदराय ह्रीं गं नमः तं

१०६. पं गं गणपतये सर्व-विघ्न-हराय सर्वाय सर्व-गुरवे लम्बोदराय ह्रीं गं नमः पं

१०७. यं गं गणपतये सर्व-विघ्न-हराय सर्वाय सर्व-गुरवे लम्बोदराय ह्रीं गं नमः यं

१०८. शं गं गणपतये सर्व-विघ्न-हराय सर्वाय सर्व-गुरवे लम्बोदराय ह्रीं गं नमः शं

विशेष–पुष्य नक्षत्र में भगवान् श्रीगणेश की अर्क (मदार) की लम्बोदर चतुर्भुज मूर्ति बनवाए। फिर मूर्ति का पूजन कर उसे अपने घर में स्थापित करे एवं प्रति-दिन क्षीर (खीर) के मध्य में स्थापित कर श्वेत पदार्थों से उसकी पूजा कर १०८ बार उक्त मन्त्र का 'जप' करे। ऐसा करने से एक मास के भीतर अभीष्ट की प्राप्ति होती है।

❖❖❖

श्रीत्रैलोक्य-मोहन-कर-गणेश-त्रयस्त्रिंशदक्षर-मन्त्र-साधना

विनियोग– ॐ अस्य श्रीत्रैलोक्य-मोहन-कर-गणेश-त्रयस्त्रिंशदक्षर-मन्त्रस्य श्रीगणक ऋषिः। गायत्री छन्दः। श्रीत्रैलोक्य-मोहन-कर-गणेश देवता। मम अभीष्ट-सिद्ध्यर्थे जपे विनियोगः।

ऋष्यादि-न्यास– श्रीगणक-ऋषये नमः शिरसि। गायत्री-छन्दसे नमः मुखे। श्रीत्रैलोक्य-मोहन-कर-गणेश-देवतायै नमः हृदये। मम अभीष्ट-सिद्ध्यर्थे जपे विनियोगाय नमः अञ्जलौ।

कर-न्यास– वक्र-तुण्डैक-दंष्ट्राय क्लीं ह्रीं श्रीं गं अंगुष्ठाभ्यां नमः। गणपते तर्जनीभ्यां स्वाहा। वर-वरद मध्यमाभ्यां वषट्। सर्व-जनं अनामिकाभ्यां हुम्। मे वशमानय कनिष्ठाभ्यां वौषट्। स्वाहा करतल-कर-पृष्ठाभ्यां फट्।

षडङ्ग-न्यास– वक्र-तुण्डैक-दंष्ट्राय क्लीं ह्रीं श्रीं गं हृदयाय नमः। गणपते शिरसे स्वाहा। वर-वरद शिखायै वषट्। सर्व-जनं कवचाय हुम्। मे वशमानय नेत्र-त्रयाय वौषट्। स्वाहा अस्त्राय फट्।

ध्यान–

गदा-बीजपूरे धनुः शूल-चक्रे सरोजोत्पले पाश-धान्याग्र-दन्तान्।
करैः सन्दधानं स्व-शुण्डाग्र-राजन्-मणी-कुम्भमङ्काधिरूढं स्व-पत्न्या।।
सरोजन्मनाभूषणानां भरेणोज्ज्वलद्धस्त-तन्व्या समालिङ्गिताङ्गम् ।
करीन्द्राननं चन्द्र-चूडं त्रि-नेत्रं जगन्मोहनं रक्त-कान्तिं भजेत् तम् ।।

अर्थात् दाहिने हाथों में १. गदा, २. बीजपूर, ३. शूल, ४. चक्र एवं ५. पद्म तथा बाँएँ हाथों में ६. धनुष, ७. उत्पल, ८. पाश, ९. धान-मञ्जरी एवं १०. दन्त धारण किए हुए, सूँड़ के अग्र-भाग में सुन्दर मणि-कलश लिए हुए, तीन नेत्रवाले, कमल एवं आभूषणों से शोभायमान गोद में बैठी हुई अपनी पत्नी से आलिङ्गित, हाथी के समान मुखवाले, सिर पर चन्द्र-कला धारण करनेवाले, जगत् को मोहित करनेवाले, लाल आभावाले त्रैलोक्य-मोहन गणपति का ध्यान करता हूँ।

मानस-पूजा–

लं पृथिव्यात्मकं गन्धं श्रीत्रैलोक्य-मोहन-कर-गणेशाय समर्पयामि नमः।
हं आकाशात्मकं पुष्पं श्रीत्रैलोक्य-मोहन-कर-गणेशाय समर्पयामि नमः।
यं वाय्वात्मकं धूपं श्रीत्रैलोक्य-मोहन-कर-गणेशाय घ्रापयामि नमः।
रं वह्न्यात्मकं दीपं श्रीत्रैलोक्य-मोहन-कर-गणेशाय दर्शयामि नमः।
वं अमृतात्मकं नैवेद्यं श्रीत्रैलोक्य-मोहन-कर-गणेशाय निवेदयामि नमः।
सं सर्वात्मकं ताम्बूलं श्रीत्रैलोक्य-मोहन-कर-गणेशाय समर्पयामि नमः।

मन्त्र– वक्र-तुण्डैक-दंष्ट्राय क्लीं ह्रीं श्रीं गं गणपते वर-वरद सर्व-जनं मे वशमानय स्वाहा (३० अक्षर)।

मन्त्रार्थ-चिन्तन-

वक्र-तुण्डैक-दंष्ट्राय='वक्र-तुण्ड' अर्थात् आत्म-तत्त्व-मय। **'एक-दंष्ट्राय'** अर्थात् अद्वितीय। **क्लीं**=सभी कामनाओं को पूर्ण करनेवाले। **ह्रीं**=माया की अमोघ शक्ति से सम्पन्न। **श्रीं**=श्रेयत्व प्रदान करनेवाले। **गं गण-पतये**=दुःखों एवं विघ्नों को दूर करनेवाले सर्व-साक्षी विश्वात्मा श्रीगणेश। **वर-वरद**=श्रेष्ठ वर प्रदान करें। **सर्व-जनं मे वशमानय स्वाहा**=सभी लोगों को मेरे अनुकूल बनाएँ।

जप-'**वर्ण-माला**' का ध्यान कर उक्त मन्त्र का 'जप' निम्न प्रकार करें। यथा-

अन्तर्विद्रुम-भासमान-भुजगां, सुप्तोत्थ-वर्णोज्ज्वलाम् ।
आरोहामवरोहिकां शत-मयीं, वर्गाष्टकाष्टोत्तरीम्।।
साक्षात् ब्रह्म-मयीं 'क्ष' मेरु-सहितां, श्रीमातृकाक्षावलीम् ।
विद्यां नौमि समस्त-मन्त्र-जननीं, ज्ञानैक-दीपांकुराम् ।।

ॐ

१. **अं वक्र-तुण्डैक-दंष्ट्राय क्लीं ह्रीं श्रीं गं गणपतये वर-वरद सर्व-जनं मे वशमानय स्वाहा अं**

२. **आं वक्र-तुण्डैक-दंष्ट्राय क्लीं ह्रीं श्रीं गं गणपतये वर-वरद सर्व-जनं मे वशमानय स्वाहा आं**

३. **इं वक्र-तुण्डैक-दंष्ट्राय क्लीं ह्रीं श्रीं गं गणपतये वर-वरद सर्व-जनं मे वशमानय स्वाहा इं**

४. **ईं वक्र-तुण्डैक-दंष्ट्राय क्लीं ह्रीं श्रीं गं गणपतये वर-वरद सर्व-जनं मे वशमानय स्वाहा ईं**

५. **उं वक्र-तुण्डैक-दंष्ट्राय क्लीं ह्रीं श्रीं गं गणपतये वर-वरद सर्व-जनं मे वशमानय स्वाहा उं**

६. **ऊं वक्र-तुण्डैक-दंष्ट्राय क्लीं ह्रीं श्रीं गं गणपतये वर-वरद सर्व-जनं मे वशमानय स्वाहा ऊं**

७. **ऋं वक्र-तुण्डैक-दंष्ट्राय क्लीं ह्रीं श्रीं गं गणपतये वर-वरद सर्व-जनं मे वशमानय स्वाहा ऋं**

८. **ॠं वक्र-तुण्डैक-दंष्ट्राय क्लीं ह्रीं श्रीं गं गणपतये वर-वरद सर्व-जनं मे वशमानय स्वाहा ॠं**

९. **लृं वक्र-तुण्डैक-दंष्ट्राय क्लीं ह्रीं श्रीं गं गणपतये वर-वरद सर्व-जनं मे वशमानय स्वाहा लृं**

१०. **लॄं वक्र-तुण्डैक-दंष्ट्राय क्लीं ह्रीं श्रीं गं गणपतये वर-वरद सर्व-जनं मे वशमानय स्वाहा लॄं**

११. **एं वक्र-तुण्डैक-दंष्ट्राय क्लीं ह्रीं श्रीं गं गणपतये वर-वरद सर्व-जनं मे वशमानय स्वाहा एं**

१२. **ऐं वक्र-तुण्डैक-दंष्ट्राय क्लीं ह्रीं श्रीं गं गणपतये वर-वरद सर्व-जनं मे वशमानय स्वाहा ऐं**

१३. ओं वक्र-तुण्डैक-दंष्ट्राय क्लीं ह्रीं श्रीं गं गणपतये वर-वरद सर्व-जनं मे वशमानय स्वाहा ओं

१४. औं वक्र-तुण्डैक-दंष्ट्राय क्लीं ह्रीं श्रीं गं गणपतये वर-वरद सर्व-जनं मे वशमानय स्वाहा औं

१५. अं वक्र-तुण्डैक-दंष्ट्राय क्लीं ह्रीं श्रीं गं गणपतये वर-वरद सर्व-जनं मे वशमानय स्वाहा अं

१६. अः वक्र-तुण्डैक-दंष्ट्राय क्लीं ह्रीं श्रीं गं गणपतये वर-वरद सर्व-जनं मे वशमानय स्वाहा अः

१७. कं वक्र-तुण्डैक-दंष्ट्राय क्लीं ह्रीं श्रीं गं गणपतये वर-वरद सर्व-जनं मे वशमानय स्वाहा कं

१८. खं वक्र-तुण्डैक-दंष्ट्राय क्लीं ह्रीं श्रीं गं गणपतये वर-वरद सर्व-जनं मे वशमानय स्वाहा खं

१९. गं वक्र-तुण्डैक-दंष्ट्राय क्लीं ह्रीं श्रीं गं गणपतये वर-वरद सर्व-जनं मे वशमानय स्वाहा गं

२०. घं वक्र-तुण्डैक-दंष्ट्राय क्लीं ह्रीं श्रीं गं गणपतये वर-वरद सर्व-जनं मे वशमानय स्वाहा घं

२१. ङं वक्र-तुण्डैक-दंष्ट्राय क्लीं ह्रीं श्रीं गं गणपतये वर-वरद सर्व-जनं मे वशमानय स्वाहा ङं

२२. चं वक्र-तुण्डैक-दंष्ट्राय क्लीं ह्रीं श्रीं गं गणपतये वर-वरद सर्व-जनं मे वशमानय स्वाहा चं

२३. छं वक्र-तुण्डैक-दंष्ट्राय क्लीं ह्रीं श्रीं गं गणपतये वर-वरद सर्व-जनं मे वशमानय स्वाहा छं

२४. जं वक्र-तुण्डैक-दंष्ट्राय क्लीं ह्रीं श्रीं गं गणपतये वर-वरद सर्व-जनं मे वशमानय स्वाहा जं

२५. झं वक्र-तुण्डैक-दंष्ट्राय क्लीं ह्रीं श्रीं गं गणपतये वर-वरद सर्व-जनं मे वशमानय स्वाहा झं

२६. ञं वक्र-तुण्डैक-दंष्ट्राय क्लीं ह्रीं श्रीं गं गणपतये वर-वरद सर्व-जनं मे वशमानय स्वाहा ञं

२७. टं वक्र-तुण्डैक-दंष्ट्राय क्लीं ह्रीं श्रीं गं गणपतये वर-वरद सर्व-जनं मे वशमानय स्वाहा टं

२८. ठं वक्र-तुण्डैक-दंष्ट्राय क्लीं ह्रीं श्रीं गं गणपतये वर-वरद सर्व-जनं मे वशमानय स्वाहा ठं

२९. डं वक्र-तुण्डैक-दंष्ट्राय क्लीं ह्रीं श्रीं गं गणपतये वर-वरद सर्व-जनं मे वशमानय स्वाहा डं

३०. ढं वक्र-तुण्डैक-दंष्ट्राय क्लीं ह्रीं श्रीं गं गणपतये वर-वरद सर्व-जनं मे वशमानय स्वाहा ढं

३१. णं वक्र-तुण्डैक-दंष्ट्राय क्लीं ह्रीं श्रीं गं गणपतये वर-वरद सर्व-जनं मे वशमानय स्वाहा णं

३२. तं वक्र-तुण्डैक-दंष्ट्राय क्लीं ह्रीं श्रीं गं गणपतये वर-वरद सर्व-जनं मे वशमानय स्वाहा तं

३३. थं वक्र-तुण्डैक-दंष्ट्राय क्लीं ह्रीं श्रीं गं गणपतये वर-वरद सर्व-जनं मे वशमानय स्वाहा थं

३४. दं वक्र-तुण्डैक-दंष्ट्राय क्लीं ह्रीं श्रीं गं गणपतये वर-वरद सर्व-जनं मे वशमानय स्वाहा दं

३५. धं वक्र-तुण्डैक-दंष्ट्राय क्लीं ह्रीं श्रीं गं गणपतये वर-वरद सर्व-जनं मे वशमानय स्वाहा धं

३६. नं वक्र-तुण्डैक-दंष्ट्राय क्लीं ह्रीं श्रीं गं गणपतये वर-वरद सर्व-जनं मे वशमानय स्वाहा नं

३७. पं वक्र-तुण्डैक-दंष्ट्राय क्लीं ह्रीं श्रीं गं गणपतये वर-वरद सर्व-जनं मे वशमानय स्वाहा पं

३८. फं वक्र-तुण्डैक-दंष्ट्राय क्लीं ह्रीं श्रीं गं गणपतये वर-वरद सर्व-जनं मे वशमानय स्वाहा फं

३९. बं वक्र-तुण्डैक-दंष्ट्राय क्लीं ह्रीं श्रीं गं गणपतये वर-वरद सर्व-जनं मे वशमानय स्वाहा बं

४०. भं वक्र-तुण्डैक-दंष्ट्राय क्लीं ह्रीं श्रीं गं गणपतये वर-वरद सर्व-जनं मे वशमानय स्वाहा भं

४१. मं वक्र-तुण्डैक-दंष्ट्राय क्लीं ह्रीं श्रीं गं गणपतये वर-वरद सर्व-जनं मे वशमानय स्वाहा मं

४२. यं वक्र-तुण्डैक-दंष्ट्राय क्लीं ह्रीं श्रीं गं गणपतये वर-वरद सर्व-जनं मे वशमानय स्वाहा यं

४३. रं वक्र-तुण्डैक-दंष्ट्राय क्लीं ह्रीं श्रीं गं गणपतये वर-वरद सर्व-जनं मे वशमानय स्वाहा रं

४४. लं वक्र-तुण्डैक-दंष्ट्राय क्लीं ह्रीं श्रीं गं गणपतये वर-वरद सर्व-जनं मे वशमानय स्वाहा लं

४५. वं वक्र-तुण्डैक-दंष्ट्राय क्लीं ह्रीं श्रीं गं गणपतये वर-वरद सर्व-जनं मे वशमानय स्वाहा वं

४६. शं वक्र-तुण्डैक-दंष्ट्राय क्लीं ह्रीं श्रीं गं गणपतये वर-वरद सर्व-जनं मे वशमानय स्वाहा शं

४७. षं वक्र-तुण्डैक-दंष्ट्राय क्लीं ह्रीं श्रीं गं गणपतये वर-वरद सर्व-जनं मे वशमानय स्वाहा षं

४८. सं वक्र-तुण्डैक-दंष्ट्राय क्लीं ह्रीं श्रीं गं गणपतये वर-वरद सर्व-जनं मे वशमानय स्वाहा सं

४९. हं वक्र-तुण्डैक-दंष्ट्राय क्लीं ह्रीं श्रीं गं गणपतये वर-वरद सर्व-जनं मे वशमानय स्वाहा हं

५०. ळं वक्र-तुण्डैक-दंष्ट्राय क्लीं ह्रीं श्रीं गं गणपतये वर-वरद सर्व-जनं मे वशमानय स्वाहा ळं

५१. ळं वक्र-तुण्डैक-दंष्ट्राय क्लीं ह्रीं श्रीं गं गणपतये वर-वरद सर्व-जनं मे वशमानय स्वाहा ळं

५२. हं वक्र-तुण्डैक-दंष्ट्राय क्लीं ह्रीं श्रीं गं गणपतये वर-वरद सर्व-जनं मे वशमानय स्वाहा हं

५३. सं वक्र-तुण्डैक-दंष्ट्राय क्लीं ह्रीं श्रीं गं गणपतये वर-वरद सर्व-जनं मे वशमानय स्वाहा सं

५४. षं वक्र-तुण्डैक-दंष्ट्राय क्लीं ह्रीं श्रीं गं गणपतये वर-वरद सर्व-जनं मे वशमानय स्वाहा षं

५५. शं वक्र-तुण्डैक-दंष्ट्राय क्लीं ह्रीं श्रीं गं गणपतये वर-वरद सर्व-जनं मे वशमानय स्वाहा शं

५६. वं वक्र-तुण्डैक-दंष्ट्राय क्लीं ह्रीं श्रीं गं गणपतये वर-वरद सर्व-जनं मे वशमानय स्वाहा वं

५७. लं वक्र-तुण्डैक-दंष्ट्राय क्लीं ह्रीं श्रीं गं गणपतये वर-वरद सर्व-जनं मे वशमानय स्वाहा लं

५८. रं वक्र-तुण्डैक-दंष्ट्राय क्लीं ह्रीं श्रीं गं गणपतये वर-वरद सर्व-जनं मे वशमानय स्वाहा रं

५९. यं वक्र-तुण्डैक-दंष्ट्राय क्लीं ह्रीं श्रीं गं गणपतये वर-वरद सर्व-जनं मे वशमानय स्वाहा यं

६०. मं वक्र-तुण्डैक-दंष्ट्राय क्लीं ह्रीं श्रीं गं गणपतये वर-वरद सर्व-जनं मे वशमानय स्वाहा मं

६१. भं वक्र-तुण्डैक-दंष्ट्राय क्लीं ह्रीं श्रीं गं गणपतये वर-वरद सर्व-जनं मे वशमानय स्वाहा भं

६२. बं वक्र-तुण्डैक-दंष्ट्राय क्लीं ह्रीं श्रीं गं गणपतये वर-वरद सर्व-जनं मे वशमानय स्वाहा बं

६३. फं वक्र-तुण्डैक-दंष्ट्राय क्लीं ह्रीं श्रीं गं गणपतये वर-वरद सर्व-जनं मे वशमानय स्वाहा फं

६४. पं वक्र-तुण्डैक-दंष्ट्राय क्लीं ह्रीं श्रीं गं गणपतये वर-वरद सर्व-जनं मे वशमानय स्वाहा पं

६५. नं वक्र-तुण्डैक-दंष्ट्राय क्लीं ह्रीं श्रीं गं गणपतये वर-वरद सर्व-जनं मे वशमानय स्वाहा नं

६६. धं वक्र-तुण्डैक-दंष्ट्राय क्लीं ह्रीं श्रीं गं गणपतये वर-वरद सर्व-जनं मे वशमानय स्वाहा धं

६७. दं वक्र-तुण्डैक-दंष्ट्राय क्लीं ह्रीं श्रीं गं गणपतये वर-वरद सर्व-जनं मे वशमानय स्वाहा दं

६८. थं वक्र-तुण्डैक-दंष्ट्राय क्लीं ह्रीं श्रीं गं गणपतये वर-वरद सर्व-जनं मे वशमानय स्वाहा थं

६९. तं वक्र-तुण्डैक-दंष्ट्राय क्लीं ह्रीं श्रीं गं गणपतये वर-वरद सर्व-जनं मे वशमानय स्वाहा तं

७०. णं वक्र-तुण्डैक-दंष्ट्राय क्लीं ह्रीं श्रीं गं गणपतये वर-वरद सर्व-जनं मे वशमानय स्वाहा णं

७१. ढं वक्र-तुण्डैक-दंष्ट्राय क्लीं ह्रीं श्रीं गं गणपतये वर-वरद सर्व-जनं मे वशमानय स्वाहा ढं

७२. डं वक्र-तुण्डैक-दंष्ट्राय क्लीं ह्रीं श्रीं गं गणपतये वर-वरद सर्व-जनं मे वशमानय स्वाहा डं

७३. ठं वक्र-तुण्डैक-दंष्ट्राय क्लीं ह्रीं श्रीं गं गणपतये वर-वरद सर्व-जनं मे वशमानय स्वाहा ठं

७४. टं वक्र-तुण्डैक-दंष्ट्राय क्लीं ह्रीं श्रीं गं गणपतये वर-वरद सर्व-जनं मे वशमानय स्वाहा टं

७५. ञं वक्र-तुण्डैक-दंष्ट्राय क्लीं ह्रीं श्रीं गं गणपतये वर-वरद सर्व-जनं मे वशमानय स्वाहा ञं

७६. झं वक्र-तुण्डैक-दंष्ट्राय क्लीं ह्रीं श्रीं गं गणपतये वर-वरद सर्व-जनं मे वशमानय स्वाहा झं

७७. जं वक्र-तुण्डैक-दंष्ट्राय क्लीं ह्रीं श्रीं गं गणपतये वर-वरद सर्व-जनं मे वशमानय स्वाहा जं

७८. छं वक्र-तुण्डैक-दंष्ट्राय क्लीं ह्रीं श्रीं गं गणपतये वर-वरद सर्व-जनं मे वशमानय स्वाहा छं

७९. चं वक्रं-तुण्डैक-दंष्ट्राय क्लीं ह्रीं श्रीं गं गणपतये वर-वरद सर्व-जनं मे वशमानय स्वाहा चं

८०. ङं वक्र-तुण्डैक-दंष्ट्राय क्लीं ह्रीं श्रीं गं गणपतये वर-वरद सर्व-जनं मे वशमानय स्वाहा ङं

८१. घं वक्र-तुण्डैक-दंष्ट्राय क्लीं ह्रीं श्रीं गं गणपतये वर-वरद सर्व-जनं मे वशमानय स्वाहा घं

८२. गं वक्र-तुण्डैक-दंष्ट्राय क्लीं ह्रीं श्रीं गं गणपतये वर-वरद सर्व-जनं मे वशमानय स्वाहा गं

८३. खं वक्र-तुण्डैक-दंष्ट्राय क्लीं ह्रीं श्रीं गं गणपतये वर-वरद सर्व-जनं मे वशमानय स्वाहा खं

८४. कं वक्र-तुण्डैक-दंष्ट्राय क्लीं ह्रीं श्रीं गं गणपतये वर-वरद सर्व-जनं मे वशमानय स्वाहा कं

८५. अः वक्र-तुण्डैक-दंष्ट्राय क्लीं ह्रीं श्रीं गं गणपतये वर-वरद सर्व-जनं मे वशमानय स्वाहा अः

८६. अं वक्र-तुण्डैक-दंष्ट्राय क्लीं ह्रीं श्रीं गं गणपतये वर-वरद सर्व-जनं मे वशमानय स्वाहा अं

८७. औं वक्र-तुण्डैक-दंष्ट्राय क्लीं ह्रीं श्रीं गं गणपतये वर-वरद सर्व-जनं मे वशमानय स्वाहा औं

८८. ओं वक्र-तुण्डैक-दंष्ट्राय क्लीं ह्रीं श्रीं गं गणपतये वर-वरद सर्व-जनं मे वशमानय स्वाहा ओं

८९. ऐं वक्र-तुण्डैक-दंष्ट्राय क्लीं ह्रीं श्रीं गं गणपतये वर-वरद सर्व-जनं मे वशमानय स्वाहा ऐं

९०. एं वक्र-तुण्डैक-दंष्ट्राय क्लीं ह्रीं श्रीं गं गणपतये वर-वरद सर्व-जनं मे वशमानय स्वाहा एं

९१. लृं वक्र-तुण्डैक-दंष्ट्राय क्लीं ह्रीं श्रीं गं गणपतये वर-वरद सर्व-जनं मे वशमानय स्वाहा लृं

९२. ऌं वक्र-तुण्डैक-दंष्ट्राय क्लीं ह्रीं श्रीं गं गणपतये वर-वरद सर्व-जनं मे वशमानय स्वाहा ऌं

९३. ॠं वक्र-तुण्डैक-दंष्ट्राय क्लीं ह्रीं श्रीं गं गणपतये वर-वरद सर्व-जनं मे वशमानय स्वाहा ॠं

९४. ऋं वक्र-तुण्डैक-दंष्ट्राय क्लीं ह्रीं श्रीं गं गणपतये वर-वरद सर्व-जनं मे वशमानय स्वाहा ऋं

९५. ऊं वक्र-तुण्डैक-दंष्ट्राय क्लीं ह्रीं श्रीं गं गणपतये वर-वरद सर्व-जनं मे वशमानय स्वाहा ऊं

९६. उं वक्र-तुण्डैक-दंष्ट्राय क्लीं ह्रीं श्रीं गं गणपतये वर-वरद सर्व-जनं मे वशमानय स्वाहा उं

९७. ईं वक्र-तुण्डैक-दंष्ट्राय क्लीं ह्रीं श्रीं गं गणपतये वर-वरद सर्व-जनं मे वशमानय स्वाहा ईं

९८. इं वक्र-तुण्डैक-दंष्ट्राय क्लीं ह्रीं श्रीं गं गणपतये वर-वरद सर्व-जनं मे वशमानय स्वाहा इं

९९. आं वक्र-तुण्डैक-दंष्ट्राय क्लीं ह्रीं श्रीं गं गणपतये वर-वरद सर्व-जनं मे वशमानय स्वाहा आं

१००. अं वक्र-तुण्डैक-दंष्ट्राय क्लीं ह्रीं श्रीं गं गणपतये वर-वरद सर्व-जनं मे वशमानय स्वाहा अं

१०१. अं वक्र-तुण्डैक-दंष्ट्राय क्लीं ह्रीं श्रीं गं गणपतये वर-वरद सर्व-जनं मे वशमानय स्वाहा अं

१०२. कं वक्र-तुण्डैक-दंष्ट्राय क्लीं ह्रीं श्रीं गं गणपतये वर-वरद सर्व-जनं मे वशमानय स्वाहा कं

१०३. चं वक्र-तुण्डैक-दंष्ट्राय क्लीं ह्रीं श्रीं गं गणपतये वर-वरद सर्व-जनं मे वशमानय स्वाहा चं

१०४. टं वक्र-तुण्डैक-दंष्ट्राय क्लीं ह्रीं श्रीं गं गणपतये वर-वरद सर्व-जनं मे वशमानय स्वाहा टं

१०५. तं वक्र-तुण्डैक-दंष्ट्राय क्लीं ह्रीं श्रीं गं गणपतये वर-वरद सर्व-जनं मे वशमानय स्वाहा तं

१०६. पं वक्र-तुण्डैक-दंष्ट्राय क्लीं ह्रीं श्रीं गं गणपतये वर-वरद सर्व-जनं मे वशमानय स्वाहा पं

१०७. यं वक्र-तुण्डैक-दंष्ट्राय क्लीं ह्रीं श्रीं गं गणपतये वर-वरद सर्व-जनं मे वशमानय स्वाहा यं

१०८. शं वक्र-तुण्डैक-दंष्ट्राय क्लीं ह्रीं श्रीं गं गणपतये वर-वरद सर्व-जनं मे वशमानय स्वाहा शं

होम– यथा-शक्ति 'जप' करने के बाद अष्ट-द्रव्यों (१. गन्ना, २. सत्तू, ३. केला, ४. चिपिट (चिउड़ा, चपटा किया हुआ चावल या अनाज), ५. तिल, ६. लड्डू, ७. नारियल, ८. धान की खील–लावा) से हवन करना चाहिए।

श्रीसिद्धि-विनायक-त्रयः-पञ्चाशदक्षर-मन्त्र-साधना

प्रस्तुत मन्त्र '**मन्त्र-महार्णव**' में प्राकृत ग्रन्थ से उद्धृत है। इसके **विनियोग, ऋष्यादि-न्यास** का विवरण प्राप्त नहीं है। अतएव **श्रीसिद्धि-विनायक** की **मानस पूजा** कर प्रति-दिन निम्न-लिखित मन्त्र का **१०८ बार जप** करना चाहिए। इसके **जप** से **सभी प्रकार के कार्यों में सफलता** प्राप्त होती है। यात्रा आदि के समय जप करने से **मार्ग-भय दूर होकर सभी मनोरथ सिद्ध** होते हैं।

मानस-पूजा– **लं पृथिव्यात्मकं गन्धं श्रीसिद्धि-विनायकाय समर्पयामि नमः। हं आकाशात्मकं पुष्पं श्रीसिद्धि-विनायकाय समर्पयामि नमः। यं वाय्वात्मकं धूपं श्रीसिद्धि-विनायकाय घ्रापयामि नमः। रं वह्न्यात्मकं दीपं श्रीसिद्धि-विनायकाय दर्शयामि नमः। वं अमृतात्मकं नैवेद्यं श्रीसिद्धि-विनायकाय निवेदयामि नमः। सं सर्वात्मकं ताम्बूलं श्रीसिद्धि-विनायकाय समर्पयामि नमः।**

मन्त्र– **ॐ नमो सिद्धि-विनायकाय सर्व-कार्य-कर्त्रे सर्व-विघ्न-प्रशमनाय सर्व-राज्य-वश्य-करणाय सर्व-जन-स्त्री-पुरुषाकर्षणाय श्रीं ॐ स्वाहा** (३५ अक्षर)।

मन्त्रार्थ-चिन्तन–

ॐ = मुक्ति या मोक्ष को देनेवाले। **नमो सिद्धि-विनायकाय सर्व-कार्य-कर्त्रे सर्व-विघ्न-प्रशमनाय सर्व-राज्य-वश्य-करणाय सर्व-जन-स्त्री-पुरुषाकर्षणाय** = सभी स्त्री-पुरुष को सम्मोहित करने के लिए, सभी अधिकार सम्पन्न महानुभावों को अनुकूल बनाने के लिए, सभी प्रकार के विघ्नों की शान्ति हेतु तथा सभी कार्यों की सिद्धि के लिए सिद्धि-विनायक को नमस्कार है। **श्रीं ॐ स्वाहा** = उनकी (सिद्धि-विनायक की) श्रेयत्व-मय एवं मुक्ति-प्रद शक्ति से हमारी आत्मा का एकीकरण हो।

जप– '**वर्ण-माला**' का ध्यान कर उक्त मन्त्र का '**जप**' निम्न प्रकार करें। यथा–

अन्तर्विद्रुम-भासमान-भुजगां, सुप्तोत्थ-वर्णोज्ज्वलाम् ।
आरोहामवरोहिकां शत-मयीं, वर्गाष्टकाष्टोत्तरीम्।।
साक्षात् ब्रह्म-मयीं 'क्ष' मेरु-सहितां, श्रीमातृकाक्षावलीम् ।
विद्यां नौमि समस्त-मन्त्र-जननीं, ज्ञानैक-दीपांकुराम् ।।

१. **अं ॐ नमो सिद्धि-विनायकाय सर्व-कार्य-कर्त्रे सर्व-विघ्न-प्रशमनाय सर्व-राज्य-वश्य-करणाय सर्व-जन-स्त्री-पुरुषाकर्षणाय श्रीं ॐ स्वाहा अं**
२. **आं ॐ नमो सिद्धि-विनायकाय सर्व-कार्य-कर्त्रे सर्व-विघ्न-प्रशमनाय सर्व-राज्य-वश्य-करणाय सर्व-जन-स्त्री-पुरुषाकर्षणाय श्रीं ॐ स्वाहा आं**
३. **इं ॐ नमो सिद्धि-विनायकाय सर्व-कार्य-कर्त्रे सर्व-विघ्न-प्रशमनाय सर्व-राज्य-वश्य-करणाय सर्व-जन-स्त्री-पुरुषाकर्षणाय श्रीं ॐ स्वाहा इं**

४. ईं ॐ नमो सिद्धि-विनायकाय सर्व-कार्य-कर्त्रे सर्व-विघ्न-प्रशमनाय सर्व-राज्य-वश्य-करणाय सर्व-जन-स्त्री-पुरुषाकर्षणाय श्रीं ॐ स्वाहा ईं

५. उं ॐ नमो सिद्धि-विनायकाय सर्व-कार्य-कर्त्रे सर्व-विघ्न-प्रशमनाय सर्व-राज्य-वश्य-करणाय सर्व-जन-स्त्री-पुरुषाकर्षणाय श्रीं ॐ स्वाहा उं

६. ऊं ॐ नमो सिद्धि-विनायकाय सर्व-कार्य-कर्त्रे सर्व-विघ्न-प्रशमनाय सर्व-राज्य-वश्य-करणाय सर्व-जन-स्त्री-पुरुषाकर्षणाय श्रीं ॐ स्वाहा ऊं

७. ऋं ॐ नमो सिद्धि-विनायकाय सर्व-कार्य-कर्त्रे सर्व-विघ्न-प्रशमनाय सर्व-राज्य-वश्य-करणाय सर्व-जन-स्त्री-पुरुषाकर्षणाय श्रीं ॐ स्वाहा ऋं

८. ॠं ॐ नमो सिद्धि-विनायकाय सर्व-कार्य-कर्त्रे सर्व-विघ्न-प्रशमनाय सर्व-राज्य-वश्य-करणाय सर्व-जन-स्त्री-पुरुषाकर्षणाय श्रीं ॐ स्वाहा ॠं

९. ऌं ॐ नमो सिद्धि-विनायकाय सर्व-कार्य-कर्त्रे सर्व-विघ्न-प्रशमनाय सर्व-राज्य-वश्य-करणाय सर्व-जन-स्त्री-पुरुषाकर्षणाय श्रीं ॐ स्वाहा ऌं

१०. ॡं ॐ नमो सिद्धि-विनायकाय सर्व-कार्य-कर्त्रे सर्व-विघ्न-प्रशमनाय सर्व-राज्य-वश्य-करणाय सर्व-जन-स्त्री-पुरुषाकर्षणाय श्रीं ॐ स्वाहा ॡं

११. एं ॐ नमो सिद्धि-विनायकाय सर्व-कार्य-कर्त्रे सर्व-विघ्न-प्रशमनाय सर्व-राज्य-वश्य-करणाय सर्व-जन-स्त्री-पुरुषाकर्षणाय श्रीं ॐ स्वाहा एं

१२. ऐं ॐ नमो सिद्धि-विनायकाय सर्व-कार्य-कर्त्रे सर्व-विघ्न-प्रशमनाय सर्व-राज्य-वश्य-करणाय सर्व-जन-स्त्री-पुरुषाकर्षणाय श्रीं ॐ स्वाहा ऐं

१३. ओं ॐ नमो सिद्धि-विनायकाय सर्व-कार्य-कर्त्रे सर्व-विघ्न-प्रशमनाय सर्व-राज्य-वश्य-करणाय सर्व-जन-स्त्री-पुरुषाकर्षणाय श्रीं ॐ स्वाहा ओं

१४. औं ॐ नमो सिद्धि-विनायकाय सर्व-कार्य-कर्त्रे सर्व-विघ्न-प्रशमनाय सर्व-राज्य-वश्य-करणाय सर्व-जन-स्त्री-पुरुषाकर्षणाय श्रीं ॐ स्वाहा औं

१५. अं ॐ नमो सिद्धि-विनायकाय सर्व-कार्य-कर्त्रे सर्व-विघ्न-प्रशमनाय सर्व-राज्य-वश्य-करणाय सर्व-जन-स्त्री-पुरुषाकर्षणाय श्रीं ॐ स्वाहा अं

१६. अः ॐ नमो सिद्धि-विनायकाय सर्व-कार्य-कर्त्रे सर्व-विघ्न-प्रशमनाय सर्व-राज्य-वश्य-करणाय सर्व-जन-स्त्री-पुरुषाकर्षणाय श्रीं ॐ स्वाहा अः

१७. कं ॐ नमो सिद्धि-विनायकाय सर्व-कार्य-कर्त्रे सर्व-विघ्न-प्रशमनाय सर्व-राज्य-वश्य-करणाय सर्व-जन-स्त्री-पुरुषाकर्षणाय श्रीं ॐ स्वाहा कं

१८. खं ॐ नमो सिद्धि-विनायकाय सर्व-कार्य-कर्त्रे सर्व-विघ्न-प्रशमनाय सर्व-राज्य-वश्य-करणाय सर्व-जन-स्त्री-पुरुषाकर्षणाय श्रीं ॐ स्वाहा खं

१९. गं ॐ नमो सिद्धि-विनायकाय सर्व-कार्य-कर्त्रे सर्व-विघ्न-प्रशमनाय सर्व-राज्य-वश्य-करणाय सर्व-जन-स्त्री-पुरुषाकर्षणाय श्रीं ॐ स्वाहा गं

२०. घं ॐ नमो सिद्धि-विनायकाय सर्व-कार्य-कर्त्रे सर्व-विघ्न-प्रशमनाय सर्व-राज्य-वश्य-करणाय सर्व-जन-स्त्री-पुरुषाकर्षणाय श्रीं ॐ स्वाहा घं

२१. ङं ॐ नमो सिद्धि-विनायकाय सर्व-कार्य-कर्त्रे सर्व-विघ्न-प्रशमनाय सर्व-राज्य-वश्य-करणाय सर्व-जन-स्त्री-पुरुषाकर्षणाय श्रीं ॐ स्वाहा ङं

२२. चं ॐ नमो सिद्धि-विनायकाय सर्व-कार्य-कर्त्रे सर्व-विघ्न-प्रशमनाय सर्व-राज्य-वश्य-करणाय सर्व-जन-स्त्री-पुरुषाकर्षणाय श्रीं ॐ स्वाहा चं

२३. छं ॐ नमो सिद्धि-विनायकाय सर्व-कार्य-कर्त्रे सर्व-विघ्न-प्रशमनाय सर्व-राज्य-वश्य-करणाय सर्व-जन-स्त्री-पुरुषाकर्षणाय श्रीं ॐ स्वाहा छं

२४. जं ॐ नमो सिद्धि-विनायकाय सर्व-कार्य-कर्त्रे सर्व-विघ्न-प्रशमनाय सर्व-राज्य-वश्य-करणाय सर्व-जन-स्त्री-पुरुषाकर्षणाय श्रीं ॐ स्वाहा जं

२५. झं ॐ नमो सिद्धि-विनायकाय सर्व-कार्य-कर्त्रे सर्व-विघ्न-प्रशमनाय सर्व-राज्य-वश्य-करणाय सर्व-जन-स्त्री-पुरुषाकर्षणाय श्रीं ॐ स्वाहा झं

२६. ञं ॐ नमो सिद्धि-विनायकाय सर्व-कार्य-कर्त्रे सर्व-विघ्न-प्रशमनाय सर्व-राज्य-वश्य-करणाय सर्व-जन-स्त्री-पुरुषाकर्षणाय श्रीं ॐ स्वाहा ञं

२७. टं ॐ नमो सिद्धि-विनायकाय सर्व-कार्य-कर्त्रे सर्व-विघ्न-प्रशमनाय सर्व-राज्य-वश्य-करणाय सर्व-जन-स्त्री-पुरुषाकर्षणाय श्रीं ॐ स्वाहा टं

२८. ठं ॐ नमो सिद्धि-विनायकाय सर्व-कार्य-कर्त्रे सर्व-विघ्न-प्रशमनाय सर्व-राज्य-वश्य-करणाय सर्व-जन-स्त्री-पुरुषाकर्षणाय श्रीं ॐ स्वाहा ठं

२९. डं ॐ नमो सिद्धि-विनायकाय सर्व-कार्य-कर्त्रे सर्व-विघ्न-प्रशमनाय सर्व-राज्य-वश्य-करणाय सर्व-जन-स्त्री-पुरुषाकर्षणाय श्रीं ॐ स्वाहा डं

३०. ढं ॐ नमो सिद्धि-विनायकाय सर्व-कार्य-कर्त्रे सर्व-विघ्न-प्रशमनाय सर्व-राज्य-वश्य-करणाय सर्व-जन-स्त्री-पुरुषाकर्षणाय श्रीं ॐ स्वाहा ढं

३१. णं ॐ नमो सिद्धि-विनायकाय सर्व-कार्य-कर्त्रे सर्व-विघ्न-प्रशमनाय सर्व-राज्य-वश्य-करणाय सर्व-जन-स्त्री-पुरुषाकर्षणाय श्रीं ॐ स्वाहा णं

३२. तं ॐ नमो सिद्धि-विनायकाय सर्व-कार्य-कर्त्रे सर्व-विघ्न-प्रशमनाय सर्व-राज्य-वश्य-करणाय सर्व-जन-स्त्री-पुरुषाकर्षणाय श्रीं ॐ स्वाहा तं

३३. थं ॐ नमो सिद्धि-विनायकाय सर्व-कार्य-कर्त्रे सर्व-विघ्न-प्रशमनाय सर्व-राज्य-वश्य-करणाय सर्व-जन-स्त्री-पुरुषाकर्षणाय श्रीं ॐ स्वाहा थं

३४. दं ॐ नमो सिद्धि-विनायकाय सर्व-कार्य-कर्त्रे सर्व-विघ्न-प्रशमनाय सर्व-राज्य-वश्य-करणाय सर्व-जन-स्त्री-पुरुषाकर्षणाय श्रीं ॐ स्वाहा दं

३५. धं ॐ नमो सिद्धि-विनायकाय सर्व-कार्य-कर्त्रे सर्व-विघ्न-प्रशमनाय सर्व-राज्य-वश्य-करणाय सर्व-जन-स्त्री-पुरुषाकर्षणाय श्रीं ॐ स्वाहा धं

३६. नं ॐ नमो सिद्धि-विनायकाय सर्व-कार्य-कर्त्रे सर्व-विघ्न-प्रशमनाय सर्व-राज्य-वश्य-करणाय सर्व-जन-स्त्री-पुरुषाकर्षणाय श्रीं ॐ स्वाहा नं

३७. पं ॐ नमो सिद्धि-विनायकाय सर्व-कार्य-कर्त्रे सर्व-विघ्न-प्रशमनाय सर्व-राज्य-वश्य-करणाय सर्व-जन-स्त्री-पुरुषाकर्षणाय श्रीं ॐ स्वाहा पं

३८. फं ॐ नमो सिद्धि-विनायकाय सर्व-कार्य-कर्त्रे सर्व-विघ्न-प्रशमनाय सर्व-राज्य-वश्य-करणाय सर्व-जन-स्त्री-पुरुषाकर्षणाय श्रीं ॐ स्वाहा फं

३९. बं ॐ नमो सिद्धि-विनायकाय सर्व-कार्य-कर्त्रे सर्व-विघ्न-प्रशमनाय सर्व-राज्य-वश्य-करणाय सर्व-जन-स्त्री-पुरुषाकर्षणाय श्रीं ॐ स्वाहा बं

४०. भं ॐ नमो सिद्धि-विनायकाय सर्व-कार्य-कर्त्रे सर्व-विघ्न-प्रशमनाय सर्व-राज्य-वश्य-करणाय सर्व-जन-स्त्री-पुरुषाकर्षणाय श्रीं ॐ स्वाहा भं

४१. मं ॐ नमो सिद्धि-विनायकाय सर्व-कार्य-कर्त्रे सर्व-विघ्न-प्रशमनाय सर्व-राज्य-वश्य-करणाय सर्व-जन-स्त्री-पुरुषाकर्षणाय श्रीं ॐ स्वाहा मं

४२. यं ॐ नमो सिद्धि-विनायकाय सर्व-कार्य-कर्त्रे सर्व-विघ्न-प्रशमनाय सर्व-राज्य-वश्य-करणाय सर्व-जन-स्त्री-पुरुषाकर्षणाय श्रीं ॐ स्वाहा यं

४३. रं ॐ नमो सिद्धि-विनायकाय सर्व-कार्य-कर्त्रे सर्व-विघ्न-प्रशमनाय सर्व-राज्य-वश्य-करणाय सर्व-जन-स्त्री-पुरुषाकर्षणाय श्रीं ॐ स्वाहा रं

४४. लं ॐ नमो सिद्धि-विनायकाय सर्व-कार्य-कर्त्रे सर्व-विघ्न-प्रशमनाय सर्व-राज्य-वश्य-करणाय सर्व-जन-स्त्री-पुरुषाकर्षणाय श्रीं ॐ स्वाहा लं

४५. वं ॐ नमो सिद्धि-विनायकाय सर्व-कार्य-कर्त्रे सर्व-विघ्न-प्रशमनाय सर्व-राज्य-वश्य-करणाय सर्व-जन-स्त्री-पुरुषाकर्षणाय श्रीं ॐ स्वाहा वं

४६. शं ॐ नमो सिद्धि-विनायकाय सर्व-कार्य-कर्त्रे सर्व-विघ्न-प्रशमनाय सर्व-राज्य-वश्य-करणाय सर्व-जन-स्त्री-पुरुषाकर्षणाय श्रीं ॐ स्वाहा शं

४७. षं ॐ नमो सिद्धि-विनायकाय सर्व-कार्य-कर्त्रे सर्व-विघ्न-प्रशमनाय सर्व-राज्य-वश्य-करणाय सर्व-जन-स्त्री-पुरुषाकर्षणाय श्रीं ॐ स्वाहा षं

४८. सं ॐ नमो सिद्धि-विनायकाय सर्व-कार्य-कर्त्रे सर्व-विघ्न-प्रशमनाय सर्व-राज्य-वश्य-करणाय सर्व-जन-स्त्री-पुरुषाकर्षणाय श्रीं ॐ स्वाहा सं

४९. हं ॐ नमो सिद्धि-विनायकाय सर्व-कार्य-कर्त्रे सर्व-विघ्न-प्रशमनाय सर्व-राज्य-वश्य-करणाय सर्व-जन-स्त्री-पुरुषाकर्षणाय श्रीं ॐ स्वाहा हं

५०. ळं ॐ नमो सिद्धि-विनायकाय सर्व-कार्य-कर्त्रे सर्व-विघ्न-प्रशमनाय सर्व-राज्य-वश्य-करणाय सर्व-जन-स्त्री-पुरुषाकर्षणाय श्रीं ॐ स्वाहा ळं

५१. ळं ॐ नमो सिद्धि-विनायकाय सर्व-कार्य-कर्त्रे सर्व-विघ्न-प्रशमनाय सर्व-राज्य-वश्य-करणाय सर्व-जन-स्त्री-पुरुषाकर्षणाय श्रीं ॐ स्वाहा ळं

५२. हं ॐ नमो सिद्धि-विनायकाय सर्व-कार्य-कर्त्रे सर्व-विघ्न-प्रशमनाय सर्व-राज्य-वश्य-करणाय सर्व-जन-स्त्री-पुरुषाकर्षणाय श्रीं ॐ स्वाहा हं

५३. सं ॐ नमो सिद्धि-विनायकाय सर्व-कार्य-कर्त्रे सर्व-विघ्न-प्रशमनाय सर्व-राज्य-वश्य-करणाय सर्व-जन-स्त्री-पुरुषाकर्षणाय श्रीं ॐ स्वाहा सं

५४. षं ॐ नमो सिद्धि-विनायकाय सर्व-कार्य-कर्त्रे सर्व-विघ्न-प्रशमनाय सर्व-राज्य-वश्य-करणाय सर्व-जन-स्त्री-पुरुषाकर्षणाय श्रीं ॐ स्वाहा षं

५५. शं ॐ नमो सिद्धि-विनायकाय सर्व-कार्य-कर्त्रे सर्व-विघ्न-प्रशमनाय सर्व-राज्य-वश्य-करणाय सर्व-जन-स्त्री-पुरुषाकर्षणाय श्रीं ॐ स्वाहा शं

५६. वं ॐ नमो सिद्धि-विनायकाय सर्व-कार्य-कर्त्रे सर्व-विघ्न-प्रशमनाय सर्व-राज्य-वश्य-करणाय सर्व-जन-स्त्री-पुरुषाकर्षणाय श्रीं ॐ स्वाहा वं

५७. लं ॐ नमो सिद्धि-विनायकाय सर्व-कार्य-कर्त्रे सर्व-विघ्न-प्रशमनाय सर्व-राज्य-वश्य-करणाय सर्व-जन-स्त्री-पुरुषाकर्षणाय श्रीं ॐ स्वाहा लं

५८. रं ॐ नमो सिद्धि-विनायकाय सर्व-कार्य-कर्त्रे सर्व-विघ्न-प्रशमनाय सर्व-राज्य-वश्य-करणाय सर्व-जन-स्त्री-पुरुषाकर्षणाय श्रीं ॐ स्वाहा रं

५९. यं ॐ नमो सिद्धि-विनायकाय सर्व-कार्य-कर्त्रे सर्व-विघ्न-प्रशमनाय सर्व-राज्य-वश्य-करणाय सर्व-जन-स्त्री-पुरुषाकर्षणाय श्रीं ॐ स्वाहा यं

६०. मं ॐ नमो सिद्धि-विनायकाय सर्व-कार्य-कर्त्रे सर्व-विघ्न-प्रशमनाय सर्व-राज्य-वश्य-करणाय सर्व-जन-स्त्री-पुरुषाकर्षणाय श्रीं ॐ स्वाहा मं

६१. भं ॐ नमो सिद्धि-विनायकाय सर्व-कार्य-कर्त्रे सर्व-विघ्न-प्रशमनाय सर्व-राज्य-वश्य-करणाय सर्व-जन-स्त्री-पुरुषाकर्षणाय श्रीं ॐ स्वाहा भं

६२. बं ॐ नमो सिद्धि-विनायकाय सर्व-कार्य-कर्त्रे सर्व-विघ्न-प्रशमनाय सर्व-राज्य-वश्य-करणाय सर्व-जन-स्त्री-पुरुषाकर्षणाय श्रीं ॐ स्वाहा बं

६३. फं ॐ नमो सिद्धि-विनायकाय सर्व-कार्य-कर्त्रे सर्व-विघ्न-प्रशमनाय सर्व-राज्य-वश्य-करणाय सर्व-जन-स्त्री-पुरुषाकर्षणाय श्रीं ॐ स्वाहा फं

६४. पं ॐ नमो सिद्धि-विनायकाय सर्व-कार्य-कर्त्रे सर्व-विघ्न-प्रशमनाय सर्व-राज्य-वश्य-करणाय सर्व-जन-स्त्री-पुरुषाकर्षणाय श्रीं ॐ स्वाहा पं

६५. नं ॐ नमो सिद्धि-विनायकाय सर्व-कार्य-कर्त्रे सर्व-विघ्न-प्रशमनाय सर्व-राज्य-वश्य-करणाय सर्व-जन-स्त्री-पुरुषाकर्षणाय श्रीं ॐ स्वाहा नं

६६. धं ॐ नमो सिद्धि-विनायकाय सर्व-कार्य-कर्त्रे सर्व-विघ्न-प्रशमनाय सर्व-राज्य-वश्य-करणाय सर्व-जन-स्त्री-पुरुषाकर्षणाय श्रीं ॐ स्वाहा धं

६७. दं ॐ नमो सिद्धि-विनायकाय सर्व-कार्य-कर्त्रे सर्व-विघ्न-प्रशमनाय सर्व-राज्य-वश्य-करणाय सर्व-जन-स्त्री-पुरुषाकर्षणाय श्रीं ॐ स्वाहा दं

६८. थं ॐ नमो सिद्धि-विनायकाय सर्व-कार्य-कर्त्रे सर्व-विघ्न-प्रशमनाय सर्व-राज्य-वश्य-करणाय सर्व-जन-स्त्री-पुरुषाकर्षणाय श्रीं ॐ स्वाहा थं

६९. तं ॐ नमो सिद्धि-विनायकाय सर्व-कार्य-कर्त्रे सर्व-विघ्न-प्रशमनाय सर्व-राज्य-वश्य-करणाय सर्व-जन-स्त्री-पुरुषाकर्षणाय श्रीं ॐ स्वाहा तं

७०. णं ॐ नमो सिद्धि-विनायकाय सर्व-कार्य-कर्त्रे सर्व-विघ्न-प्रशमनाय सर्व-राज्य-वश्य-करणाय सर्व-जन-स्त्री-पुरुषाकर्षणाय श्रीं ॐ स्वाहा णं

७१. ढं ॐ नमो सिद्धि-विनायकाय सर्व-कार्य-कर्त्रे सर्व-विघ्न-प्रशमनाय सर्व-राज्य-वश्य-करणाय सर्व-जन-स्त्री-पुरुषाकर्षणाय श्रीं ॐ स्वाहा ढं

७२. डं ॐ नमो सिद्धि-विनायकाय सर्व-कार्य-कर्त्रे सर्व-विघ्न-प्रशमनाय सर्व-राज्य-वश्य-करणाय सर्व-जन-स्त्री-पुरुषाकर्षणाय श्रीं ॐ स्वाहा डं

७३. ठं ॐ नमो सिद्धि-विनायकाय सर्व-कार्य-कर्त्रे सर्व-विघ्न-प्रशमनाय सर्व-राज्य-वश्य-करणाय सर्व-जन-स्त्री-पुरुषाकर्षणाय श्रीं ॐ स्वाहा ठं

७४. टं ॐ नमो सिद्धि-विनायकाय सर्व-कार्य-कर्त्रे सर्व-विघ्न-प्रशमनाय सर्व-राज्य-वश्य-करणाय सर्व-जन-स्त्री-पुरुषाकर्षणाय श्रीं ॐ स्वाहा टं

७५. ञं ॐ नमो सिद्धि-विनायकाय सर्व-कार्य-कर्त्रे सर्व-विघ्न-प्रशमनाय सर्व-राज्य-वश्य-करणाय सर्व-जन-स्त्री-पुरुषाकर्षणाय श्रीं ॐ स्वाहा ञं

७६. झं ॐ नमो सिद्धि-विनायकाय सर्व-कार्य-कर्त्रे सर्व-विघ्न-प्रशमनाय सर्व-राज्य-वश्य-करणाय सर्व-जन-स्त्री-पुरुषाकर्षणाय श्रीं ॐ स्वाहा झं

७७. जं ॐ नमो सिद्धि-विनायकाय सर्व-कार्य-कर्त्रे सर्व-विघ्न-प्रशमनाय सर्व-राज्य-वश्य-करणाय सर्व-जन-स्त्री-पुरुषाकर्षणाय श्रीं ॐ स्वाहा जं

७८. छं ॐ नमो सिद्धि-विनायकाय सर्व-कार्य-कर्त्रे सर्व-विघ्न-प्रशमनाय सर्व-राज्य-वश्य-करणाय सर्व-जन-स्त्री-पुरुषाकर्षणाय श्रीं ॐ स्वाहा छं

७९. चं ॐ नमो सिद्धि-विनायकाय सर्व-कार्य-कर्त्रे सर्व-विघ्न-प्रशमनाय सर्व-राज्य-वश्य-करणाय सर्व-जन-स्त्री-पुरुषाकर्षणाय श्रीं ॐ स्वाहा चं

८०. ङं ॐ नमो सिद्धि-विनायकाय सर्व-कार्य-कर्त्रे सर्व-विघ्न-प्रशमनाय सर्व-राज्य-वश्य-करणाय सर्व-जन-स्त्री-पुरुषाकर्षणाय श्रीं ॐ स्वाहा ङं

८१. घं ॐ नमो सिद्धि-विनायकाय सर्व-कार्य-कर्त्रे सर्व-विघ्न-प्रशमनाय सर्व-राज्य-वश्य-करणाय सर्व-जन-स्त्री-पुरुषाकर्षणाय श्रीं ॐ स्वाहा घं

८२. गं ॐ नमो सिद्धि-विनायकाय सर्व-कार्य-कर्त्रे सर्व-विघ्न-प्रशमनाय सर्व-राज्य-वश्य-करणाय सर्व-जन-स्त्री-पुरुषाकर्षणाय श्रीं ॐ स्वाहा गं

८३. खं ॐ नमो सिद्धि-विनायकाय सर्व-कार्य-कर्त्रे सर्व-विघ्न-प्रशमनाय सर्व-राज्य-वश्य-करणाय सर्व-जन-स्त्री-पुरुषाकर्षणाय श्रीं ॐ स्वाहा खं

८४. कं ॐ नमो सिद्धि-विनायकाय सर्व-कार्य-कर्त्रे सर्व-विघ्न-प्रशमनाय सर्व-राज्य-वश्य-करणाय सर्व-जन-स्त्री-पुरुषाकर्षणाय श्रीं ॐ स्वाहा कं

८५. अः ॐ नमो सिद्धि-विनायकाय सर्व-कार्य-कर्त्रे सर्व-विघ्न-प्रशमनाय सर्व-राज्य-वश्य-करणाय सर्व-जन-स्त्री-पुरुषाकर्षणाय श्रीं ॐ स्वाहा अः

८६. अं ॐ नमो सिद्धि-विनायकाय सर्व-कार्य-कर्त्रे सर्व-विघ्न-प्रशमनाय सर्व-राज्य-वश्य-करणाय सर्व-जन-स्त्री-पुरुषाकर्षणाय श्रीं ॐ स्वाहा अं

८७. औं ॐ नमो सिद्धि-विनायकाय सर्व-कार्य-कर्त्रे सर्व-विघ्न-प्रशमनाय सर्व-राज्य-वश्य-करणाय सर्व-जन-स्त्री-पुरुषाकर्षणाय श्रीं ॐ स्वाहा औं

८८. ओं ॐ नमो सिद्धि-विनायकाय सर्व-कार्य-कर्त्रे सर्व-विघ्न-प्रशमनाय सर्व-राज्य-वश्य-करणाय सर्व-जन-स्त्री-पुरुषाकर्षणाय श्रीं ॐ स्वाहा ओं

८९. ऐं ॐ नमो सिद्धि-विनायकाय सर्व-कार्य-कर्त्रे सर्व-विघ्न-प्रशमनाय सर्व-राज्य-वश्य-करणाय सर्व-जन-स्त्री-पुरुषाकर्षणाय श्रीं ॐ स्वाहा ऐं

९०. एं ॐ नमो सिद्धि-विनायकाय सर्व-कार्य-कर्त्रे सर्व-विघ्न-प्रशमनाय सर्व-राज्य-वश्य-करणाय सर्व-जन-स्त्री-पुरुषाकर्षणाय श्रीं ॐ स्वाहा एं

९१. लृं ॐ नमो सिद्धि-विनायकाय सर्व-कार्य-कर्त्रे सर्व-विघ्न-प्रशमनाय सर्व-राज्य-वश्य-करणाय सर्व-जन-स्त्री-पुरुषाकर्षणाय श्रीं ॐ स्वाहा लृं

९२. लॄं ॐ नमो सिद्धि-विनायकाय सर्व-कार्य-कर्त्रे सर्व-विघ्न-प्रशमनाय सर्व-राज्य-वश्य-करणाय सर्व-जन-स्त्री-पुरुषाकर्षणाय श्रीं ॐ स्वाहा लॄं

९३. ॠं ॐ नमो सिद्धि-विनायकाय सर्व-कार्य-कर्त्रे सर्व-विघ्न-प्रशमनाय सर्व-राज्य-वश्य-करणाय सर्व-जन-स्त्री-पुरुषाकर्षणाय श्रीं ॐ स्वाहा ॠं

९४. ऋं ॐ नमो सिद्धि-विनायकाय सर्व-कार्य-कर्त्रे सर्व-विघ्न-प्रशमनाय सर्व-राज्य-वश्य-करणाय सर्व-जन-स्त्री-पुरुषाकर्षणाय श्रीं ॐ स्वाहा ऋं

९५. ऊं ॐ नमो सिद्धि-विनायकाय सर्व-कार्य-कर्त्रे सर्व-विघ्न-प्रशमनाय सर्व-राज्य-वश्य-करणाय सर्व-जन-स्त्री-पुरुषाकर्षणाय श्रीं ॐ स्वाहा ऊं

९६. उं ॐ नमो सिद्धि-विनायकाय सर्व-कार्य-कर्त्रे सर्व-विघ्न-प्रशमनाय सर्व-राज्य-वश्य-करणाय सर्व-जन-स्त्री-पुरुषाकर्षणाय श्रीं ॐ स्वाहा उं

९७. ईं ॐ नमो सिद्धि-विनायकाय सर्व-कार्य-कर्त्रे सर्व-विघ्न-प्रशमनाय सर्व-राज्य-वश्य-करणाय सर्व-जन-स्त्री-पुरुषाकर्षणाय श्रीं ॐ स्वाहा ईं

९८. इं ॐ नमो सिद्धि-विनायकाय सर्व-कार्य-कर्त्रे सर्व-विघ्न-प्रशमनाय सर्व-राज्य-वश्य-करणाय सर्व-जन-स्त्री-पुरुषाकर्षणाय श्रीं ॐ स्वाहा इं

९९. आं ॐ नमो सिद्धि-विनायकाय सर्व-कार्य-कर्त्रे सर्व-विघ्न-प्रशमनाय सर्व-राज्य-वश्य-करणाय सर्व-जन-स्त्री-पुरुषाकर्षणाय श्रीं ॐ स्वाहा आं

१००. अं ॐ नमो सिद्धि-विनायकाय सर्व-कार्य-कर्त्रे सर्व-विघ्न-प्रशमनाय सर्व-राज्य-वश्य-करणाय सर्व-जन-स्त्री-पुरुषाकर्षणाय श्रीं ॐ स्वाहा अं

१०१. अं ॐ नमो सिद्धि-विनायकाय सर्व-कार्य-कर्त्रे सर्व-विघ्न-प्रशमनाय सर्व-राज्य-वश्य-करणाय सर्व-जन-स्त्री-पुरुषाकर्षणाय श्रीं ॐ स्वाहा अं

१०२. कं ॐ नमो सिद्धि-विनायकाय सर्व-कार्य-कर्त्रे सर्व-विघ्न-प्रशमनाय सर्व-राज्य-वश्य-करणाय सर्व-जन-स्त्री-पुरुषाकर्षणाय श्रीं ॐ स्वाहा कं

१०३. चं ॐ नमो सिद्धि-विनायकाय सर्व-कार्य-कर्त्रे सर्व-विघ्न-प्रशमनाय सर्व-राज्य-वश्य-करणाय सर्व-जन-स्त्री-पुरुषाकर्षणाय श्रीं ॐ स्वाहा चं

१०४. टं ॐ नमो सिद्धि-विनायकाय सर्व-कार्य-कर्त्रे सर्व-विघ्न-प्रशमनाय सर्व-राज्य-वश्य-करणाय सर्व-जन-स्त्री-पुरुषाकर्षणाय श्रीं ॐ स्वाहा टं

१०५. तं ॐ नमो सिद्धि-विनायकाय सर्व-कार्य-कर्त्रे सर्व-विघ्न-प्रशमनाय सर्व-राज्य-वश्य-करणाय सर्व-जन-स्त्री-पुरुषाकर्षणाय श्रीं ॐ स्वाहा तं

१०६. पं ॐ नमो सिद्धि-विनायकाय सर्व-कार्य-कर्त्रे सर्व-विघ्न-प्रशमनाय सर्व-राज्य-वश्य-करणाय सर्व-जन-स्त्री-पुरुषाकर्षणाय श्रीं ॐ स्वाहा पं

१०७. यं ॐ नमो सिद्धि-विनायकाय सर्व-कार्य-कर्त्रे सर्व-विघ्न-प्रशमनाय सर्व-राज्य-वश्य-करणाय सर्व-जन-स्त्री-पुरुषाकर्षणाय श्रीं ॐ स्वाहा यं

१०८. शं ॐ नमो सिद्धि-विनायकाय सर्व-कार्य-कर्त्रे सर्व-विघ्न-प्रशमनाय सर्व-राज्य-वश्य-करणाय सर्व-जन-स्त्री-पुरुषाकर्षणाय श्रीं ॐ स्वाहा शं

❖❖❖

श्रीवल्लभ-महा-गणपति-त्रि-शती-नामावली-साधना

प्रस्तुत श्रीवल्लभ-महा-गणपति-त्रिशती-नामावली में श्रीमहा-गणपति के तीन सौ नाम दिए गए हैं। इन नामों की सबसे बड़ी मुख्य विशेषता यह है कि इन नामों के 'जप' के द्वारा स्वाभाविक रूप से श्रीमहा-गणपति के मन्त्र-राज (ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये वर-वरद सर्व-जनं मे वशमानय स्वाहा) का भी जप होता है क्योंकि प्रस्तुत तीन सौ नामों के प्रारम्भिक अक्षर क्रम से मन्त्र-राज के एक-एक अक्षर के अनुसार हैं और नामावली का समापन 'मूल-मन्त्र गणपतये नमः' से होता है। इन नामों के द्वारा साधक-गण श्रीमहा-गणपति की चार प्रकार से साधना कर सकते हैं–१. जप, २. पूजन, ३. तर्पण एवं ४. होम। 'जप' के लिए सभी नामों के प्रारम्भ में 'ॐ' और अन्त में 'नमः' का प्रयोग किया जाता है, जिसे प्रस्तुत नामों के साथ यहाँ दिया जा रहा है। 'पूजन' के लिए नामों के अन्त में 'पूजयामि नमः', 'तर्पण' हेतु 'तर्पयामि नमः' लगाना चाहिए। पूजन एवं तर्पण दोनों एक साथ करने हेतु प्रत्येक नाम के अन्त में 'पूजयामि नमः तर्पयामि नमः' कहना चाहिए। 'होम' हेतु नामों के अन्त में 'स्वाहा' लगाना चाहिए। 'नामावली' के द्वारा 'जप-पूजन-तर्पण-हवन' करने हेतु सबसे पहले श्रीमहा-गणपति का ध्यान करना चाहिए। फिर 'मानस-पूजन' कर जप-पूजन-तर्पण-हवन आदि करना चाहिए। यथा–

ध्यान–

बीजापूर-गदेक्षु-कार्मुकरुजा चक्राब्ज-पाशोत्पल।
ब्रीह्यग्रस्व-विषाण-रत्न-कलश प्रोद्यत्करांभोरुहः।।
ध्येयो वल्लभया स-पद्म-करयाश्लिष्टोज्जलद्-भूषया।
विश्वोत्पत्ति विपत्ति संस्थिति करो-विघ्नो विशिष्टार्थदः।।
मूषिक-वाहन मोदक-हस्त, चामर-कर्ण विलम्बित-सूत्र।
वामन-रूप महेश्वर-पुत्र, विघ्न-विनायक पाद नमस्ते ।।

मानस-पूजा– लं पृथिव्यात्मकं गन्धं श्रीवल्लभ-महा-गणपतये समर्पयामि नमः। हं आकाशात्मकं पुष्पं श्रीवल्लभ-महा-गणपतये समर्पयामि नमः। यं वाय्वात्मकं धूपं श्रीवल्लभ-महा-गणपतये घ्रापयामि नमः। रं वह्न्यात्मकं दीपं श्रीवल्लभ-महा-गणपतये दर्शयामि नमः। वं अमृतात्मकं नैवेद्यं श्रीवल्लभ-महा-गणपतये निवेदयामि नमः। सं सर्वात्मकं ताम्बूलं श्रीवल्लभ-महा-गणपतये समर्पयामि नमः।

ॐ ॐ-कार-गणपतये नमः
ॐ ॐ-कार-प्रणव-रूपाय नमः
ॐ ॐ-कार-मूर्तये नमः
ॐ ॐ-काराय नमः
ॐ ॐ-कार-मन्त्राय नमः
ॐ ॐ-कार-बिन्दु-रूपाय नमः
ॐ ॐ-कार-रूपाय नमः
ॐ ॐ-कार-नादाय नमः
ॐ ॐ-कार-मयाय नमः
ॐ ॐ-कार-मूलाधार-वासाय नमः ।।१०।।

ॐ श्रीं-कार-गणपतये नमः
ॐ श्रीं-कार-वल्लभाय नमः
ॐ श्रीं-काराय नमः
ॐ श्रीं-लक्ष्म्यै नमः
ॐ श्रीं-महा-गणेशाय नमः
ॐ श्रीं-वल्लभाय नमः
ॐ श्रीं-गणेशाय नमः
ॐ श्रीं-वीर-गणेशाय नमः
ॐ श्रीं-वीर-लक्ष्म्यै नमः
ॐ श्रीं-धैर्य-गणेशाय नमः ।।२०।।
ॐ श्रीं-वीर-पुरेन्द्राय नमः
ॐ ह्रीं-कार-गणेशाय नमः
ॐ ह्रीं-कार-मयाय नमः
ॐ ह्रीं-कार-सिंहाय नमः
ॐ ह्रीं-कार-बालाय नमः
ॐ ह्रीं-कार-पीठाय नमः
ॐ ह्रीं-कार-रूपाय नमः
ॐ ह्रीं-कार-वर्णाय नमः
ॐ ह्रीं-कार-कलाय नमः
ॐ ह्रीं-कार-लयाय नमः ।।३०।।
ॐ ह्रीं-कार-वरदाय नमः
ॐ ह्रीं-कार-फल-दाय नमः
ॐ क्लीं-कार-गणेशाय नमः
ॐ क्लीं-कार-मन्मथाय नमः
ॐ क्लीं-काराय नमः
ॐ क्लीं-मूलाधाराय नमः
ॐ क्लीं-वासाय नमः
ॐ क्लीं-कार-मोहनाय नमः
ॐ क्लीं-कारोन्नत-रूपाय नमः
ॐ क्लीं-कार-वश्याय नमः ।।४०।।
ॐ क्लीं-कार-नाथाय नमः
ॐ क्लीं-कार-हेरम्बाय नमः
ॐ क्लीं-कार-रूपाय नमः
ॐ ग्लौं-गणपतये नमः
ॐ ग्लौं-कार-बीजाय नमः
ॐ ग्लौं-काराक्षराय नमः
ॐ ग्लौं-कार-बिन्दु-मध्यगाय नमः
ॐ ग्लौं-कार-वासाय नमः
ॐ गं-गणपतये नमः
ॐ गं-गण-नाथाय नमः ।।५०।।
ॐ गं-गणाधिपाय नमः
ॐ गं-गणाध्यक्षाय नमः
ॐ गं-गणाय नमः
ॐ गं-गगनाय नमः
ॐ गं-गङ्गाय नमः
ॐ गं-गमनाय नमः
ॐ गं-गान-विद्या-प्रदाय नमः
ॐ गं-घण्टा-नाद-प्रियाय नमः
ॐ गं-गकाराय नमः
ॐ गं-वाहाय नमः ।।६०।।
ॐ गणपतये नमः
ॐ गज-मुखाय नमः
ॐ गज-हस्ताय नमः
ॐ गज-रूपाय नमः
ॐ गजारूढाय नमः
ॐ गजाय नमः
ॐ गणेश्वराय नमः
ॐ गन्ध-हस्ताय नमः

ॐ गर्जिताय नमः
ॐ गताय नमः ।।७०।।
ॐ ण-कार-गणपतये नमः
ॐ ण-लाय नमः
ॐ ण-लिङ्गाय नमः
ॐ णल-प्रियाय नमः
ॐ णलेशाय नमः
ॐ णल-कोमलाय नमः
ॐ ण-करीशाय नमः
ॐ ण-करिकाय नमः
ॐ ण-ण-णङ्काय नमः
ॐ ण-णीशाय नमः ।।८०।।
ॐ ण-णीण-प्रियाय नमः
ॐ पर-ब्रह्माय नमः
ॐ पर-हन्त्रे नमः
ॐ पर-मूर्तये नमः
ॐ पराय नमः
ॐ परमात्मने नमः
ॐ परानन्दाय नमः
ॐ परमेष्ठिने नमः
ॐ परात्पराय नमः
ॐ पद्माक्षाय नमः ।।९०।।
ॐ पद्मालया-पतये नमः
ॐ पराक्रमिणे नमः
ॐ तत्त्व-गणपतये नमः
ॐ तत्त्व-गम्याय नमः
ॐ तर्क-वेत्रे नमः
ॐ तत्त्व-विदे नमः
ॐ तत्त्व-रहिताय नमः
ॐ तमो-हिताय नमः
ॐ तत्त्व-ज्ञानाय नमः
ॐ तरुणाय नमः ।।१००।।
ॐ तरुणि-भृङ्गाय नमः
ॐ तरणि-प्रभाय नमः
ॐ यज्ञ-गणपतये नमः
ॐ यज्ञकाय नमः
ॐ यशस्विने नमः
ॐ यज्ञ-कृते नमः
ॐ यज्ञाय नमः
ॐ यम-भीति-निवर्तकाय नमः
ॐ यम-हृतये नमः
ॐ यज्ञ-फल-प्रदाय नमः ।।११०।।
ॐ यमाधाराय नमः
ॐ यम-प्रदाय नमः
ॐ यथेष्ट-वर-प्रदाय नमः
ॐ वर-गणपतये नम;
ॐ वरदाय नमः
ॐ वसुधा-पतये नमः
ॐ वज्रोद्भव-भय-संहत्रे नमः
ॐ वल्लभा-रमणीशाय नमः
ॐ वक्ष-स्थल-मणि-भ्राजिने नमः
ॐ वज्र-धारिणे नमः ।।१२०।।
ॐ वश्याय नमः
ॐ वकार-रूपाय नमः
ॐ वशिने नमः
ॐ वर-प्रदाय नमः
ॐ रज-गणपतये नमः
ॐ रज-कराय नमः

ॐ रमा-नाथाय नमः
ॐ रत्नाभरण-भूषिताय नमः
ॐ रहस्यज्ञाय नमः
ॐ रसाधाराय नमः ।।१३०।।
ॐ रथस्थाय नमः
ॐ रथावासाय नमः
ॐ रञ्जित-प्रदाय नमः
ॐ रवि-कोटि-प्रकाशाय नमः
ॐ रम्याय नमः
ॐ वरद-वल्लभाय नमः
ॐ व-काराय नमः
ॐ वरुण-प्रियाय नमः
ॐ वज्र-धराय नमः
ॐ वरद-वरदाय नमः ।।१४०।।
ॐ वन्दिताय नमः
ॐ वश्य-कराय नमः
ॐ वदन-प्रियाय नमः
ॐ वसवे नमः
ॐ वसु-प्रियाय नमः
ॐ वरद-प्रियाय नमः
ॐ रवि-गणपतये नमः
ॐ रत्न-किरीटाय नमः
ॐ रत्न-मोहनाय नमः
ॐ रत्न-भूषणाय नमः ।।१५०।।
ॐ रत्नकाय नमः
ॐ रत्न-मन्त्रपाय नमः
ॐ रसा-चलाय नमः
ॐ रसातलाय नमः
ॐ रत्न-कङ्कणाय नमः
ॐ रवोधीशाय नमः
ॐ रवापानाय नमः
ॐ रत्नासनाय नमः
ॐ दकार-रूपाय नमः
ॐ दमनाय नमः ।।१६०।।
ॐ दण्ड-कारिणे नमः
ॐ दया-धनिकाय नमः
ॐ दैत्य-गमनाय नमः
ॐ दण्डनीत्यादि विज्ञात्रे नमः
ॐ दया-वहाय नमः
ॐ दक्ष-ध्वंसन-कराय नमः
ॐ दक्षाय नमः
ॐ दतकाय नम;
ॐ दमोजघ्नाय नमः
ॐ सर्व-वश्य-गणपतये नमः ।।१७०।।
ॐ सर्वात्मने नमः
ॐ सर्वज्ञाय नमः
ॐ सर्व-सौख्य-प्रदायिने नमः
ॐ सर्व-दुःखघ्ने नमः
ॐ सर्व-रोग-हृते नमः
ॐ सर्व-जन-प्रियाय नमः
ॐ सर्व-शास्त्र-कलापधराय नमः
ॐ सर्व-दुःख-विनाशाय नमः
ॐ सर्व-दुष्ट-प्रशमनाय नमः
ॐ जय-गणपतये नमः ।।१८०।।
ॐ जनार्दनाय नमः
ॐ जपाराध्याय नमः
ॐ जगन्-मान्याय नमः
ॐ जया-वहाय नमः

ॐ जन-पालाय नमः
ॐ जगत्-सृष्टये नमः
ॐ जप्याय नमः
ॐ जन-लोचनाय नमः
ॐ जगती-पालाय नमः
ॐ जयन्ताय नमः ।।१९०।।
ॐ नटन-गणपतये नमः
ॐ नद्याय नमः
ॐ नदीश-गम्भीराय नमः
ॐ नत-भू-देवाय नमः
ॐ नष्ट-द्रव्य-प्रदायकाय नमः
ॐ नयज्ञाय नमः
ॐ नमितारये नमः
ॐ नन्दाय नमः
ॐ नट-विद्या-विशारदाय नमः
ॐ नवत्यानां-संत्रात्रे नमः ।।२००।।
ॐ नवाम्बर-विधारणाय नमः
ॐ मेघ-डम्बर-गणपतये नमः
ॐ मेघ-वाहनाय नमः
ॐ मेरु-वासाय नम;
ॐ मेरु-निलयाय नमः
ॐ मेघ-वर्णाय नमः
ॐ मेघ-नादाय नमः
ॐ मेघ-डम्बराय नमः
ॐ मेघ-गर्जिताय नमः
ॐ मेघ-रूपाय नमः ।।२१०।।
ॐ मेघ-घोषाय नमः
ॐ मेघ-वाहनाय नमः
ॐ वश्य-गणपतये नमः
ॐ वज्रेश्वराय नमः
ॐ वर-प्रदाय नमः
ॐ वज्र-दन्ताय नमः
ॐ वश्य-प्रदाय नमः
ॐ वश्याय नमः
ॐ वशिने नमः
ॐ वटुकेशाय नमः ।।२२०।।
ॐ वराभयाय नमः
ॐ वसुमते नमः
ॐ वटवे नमः
ॐ शर-गणपतये नमः
ॐ शर्म-धाम्ने नमः
ॐ शरणाय नमः
ॐ शर्म-वद्वसु-घनाय नमः
ॐ शर-धराय नमः
ॐ शशि-धराय नमः
ॐ शत-क्रतु-वर-प्रदाय नमः ।।२३०।।
ॐ शतानन्दादि-सेव्याय नमः
ॐ शमित-देवाय नमः
ॐ शराय नमः
ॐ शशि-नाथाय नमः
ॐ महा-भय-विनाशनाय नमः
ॐ महेश्वर-प्रियाय नमः
ॐ मत्त-दण्ड-कराय नमः
ॐ महा-कीर्तये नमः
ॐ महा-भुजाय नमः
ॐ महोन्नतये नमः ।।२४०।।
ॐ महोत्साहाय नमः
ॐ महा-मायाय नमः

ॐ महा-मदाय नमः
ॐ महा-कोपाय नम;
ॐ नाग-गणपतये नमः
ॐ नागाधीशाय नमः
ॐ नायकाय नमः
ॐ नाशितारातये नमः
ॐ नाम-स्मरण-पापघ्ने नमः
ॐ नाथाय नमः ।।२५०।।
ॐ नाभि-पदार्थ-पद्म-भुवे नमः
ॐ नाग-राज-वल्लभ-प्रियाय नमः
ॐ नाट्य-विद्या-विशारदाय नम;
ॐ नाट्य-प्रियाय नमः
ॐ नाट्य-नाथाय नमः
ॐ यवन-गणपतये नमः
ॐ यम-वीषूदनाय नमः
ॐ यम-वीजिताय नमः
ॐ यज्वने नमः
ॐ यज्ञ-पतये नमः ।।२६०।।
ॐ यज्ञनाशनाय नमः
ॐ यज्ञप्रियाय नमः
ॐ यज्ञ-वाहाय नमः
ॐ यज्ञाङ्गाय नमः
ॐ यज्ञ-सखाय नमः
ॐ यज्ञ-प्रियाय नमः
ॐ यज्ञ-रूपाय नमः
ॐ यज्ञ-वन्द्याय नमः
ॐ यति-रक्षकाय नमः
ॐ यति-पूजिताय नमः ।।२७०।।
ॐ स्वामि-गणपतये नमः
ॐ स्वर्ण-वरदाय नमः
ॐ स्वर्ण-कर्षणाय नमः
ॐ स्वाश्रयाय नमः
ॐ स्वस्ति-कृते नमः
ॐ स्वस्तिकाय नमः
ॐ स्वर्ण-कक्षाय नमः
ॐ स्वर्ण-ताटङ्क-भूषणाय नमः
ॐ स्वाहा-सभा-जिताय नमः
ॐ स्वर-शास्त्र-स्वरूप-कृते नमः ।।२८०।।
ॐ हादि-विद्याय नमः
ॐ हादि-रूपाय नमः
ॐ हरि-हर-प्रियाय नमः
ॐ हरण्यादि-पतये नमः
ॐ हाहा-हूहू-गणपतये नमः
ॐ हरि-गणपतये नमः
ॐ हाटक-प्रियाय नमः
ॐ हत-गजाधिपाय नमः
ॐ हयाश्रयाय नमः
ॐ हंस-प्रियाय नमः ।।२९०।।
ॐ हंसाय नमः
ॐ हंस-पूजिताय नमः
ॐ हनुमत-सेविताय नमः
ॐ हकार-रूपाय नमः
ॐ हरि-स्तुताय नमः
ॐ हराङ्क-वास्तव्याय नमः
ॐ हरि-नील-प्रभाय नमः
ॐ हरिद्रा-बिम्ब-पूजिताय नमः
ॐ हरिघ्य-मुख-देवता सर्वेष्ट-सिद्धिताय नमः
ॐ मूल-मन्त्र-गणपतये नमः।।३००।।

श्रीमहा-गणपति-तर्पण-विधान

'शारदा-तिलक तन्त्र' तेरहवें पटल में **महा-गणपति** के '**तर्पण**' हेतु तीन क्रम दिए गए हैं। यथा– १. '**कनिष्ठ-क्रम**', जिसमें **१०८ बार** '**तर्पण**' होता है। २. '**मध्य-क्रम**' जिसमें **२१६ बार** '**तर्पण**' होता है और ३. '**ज्येष्ठ-क्रम**', जिसमें **४४४ बार** '**तर्पण**' होता है। यहाँ '**ज्येष्ठ-क्रम**' के अनुसार '**तर्पण का विधान**' दिया जा रहा है। आशा है कि साधक-बन्धु इससे लाभ उठाएँगे।

प्रस्तुत विधि के अनुसार **नित्य** '**तर्पण**' करने से सभी मनोरथ पूर्ण होते हैं। **अनावृष्टि, भय, उपद्रव, महा-ज्वर, विवाद, महा-दारिद्र्य** आदि घोर सङ्कटों में विशेष सफलता प्राप्त होती है। **विवाह** आदि **शुभ कार्यों की बाधाएँ** दूर होती हैं। **प्रचुर सम्पत्ति** की प्राप्ति होती है। **महा-गणपति की कृपा** की प्राप्ति होकर जीवन सभी प्रकार से सफल होता है।

–सम्पादक

सबसे पहले साधक **ब्राह्म मुहूर्त** में उठकर **शिरस्थ श्वेत-कमल** पर सुख-पूर्वक बैठे हुए **गौर-वर्ण, द्वि-नेत्र, शान्त मुखवाले** अपने **गुरु-देव** का ध्यान करें, जो '**वर**' और '**अभय मुद्रा**' हाथों में धारण किए हैं। फिर **मनसोपचारों** से उनकी **पूजा** कर उन्हें **प्रणाम** करें और आवश्यक नित्य कर्म कर **स्नान** करें।

स्नान हेतु **अंकुश-मुद्रा** द्वारा भावना से **सूर्य-मण्डल** से तीर्थों को लाकर जल में संयुक्त करें। फिर बाँएँ हाथ में जल लेकर उससे नीचे गिरते हुए जल-विन्दुओं से सात बार **मूल-मन्त्र** (महा-गणपति के मन्त्र-राज–**ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये वर-वरद सर्व-जनं मे वशमानय स्वाहा**) **का जप** करते हुए '**प्रोक्षण**' करें अर्थात् अपने सिर पर कुछ जल छिड़कें और बचे हुए जल को दाँएँ हाथ में लेकर उक्त **मूल-मन्त्र** से अभिमन्त्रित कर, खड़े होकर '**सूर्य**' की ओर **श्रीगणपति-गायत्री-मन्त्र** (**ॐ तत्पुरुषाय विद्महे वक्र-तुण्डाय धीमहि तन्नो दन्ती प्रचोदयात्**) से **तीन बार अर्घ्याञ्जलि** प्रदान करें।

इसके बाद अपने **पूजा-स्थान** में अपने आसन पर स्थित होकर अपनी '**आत्मा**' को '**महा-गण-पति**'-स्वरूप में ध्यान करें और उसे '**हृदय**'-**कमल** अथवा '**सहस्रार**' में भावना के द्वारा चाँदी की सीढ़ियों से पहुँचाएँ और वहाँ स्थित **विशाल कमल** के मध्य में बैठाएँ। फिर मानसिक रूप से गन्ध-पुष्पों से उनका **पूजन** करें। **पूजन** के बाद नीचे लिखी विधि से '**तर्पण**' करें। पहले '**आचमन**' करें। यथा– **ॐ गं आत्म-तत्त्वाय स्वाहा। ॐ गं विद्या-तत्त्वाय स्वाहा। ॐ गं शिव-तत्त्वाय स्वाहा। ॐ गं सर्व-तत्त्वाय स्वाहा।**

फिर दोनों हाथ में जल व पुष्पादि लेकर '**सङ्कल्प**' करें। यथा–

ॐ तत्सत्। अद्यैतस्य, ब्रह्मणोऽह्नि-द्वितीय-प्रहरार्द्धे, श्वेत-वराह-कल्पे, जम्बू-द्वीपे, भरत-खण्डे, आर्यावर्त्त-देशे, अमुक-पुण्य-क्षेत्रे, कलि-युगे कलि-प्रथम-चरणे, अमुक-संवत्सरे,

अमुक-मासे, अमुक-पक्षे, अमुक-तिथौ, अमुक-वासरे, अमुक-गोत्रोत्पन्ने, अमुक-नाम-शर्मा/वर्मा/गुप्त/दास, श्रीमहा-गणपति-प्रसाद-सिद्धये सर्व-विघ्न-निवारणार्थं चतुरावृत्ति-तर्पणं करिष्ये।

उक्त प्रकार 'सङ्कल्प' कर जल-पुष्पादि को अपने आसन के सम्मुख छोड़ें। इसके बाद 'विनियोग' करें। यथा– ॐ अस्य श्रीमहा-गणपति महा-मन्त्रस्य श्री गणक ऋषिः, निचृद्-गायत्री छन्दः, श्रीमहा-गणपति देवता, श्रीमहा-गणपति तर्पणे विनियोगः।

फिर 'ऋष्यादि' व 'षडङ्ग'-न्यास करें। यथा–

श्रीगणक-ऋषये नमः शिरसि। निचृद्-गायत्री-छन्दसे नमः मुखे। श्रीमहा-गणपतये देवतायै नमः हृदये। श्रीमहा-गणपति-तर्पणे विनियोगाय नमः अञ्जलौ।

मूल-मन्त्र	कर-न्यास	षडङ्ग-न्यास
श्रीं ह्रीं क्लीं ॐ गां	अंगुष्ठाभ्यां नमः	हृदयाय नमः
श्रीं ह्रीं क्लीं श्रीं गीं	तर्जनीभ्यां नमः	शिरसे स्वाहा
श्रीं ह्रीं क्लीं ह्रीं गूं	मध्यमाभ्यां नमः	शिखायै वषट्
श्रीं ह्रीं क्लीं क्लीं गैं	अनामिकाभ्यां नमः	कवचाय हुम्
श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गौं	कनिष्ठिकाभ्यां नमः	नेत्र-त्रयाय वौषट
श्रीं ह्रीं क्लीं गं गः	करतल-कर-पृष्ठाभ्यां नमः	अस्त्राय फट्

तब 'ध्यान' करें। यथा–

ध्याये हृदब्जे शोणाङ्गं, वामोत्सङ्ग-विभूषया। सिद्ध-लक्ष्म्या समाश्लिष्ट-पार्श्वमर्धेन्दु-शेखरम्।।
वामाधः करतो दक्षाधः-करान्तेषु पुष्करे। परिष्कृतं मातुलुङ्ग, गदा पुण्ड्रेक्षुकार्मुकैः।।
शूलेन शङ्ख-चक्राभ्यां, पाशोत्पल-युगेन च । शालि-मञ्जरिका-स्वीय-दन्ताञ्जल-मणी-घटैः।।
स्त्रवन्मदं च सानन्दं, श्री श्रीपत्यादि-संवृतम् ।। अशेष-विघ्न-विध्वंसनिघ्नं विग्धेश्वरं भजे।।

फिर 'मानस-पूजा' करें। यथा–

श्रीं ह्रीं क्लीं महा-गणपतये लं पृथ्विव्यात्मकं गन्धं कल्पयामि नमः। (३ बार)
श्रीं ह्रीं क्लीं महा-गणपतये हं आकाशात्मकं पुष्पं कल्पयामि नमः। (३ बार)
श्रीं ह्रीं क्लीं महा-गणपतये यं वाय्वात्मकं धूपं कल्पयामि नमः। (३ बार)
श्रीं ह्रीं क्लीं महा-गणपतये रं वह्न्यात्मकं दीपं कल्पयामि नमः। (३ बार)
श्रीं ह्रीं क्लीं महा-गणपतये वं अमृतात्मकं नैवेद्यं कल्पयामि नमः। (३ बार)
श्रीं ह्रीं क्लीं महा-गणपतये सं सर्वात्मकं ताम्बूलं कल्पयामि नमः। (३ बार)

'मानस-पूजन' के बाद ४४४ बार नीचे लिखी विधि के अनुसार 'तर्पण' करें। यथा–

श्रीं ह्रीं क्लीं **मूलं**। महा-गणपतिं तर्पयामि।
श्रीं ह्रीं क्लीं **मूलं**। महा-गणपतिं तर्पयामि।
श्रीं ह्रीं क्लीं **मूलं**। महा-गणपतिं तर्पयामि।
श्रीं ह्रीं क्लीं **मूलं**। महा-गणपतिं तर्पयामि।
श्रीं ह्रीं क्लीं **मूलं**। महा-गणपतिं तर्पयामि।
श्रीं ह्रीं क्लीं **मूलं**। महा-गणपतिं तर्पयामि।
श्रीं ह्रीं क्लीं **मूलं**। महा-गणपतिं तर्पयामि।
श्रीं ह्रीं क्लीं **मूलं**। महा-गणपतिं तर्पयामि।
श्रीं ह्रीं क्लीं **मूलं**। महा-गणपतिं तर्पयामि।
श्रीं ह्रीं क्लीं **मूलं**। महा-गणपतिं तर्पयामि।
श्रीं ह्रीं क्लीं **मूलं**। महा-गणपतिं तर्पयामि। (१-१२)
श्रीं ह्रीं क्लीं **ॐ** स्वाहा। महा-गणपतिं तर्पयामि।
श्रीं ह्रीं क्लीं **ॐ** स्वाहा। महा-गणपतिं तर्पयामि।
श्रीं ह्रीं क्लीं **ॐ** स्वाहा। महा-गणपतिं तर्पयामि।
श्रीं ह्रीं क्लीं **ॐ** स्वाहा। महा-गणपतिं तर्पयामि।
श्रीं ह्रीं क्लीं **मूलं**। महा-गणपतिं तर्पयामि।
श्रीं ह्रीं क्लीं **मूलं**। महा-गणपतिं तर्पयामि।
श्रीं ह्रीं क्लीं **मूलं**। महा-गणपतिं तर्पयामि।
श्रीं ह्रीं क्लीं **मूलं**। महा-गणपतिं तर्पयामि। (१३-२०)
श्रीं ह्रीं क्लीं **श्रीं** स्वाहा। महा-गणपतिं तर्पयामि।
श्रीं ह्रीं क्लीं **श्रीं** स्वाहा। महा-गणपतिं तर्पयामि।

श्रीं ह्रीं क्लीं **श्रीं** स्वाहा। महा-गणपतिं तर्पयामि।
श्रीं ह्रीं क्लीं **श्रीं** स्वाहा। महा-गणपतिं तर्पयामि।
श्रीं ह्रीं क्लीं **मूलं**। महा-गणपतिं तर्पयामि।
श्रीं ह्रीं क्लीं **मूलं**। महा-गणपतिं तर्पयामि।
श्रीं ह्रीं क्लीं **मूलं**। महा-गणपतिं तर्पयामि।
श्रीं ह्रीं क्लीं **मूलं**। महा-गणपतिं तर्पयामि। (२१-२८)
श्रीं ह्रीं क्लीं **ह्रीं** स्वाहा। महा-गणपतिं तर्पयामि।
श्रीं ह्रीं क्लीं **ह्रीं** स्वाहा। महा-गणपतिं तर्पयामि।
श्रीं ह्रीं क्लीं **ह्रीं** स्वाहा। महा-गणपतिं तर्पयामि।
श्रीं ह्रीं क्लीं **ह्रीं** स्वाहा। महा-गणपतिं तर्पयामि।
श्रीं ह्रीं क्लीं **मूलं**। महा-गणपतिं तर्पयामि।
श्रीं ह्रीं क्लीं **मूलं**। महा-गणपतिं तर्पयामि।
श्रीं ह्रीं क्लीं **मूलं**। महा-गणपतिं तर्पयामि।
श्रीं ह्रीं क्लीं **मूलं**। महा-गणपतिं तर्पयामि। (२९-३६)
श्रीं ह्रीं क्लीं **क्लीं** स्वाहा। महा-गणपतिं तर्पयामि।
श्रीं ह्रीं क्लीं **क्लीं** स्वाहा। महा-गणपतिं तर्पयामि।
श्रीं ह्रीं क्लीं **क्लीं** स्वाहा। महा-गणपतिं तर्पयामि।
श्रीं ह्रीं क्लीं **क्लीं** स्वाहा। महा-गणपतिं तर्पयामि।
श्रीं ह्रीं क्लीं **मूलं**। महा-गणपतिं तर्पयामि।
श्रीं ह्रीं क्लीं **मूलं**। महा-गणपतिं तर्पयामि।
श्रीं ह्रीं क्लीं **मूलं**। महा-गणपतिं तर्पयामि।
श्रीं ह्रीं क्लीं **मूलं**। महा-गणपतिं तर्पयामि। (३७-४४)

श्रीं ह्रीं क्लीं **ग्लौं** स्वाहा। महा-गणपतिं तर्पयामि।
श्रीं ह्रीं क्लीं **ग्लौं** स्वाहा। महा-गणपतिं तर्पयामि।
श्रीं ह्रीं क्लीं **ग्लौं** स्वाहा। महा-गणपतिं तर्पयामि।
श्रीं ह्रीं क्लीं **ग्लौं** स्वाहा। महा-गणपतिं तर्पयामि।
श्रीं ह्रीं क्लीं **मूलं**। महा-गणपतिं तर्पयामि।
श्रीं ह्रीं क्लीं **मूलं**। महा-गणपतिं तर्पयामि।
श्रीं ह्रीं क्लीं **मूलं**। महा-गणपतिं तर्पयामि।
श्रीं ह्रीं क्लीं **मूलं**। महा-गणपतिं तर्पयामि। (४५-५२)
श्रीं ह्रीं क्लीं **गं** स्वाहा। महा-गणपतिं तर्पयामि।
श्रीं ह्रीं क्लीं **गं** स्वाहा। महा-गणपतिं तर्पयामि।
श्रीं ह्रीं क्लीं **गं** स्वाहा। महा-गणपतिं तर्पयामि।
श्रीं ह्रीं क्लीं **गं** स्वाहा। महा-गणपतिं तर्पयामि।
श्रीं ह्रीं क्लीं **मूलं**। महा-गणपतिं तर्पयामि।
श्रीं ह्रीं क्लीं **मूलं**। महा-गणपतिं तर्पयामि।
श्रीं ह्रीं क्लीं **मूलं**। महा-गणपतिं तर्पयामि।
श्रीं ह्रीं क्लीं **मूलं**। महा-गणपतिं तर्पयामि। (५३-६०)
श्रीं ह्रीं क्लीं **गं** स्वाहा। महा-गणपतिं तर्पयामि।
श्रीं ह्रीं क्लीं **गं** स्वाहा। महा-गणपतिं तर्पयामि।
श्रीं ह्रीं क्लीं **गं** स्वाहा। महा-गणपतिं तर्पयामि।
श्रीं ह्रीं क्लीं **गं** स्वाहा। महा-गणपतिं तर्पयामि।
श्रीं ह्रीं क्लीं **मूलं**। महा-गणपतिं तर्पयामि।
श्रीं ह्रीं क्लीं **मूलं**। महा-गणपतिं तर्पयामि।

श्रीं ह्रीं क्लीं **मूलं**। महा-गणपतिं तर्पयामि।
श्रीं ह्रीं क्लीं **मूलं**। महा-गणपतिं तर्पयामि। (६१-६८)
श्रीं ह्रीं क्लीं **णं** स्वाहा। महा-गणपतिं तर्पयामि।
श्रीं ह्रीं क्लीं **णं** स्वाहा। महा-गणपतिं तर्पयामि।
श्रीं ह्रीं क्लीं **णं** स्वाहा। महा-गणपतिं तर्पयामि।
श्रीं ह्रीं क्लीं **णं** स्वाहा। महा-गणपतिं तर्पयामि।
श्रीं ह्रीं क्लीं **मूलं**। महा-गणपतिं तर्पयामि।
श्रीं ह्रीं क्लीं **मूलं**। महा-गणपतिं तर्पयामि।
श्रीं ह्रीं क्लीं **मूलं**। महा-गणपतिं तर्पयामि।
श्रीं ह्रीं क्लीं **मूलं**। महा-गणपतिं तर्पयामि। (६९-७६)
श्रीं ह्रीं क्लीं **पं** स्वाहा। महा-गणपतिं तर्पयामि।
श्रीं ह्रीं क्लीं **पं** स्वाहा। महा-गणपतिं तर्पयामि।
श्रीं ह्रीं क्लीं **पं** स्वाहा। महा-गणपतिं तर्पयामि।
श्रीं ह्रीं क्लीं **पं** स्वाहा। महा-गणपतिं तर्पयामि।
श्रीं ह्रीं क्लीं **मूलं**। महा-गणपतिं तर्पयामि।
श्रीं ह्रीं क्लीं **मूलं**। महा-गणपतिं तर्पयामि।
श्रीं ह्रीं क्लीं **मूलं**। महा-गणपतिं तर्पयामि।
श्रीं ह्रीं क्लीं **मूलं**। महा-गणपतिं तर्पयामि। (७७-८४)
श्रीं ह्रीं क्लीं **तं** स्वाहा। महा-गणपतिं तर्पयामि।
श्रीं ह्रीं क्लीं **तं** स्वाहा। महा-गणपतिं तर्पयामि।
श्रीं ह्रीं क्लीं **तं** स्वाहा। महा-गणपतिं तर्पयामि।
श्रीं ह्रीं क्लीं **तं** स्वाहा। महा-गणपतिं तर्पयामि।

श्रीं ह्रीं क्लीं **मूलं**। महा-गणपतिं तर्पयामि।
श्रीं ह्रीं क्लीं **मूलं**। महा-गणपतिं तर्पयामि।
श्रीं ह्रीं क्लीं **मूलं**। महा-गणपतिं तर्पयामि।
श्रीं ह्रीं क्लीं **मूलं**। महा-गणपतिं तर्पयामि। (८५-९२)
श्रीं ह्रीं क्लीं **यें** स्वाहा। महा-गणपतिं तर्पयामि।
श्रीं ह्रीं क्लीं **यें** स्वाहा। महा-गणपतिं तर्पयामि।
श्रीं ह्रीं क्लीं **यें** स्वाहा। महा-गणपतिं तर्पयामि।
श्रीं ह्रीं क्लीं **यें** स्वाहा। महा-गणपतिं तर्पयामि।
श्रीं ह्रीं क्लीं **मूलं**। महा-गणपतिं तर्पयामि।
श्रीं ह्रीं क्लीं **मूलं**। महा-गणपतिं तर्पयामि।
श्रीं ह्रीं क्लीं **मूलं**। महा-गणपतिं तर्पयामि।
श्रीं ह्रीं क्लीं **मूलं**। महा-गणपतिं तर्पयामि। (९३-१००)
श्रीं ह्रीं क्लीं **वं** स्वाहा। महा-गणपतिं तर्पयामि।
श्रीं ह्रीं क्लीं **वं** स्वाहा। महा-गणपतिं तर्पयामि।
श्रीं ह्रीं क्लीं **वं** स्वाहा। महा-गणपतिं तर्पयामि।
श्रीं ह्रीं क्लीं **वं** स्वाहा। महा-गणपतिं तर्पयामि।
श्रीं ह्रीं क्लीं **मूलं**। महा-गणपतिं तर्पयामि।
श्रीं ह्रीं क्लीं **मूलं**। महा-गणपतिं तर्पयामि।
श्रीं ह्रीं क्लीं **मूलं**। महा-गणपतिं तर्पयामि।
श्रीं ह्रीं क्लीं **मूलं**। महा-गणपतिं तर्पयामि। (१०१-१०८)
श्रीं ह्रीं क्लीं **रं** स्वाहा। महा-गणपतिं तर्पयामि।
श्रीं ह्रीं क्लीं **रं** स्वाहा। महा-गणपतिं तर्पयामि।

श्रीं ह्रीं क्लीं **रं** स्वाहा। महा-गणपतिं तर्पयामि।
श्रीं ह्रीं क्लीं **रं** स्वाहा। महा-गणपतिं तर्पयामि।
श्रीं ह्रीं क्लीं **मूलं**। महा-गणपतिं तर्पयामि।
श्रीं ह्रीं क्लीं **मूलं**। महा-गणपतिं तर्पयामि।
श्रीं ह्रीं क्लीं **मूलं**। महा-गणपतिं तर्पयामि।
श्रीं ह्रीं क्लीं **मूलं**। महा-गणपतिं तर्पयामि। (१०९-११६)
श्रीं ह्रीं क्लीं **वं** स्वाहा। महा-गणपतिं तर्पयामि।
श्रीं ह्रीं क्लीं **वं** स्वाहा। महा-गणपतिं तर्पयामि।
श्रीं ह्रीं क्लीं **वं** स्वाहा। महा-गणपतिं तर्पयामि।
श्रीं ह्रीं क्लीं **वं** स्वाहा। महा-गणपतिं तर्पयामि।
श्रीं ह्रीं क्लीं **मूलं**। महा-गणपतिं तर्पयामि।
श्रीं ह्रीं क्लीं **मूलं**। महा-गणपतिं तर्पयामि।
श्रीं ह्रीं क्लीं **मूलं**। महा-गणपतिं तर्पयामि।
श्रीं ह्रीं क्लीं **मूलं**। महा-गणपतिं तर्पयामि। (११७-१२४)
श्रीं ह्रीं क्लीं **रं** स्वाहा। महा-गणपतिं तर्पयामि।
श्रीं ह्रीं क्लीं **रं** स्वाहा। महा-गणपतिं तर्पयामि।
श्रीं ह्रीं क्लीं **रं** स्वाहा। महा-गणपतिं तर्पयामि।
श्रीं ह्रीं क्लीं **रं** स्वाहा। महा-गणपतिं तर्पयामि।
श्रीं ह्रीं क्लीं **मूलं**। महा-गणपतिं तर्पयामि।
श्रीं ह्रीं क्लीं **मूलं**। महा-गणपतिं तर्पयामि।
श्रीं ह्रीं क्लीं **मूलं**। महा-गणपतिं तर्पयामि।
श्रीं ह्रीं क्लीं **मूलं**। महा-गणपतिं तर्पयामि। (१२५-१३२)

श्रीं ह्रीं क्लीं **दं** स्वाहा। महा-गणपतिं तर्पयामि।
श्रीं ह्रीं क्लीं **दं** स्वाहा। महा-गणपतिं तर्पयामि।
श्रीं ह्रीं क्लीं **दं** स्वाहा। महा-गणपतिं तर्पयामि।
श्रीं ह्रीं क्लीं **दं** स्वाहा। महा-गणपतिं तर्पयामि।
श्रीं ह्रीं क्लीं **मूलं**। महा-गणपतिं तर्पयामि।
श्रीं ह्रीं क्लीं **मूलं**। महा-गणपतिं तर्पयामि।
श्रीं ह्रीं क्लीं **मूलं**। महा-गणपतिं तर्पयामि।
श्रीं ह्रीं क्लीं **मूलं**। महा-गणपतिं तर्पयामि। (१३३-१४०)
श्रीं ह्रीं क्लीं **सं** स्वाहा। महा-गणपतिं तर्पयामि।
श्रीं ह्रीं क्लीं **सं** स्वाहा। महा-गणपतिं तर्पयामि।
श्रीं ह्रीं क्लीं **सं** स्वाहा। महा-गणपतिं तर्पयामि।
श्रीं ह्रीं क्लीं **सं** स्वाहा। महा-गणपतिं तर्पयामि।
श्रीं ह्रीं क्लीं **मूलं**। महा-गणपतिं तर्पयामि।
श्रीं ह्रीं क्लीं **मूलं**। महा-गणपतिं तर्पयामि।
श्रीं ह्रीं क्लीं **मूलं**। महा-गणपतिं तर्पयामि।
श्रीं ह्रीं क्लीं **मूलं**। महा-गणपतिं तर्पयामि। (१४१-१४८)
श्रीं ह्रीं क्लीं **वं** स्वाहा। महा-गणपतिं तर्पयामि।
श्रीं ह्रीं क्लीं **वं** स्वाहा। महा-गणपतिं तर्पयामि।
श्रीं ह्रीं क्लीं **वं** स्वाहा। महा-गणपतिं तर्पयामि।
श्रीं ह्रीं क्लीं **वं** स्वाहा। महा-गणपतिं तर्पयामि।
श्रीं ह्रीं क्लीं **मूलं**। महा-गणपतिं तर्पयामि।
श्रीं ह्रीं क्लीं **मूलं**। महा-गणपतिं तर्पयामि।

श्रीं ह्रीं क्लीं **मूलं**। महा-गणपतिं तर्पयामि।
श्रीं ह्रीं क्लीं **मूलं**। महा-गणपतिं तर्पयामि। (१४९-१५६)
श्रीं ह्रीं क्लीं **जं** स्वाहा। महा-गणपतिं तर्पयामि।
श्रीं ह्रीं क्लीं **जं** स्वाहा। महा-गणपतिं तर्पयामि।
श्रीं ह्रीं क्लीं **जं** स्वाहा। महा-गणपतिं तर्पयामि।
श्रीं ह्रीं क्लीं **जं** स्वाहा। महा-गणपतिं तर्पयामि।
श्रीं ह्रीं क्लीं **मूलं**। महा-गणपतिं तर्पयामि।
श्रीं ह्रीं क्लीं **मूलं**। महा-गणपतिं तर्पयामि।
श्रीं ह्रीं क्लीं **मूलं**। महा-गणपतिं तर्पयामि। (१५७-१६४)
श्रीं ह्रीं क्लीं **नं** स्वाहा। महा-गणपतिं तर्पयामि।
श्रीं ह्रीं क्लीं **नं** स्वाहा। महा-गणपतिं तर्पयामि।
श्रीं ह्रीं क्लीं **नं** स्वाहा। महा-गणपतिं तर्पयामि।
श्रीं ह्रीं क्लीं **नं** स्वाहा। महा-गणपतिं तर्पयामि।
श्रीं ह्रीं क्लीं **मूलं**। महा-गणपतिं तर्पयामि।
श्रीं ह्रीं क्लीं **मूलं**। महा-गणपतिं तर्पयामि।
श्रीं ह्रीं क्लीं **मूलं**। महा-गणपतिं तर्पयामि।
श्रीं ह्रीं क्लीं **मूलं**। महा-गणपतिं तर्पयामि। (१६५-१७२)
श्रीं ह्रीं क्लीं **में** स्वाहा। महा-गणपतिं तर्पयामि।
श्रीं ह्रीं क्लीं **में** स्वाहा। महा-गणपतिं तर्पयामि।
श्रीं ह्रीं क्लीं **में** स्वाहा। महा-गणपतिं तर्पयामि।
श्रीं ह्रीं क्लीं **में** स्वाहा। महा-गणपतिं तर्पयामि।

श्रीं ह्रीं क्लीं **मूलं**। महा-गणपतिं तर्पयामि।
श्रीं ह्रीं क्लीं **मूलं**। महा-गणपतिं तर्पयामि।
श्रीं ह्रीं क्लीं **मूलं**। महा-गणपतिं तर्पयामि।
श्रीं ह्रीं क्लीं **मूलं**। महा-गणपतिं तर्पयामि। (१७३-१८०)
श्रीं ह्रीं क्लीं **वं** स्वाहा। महा-गणपतिं तर्पयामि।
श्रीं ह्रीं क्लीं **वं** स्वाहा। महा-गणपतिं तर्पयामि।
श्रीं ह्रीं क्लीं **वं** स्वाहा। महा-गणपतिं तर्पयामि।
श्रीं ह्रीं क्लीं **वं** स्वाहा। महा-गणपतिं तर्पयामि।
श्रीं ह्रीं क्लीं **मूलं**। महा-गणपतिं तर्पयामि।
श्रीं ह्रीं क्लीं **मूलं**। महा-गणपतिं तर्पयामि।
श्रीं ह्रीं क्लीं **मूलं**। महा-गणपतिं तर्पयामि।
श्रीं ह्रीं क्लीं **मूलं**। महा-गणपतिं तर्पयामि। (१८१-१८८)
श्रीं ह्रीं क्लीं **शं** स्वाहा। महा-गणपतिं तर्पयामि।
श्रीं ह्रीं क्लीं **शं** स्वाहा। महा-गणपतिं तर्पयामि।
श्रीं ह्रीं क्लीं **शं** स्वाहा। महा-गणपतिं तर्पयामि।
श्रीं ह्रीं क्लीं **शं** स्वाहा। महा-गणपतिं तर्पयामि।
श्रीं ह्रीं क्लीं **मूलं**। महा-गणपतिं तर्पयामि।
श्रीं ह्रीं क्लीं **मूलं**। महा-गणपतिं तर्पयामि।
श्रीं ह्रीं क्लीं **मूलं**। महा-गणपतिं तर्पयामि।
श्रीं ह्रीं क्लीं **मूलं**। महा-गणपतिं तर्पयामि। (१८९-१९६)
श्रीं ह्रीं क्लीं **मां** स्वाहा। महा-गणपतिं तर्पयामि।
श्रीं ह्रीं क्लीं **मां** स्वाहा। महा-गणपतिं तर्पयामि।

श्रीं ह्रीं क्लीं **मां** स्वाहा। महा-गणपतिं तर्पयामि।
श्रीं ह्रीं क्लीं **मां** स्वाहा। महा-गणपतिं तर्पयामि।
श्रीं ह्रीं क्लीं **मूलं**। महा-गणपतिं तर्पयामि।
श्रीं ह्रीं क्लीं **मूलं**। महा-गणपतिं तर्पयामि।
श्रीं ह्रीं क्लीं **मूलं**। महा-गणपतिं तर्पयामि।
श्रीं ह्रीं क्लीं **मूलं**। महा-गणपतिं तर्पयामि। (१९७-२०४)
श्रीं ह्रीं क्लीं **नं** स्वाहा। महा-गणपतिं तर्पयामि।
श्रीं ह्रीं क्लीं **नं** स्वाहा। महा-गणपतिं तर्पयामि।
श्रीं ह्रीं क्लीं **नं** स्वाहा। महा-गणपतिं तर्पयामि।
श्रीं ह्रीं क्लीं **नं** स्वाहा। महा-गणपतिं तर्पयामि।
श्रीं ह्रीं क्लीं **मूलं**। महा-गणपतिं तर्पयामि।
श्रीं ह्रीं क्लीं **मूलं**। महा-गणपतिं तर्पयामि।
श्रीं ह्रीं क्लीं **मूलं**। महा-गणपतिं तर्पयामि।
श्रीं ह्रीं क्लीं **मूलं**। महा-गणपतिं तर्पयामि। (२०५-२१२)
श्रीं ह्रीं क्लीं **यं** स्वाहा। महा-गणपतिं तर्पयामि।
श्रीं ह्रीं क्लीं **यं** स्वाहा। महा-गणपतिं तर्पयामि।
श्रीं ह्रीं क्लीं **यं** स्वाहा। महा-गणपतिं तर्पयामि।
श्रीं ह्रीं क्लीं **यं** स्वाहा। महा-गणपतिं तर्पयामि।
श्रीं ह्रीं क्लीं **मूलं**। महा-गणपतिं तर्पयामि।
श्रीं ह्रीं क्लीं **मूलं**। महा-गणपतिं तर्पयामि।
श्रीं ह्रीं क्लीं **मूलं**। महा-गणपतिं तर्पयामि।
श्रीं ह्रीं क्लीं **मूलं**। महा-गणपतिं तर्पयामि। (२१३-२२०)

श्रीं ह्रीं क्लीं **स्वां** स्वाहा। महा-गणपतिं तर्पयामि।
श्रीं ह्रीं क्लीं **स्वां** स्वाहा। महा-गणपतिं तर्पयामि।
श्रीं ह्रीं क्लीं **स्वां** स्वाहा। महा-गणपतिं तर्पयामि।
श्रीं ह्रीं क्लीं **स्वां** स्वाहा। महा-गणपतिं तर्पयामि।
श्रीं ह्रीं क्लीं **मूलं**। महा-गणपतिं तर्पयामि।
श्रीं ह्रीं क्लीं **मूलं**। महा-गणपतिं तर्पयामि।
श्रीं ह्रीं क्लीं **मूलं**। महा-गणपतिं तर्पयामि।
श्रीं ह्रीं क्लीं **मूलं**। महा-गणपतिं तर्पयामि। (२२१-२२८)
श्रीं ह्रीं क्लीं **हां** स्वाहा। महा-गणपतिं तर्पयामि।
श्रीं ह्रीं क्लीं **हां** स्वाहा। महा-गणपतिं तर्पयामि।
श्रीं ह्रीं क्लीं **हां** स्वाहा। महा-गणपतिं तर्पयामि।
श्रीं ह्रीं क्लीं **हां** स्वाहा। महा-गणपतिं तर्पयामि।
श्रीं ह्रीं क्लीं **मूलं**। महा-गणपतिं तर्पयामि।
श्रीं ह्रीं क्लीं **मूलं**। महा-गणपतिं तर्पयामि।
श्रीं ह्रीं क्लीं **मूलं**। महा-गणपतिं तर्पयामि।
श्रीं ह्रीं क्लीं **मूलं**। महा-गणपतिं तर्पयामि। (२२९-२३६)
श्रीं ह्रीं क्लीं **श्रियं** स्वाहा। महा-गणपतिं तर्पयामि।
श्रीं ह्रीं क्लीं **श्रियं** स्वाहा। महा-गणपतिं तर्पयामि।
श्रीं ह्रीं क्लीं **श्रियं** स्वाहा। महा-गणपतिं तर्पयामि।
श्रीं ह्रीं क्लीं **श्रियं** स्वाहा। महा-गणपतिं तर्पयामि।
श्रीं ह्रीं क्लीं **मूलं**। महा-गणपतिं तर्पयामि।
श्रीं ह्रीं क्लीं **मूलं**। महा-गणपतिं तर्पयामि।

श्रीं ह्रीं क्लीं **मूलं**। महा-गणपतिं तर्पयामि।
श्रीं ह्रीं क्लीं **मूलं**। महा-गणपतिं तर्पयामि। (२३७-२४४)
श्रीं ह्रीं क्लीं **श्री-पतिं** स्वाहा। महा-गणपतिं तर्पयामि।
श्रीं ह्रीं क्लीं **श्री-पतिं** स्वाहा। महा-गणपतिं तर्पयामि।
श्रीं ह्रीं क्लीं **श्री-पतिं** स्वाहा। महा-गणपतिं तर्पयामि।
श्रीं ह्रीं क्लीं **श्री-पतिं** स्वाहा। महा-गणपतिं तर्पयामि।
श्रीं ह्रीं क्लीं **मूलं**। महा-गणपतिं तर्पयामि।
श्रीं ह्रीं क्लीं **मूलं**। महा-गणपतिं तर्पयामि।
श्रीं ह्रीं क्लीं **मूलं**। महा-गणपतिं तर्पयामि।
श्रीं ह्रीं क्लीं **मूलं**। महा-गणपतिं तर्पयामि। (२४५-२५२)
श्रीं ह्रीं क्लीं **गिरिजां** स्वाहा। महा-गणपतिं तर्पयामि।
श्रीं ह्रीं क्लीं **गिरिजां** स्वाहा। महा-गणपतिं तर्पयामि।
श्रीं ह्रीं क्लीं **गिरिजां** स्वाहा। महा-गणपतिं तर्पयामि।
श्रीं ह्रीं क्लीं **गिरिजां** स्वाहा। महा-गणपतिं तर्पयामि।
श्रीं ह्रीं क्लीं **मूलं**। महा-गणपतिं तर्पयामि।
श्रीं ह्रीं क्लीं **मूलं**। महा-गणपतिं तर्पयामि।
श्रीं ह्रीं क्लीं **मूलं**। महा-गणपतिं तर्पयामि।
श्रीं ह्रीं क्लीं **मूलं**। महा-गणपतिं तर्पयामि। (२५३-२६०)
श्रीं ह्रीं क्लीं **गिरिजा-पतिं** स्वाहा। महा-गणपतिं तर्पयामि।
श्रीं ह्रीं क्लीं **गिरिजा-पतिं** स्वाहा। महा-गणपतिं तर्पयामि।
श्रीं ह्रीं क्लीं **गिरिजा-पतिं** स्वाहा। महा-गणपतिं तर्पयामि।
श्रीं ह्रीं क्लीं **गिरिजा-पतिं** स्वाहा। महा-गणपतिं तर्पयामि।

श्रीं ह्रीं क्लीं **मूलं**। महा-गणपतिं तर्पयामि।

श्रीं ह्रीं क्लीं **गिरिजा-पतिं** स्वाहा। महा-गणपतिं तर्पयामि।

श्रीं ह्रीं क्लीं **मूलं**। महा-गणपतिं तर्पयामि।
श्रीं ह्रीं क्लीं **मूलं**। महा-गणपतिं तर्पयामि।
श्रीं ह्रीं क्लीं **मूलं**। महा-गणपतिं तर्पयामि।
श्रीं ह्रीं क्लीं **मूलं**। महा-गणपतिं तर्पयामि। (२६१-२६८)
श्रीं ह्रीं क्लीं **रतिं** स्वाहा। महा-गणपतिं तर्पयामि।
श्रीं ह्रीं क्लीं **रतिं** स्वाहा। महा-गणपतिं तर्पयामि।
श्रीं ह्रीं क्लीं **रतिं** स्वाहा। महा-गणपतिं तर्पयामि।
श्रीं ह्रीं क्लीं **रतिं** स्वाहा। महा-गणपतिं तर्पयामि।
श्रीं ह्रीं क्लीं **मूलं**। महा-गणपतिं तर्पयामि।
श्रीं ह्रीं क्लीं **मूलं**। महा-गणपतिं तर्पयामि।
श्रीं ह्रीं क्लीं **मूलं**। महा-गणपतिं तर्पयामि।
श्रीं ह्रीं क्लीं **मूलं**। महा-गणपतिं तर्पयामि। (२६९-२७६)
श्रीं ह्रीं क्लीं **रति-पतिं** स्वाहा। महा-गणपतिं तर्पयामि।
श्रीं ह्रीं क्लीं **रति-पतिं** स्वाहा। महा-गणपतिं तर्पयामि।
श्रीं ह्रीं क्लीं **रति-पतिं** स्वाहा। महा-गणपतिं तर्पयामि।
श्रीं ह्रीं क्लीं **रति-पतिं** स्वाहा। महा-गणपतिं तर्पयामि।
श्रीं ह्रीं क्लीं **मूलं**। महा-गणपतिं तर्पयामि।
श्रीं ह्रीं क्लीं **मूलं**। महा-गणपतिं तर्पयामि।
श्रीं ह्रीं क्लीं **मूलं**। महा-गणपतिं तर्पयामि।
श्रीं ह्रीं क्लीं **मूलं**। महा-गणपतिं तर्पयामि। (२७७-२८४)
श्रीं ह्रीं क्लीं **महीं** स्वाहा। महा-गणपतिं तर्पयामि।
श्रीं ह्रीं क्लीं **महीं** स्वाहा। महा-गणपतिं तर्पयामि।

श्रीं ह्रीं क्लीं **महीं** स्वाहा। महा-गणपतिं तर्पयामि।
श्रीं ह्रीं क्लीं **महीं** स्वाहा। महा-गणपतिं तर्पयामि।
श्रीं ह्रीं क्लीं **मूलं**। महा-गणपतिं तर्पयामि।
श्रीं ह्रीं क्लीं **मूलं**। महा-गणपतिं तर्पयामि।
श्रीं ह्रीं क्लीं **मूलं**। महा-गणपतिं तर्पयामि।
श्रीं ह्रीं क्लीं **मूलं**। महा-गणपतिं तर्पयामि। (२८५-२९२)
श्रीं ह्रीं क्लीं **मही-पतिं** स्वाहा। महा-गणपतिं तर्पयामि।
श्रीं ह्रीं क्लीं **मही-पतिं** स्वाहा। महा-गणपतिं तर्पयामि।
श्रीं ह्रीं क्लीं **मही-पतिं** स्वाहा। महा-गणपतिं तर्पयामि।
श्रीं ह्रीं क्लीं **मही-पतिं** स्वाहा। महा-गणपतिं तर्पयामि।
श्रीं ह्रीं क्लीं **मूलं**। महा-गणपतिं तर्पयामि।
श्रीं ह्रीं क्लीं **मूलं**। महा-गणपतिं तर्पयामि।
श्रीं ह्रीं क्लीं **मूलं**। महा-गणपतिं तर्पयामि।
श्रीं ह्रीं क्लीं **मूलं**। महा-गणपतिं तर्पयामि। (२९३-३००)
श्रीं ह्रीं क्लीं **महा-लक्ष्मीं** स्वाहा। महा-गणपतिं तर्पयामि।
श्रीं ह्रीं क्लीं **महा-लक्ष्मीं** स्वाहा। महा-गणपतिं तर्पयामि।
श्रीं ह्रीं क्लीं **महा-लक्ष्मीं** स्वाहा। महा-गणपतिं तर्पयामि।
श्रीं ह्रीं क्लीं **महा-लक्ष्मीं** स्वाहा। महा-गणपतिं तर्पयामि।
श्रीं ह्रीं क्लीं **मूलं**। महा-गणपतिं तर्पयामि।
श्रीं ह्रीं क्लीं **मूलं**। महा-गणपतिं तर्पयामि।
श्रीं ह्रीं क्लीं **मूलं**। महा-गणपतिं तर्पयामि।
श्रीं ह्रीं क्लीं **मूलं**। महा-गणपतिं तर्पयामि। (३०१-३०८)

श्रीं ह्रीं क्लीं **महा-गणपतिं** स्वाहा। महा-गणपतिं तर्पयामि।
श्रीं ह्रीं क्लीं **महा-गणपतिं** स्वाहा। महा-गणपतिं तर्पयामि।
श्रीं ह्रीं क्लीं **महा-गणपतिं** स्वाहा। महा-गणपतिं तर्पयामि।
श्रीं ह्रीं क्लीं **महा-गणपतिं** स्वाहा। महा-गणपतिं तर्पयामि।
श्रीं ह्रीं क्लीं **मूलं**। महा-गणपतिं तर्पयामि।
श्रीं ह्रीं क्लीं **मूलं**। महा-गणपतिं तर्पयामि।
श्रीं ह्रीं क्लीं **मूलं**। महा-गणपतिं तर्पयामि।
श्रीं ह्रीं क्लीं **मूलं**। महा-गणपतिं तर्पयामि। (३०९-३१६)
श्रीं ह्रीं क्लीं **ऋद्धिं** स्वाहा। महा-गणपतिं तर्पयामि।
श्रीं ह्रीं क्लीं **ऋद्धिं** स्वाहा। महा-गणपतिं तर्पयामि।
श्रीं ह्रीं क्लीं **ऋद्धिं** स्वाहा। महा-गणपतिं तर्पयामि।
श्रीं ह्रीं क्लीं **ऋद्धिं** स्वाहा। महा-गणपतिं तर्पयामि।
श्रीं ह्रीं क्लीं **मूलं**। महा-गणपतिं तर्पयामि।
श्रीं ह्रीं क्लीं **मूलं**। महा-गणपतिं तर्पयामि।
श्रीं ह्रीं क्लीं **मूलं**। महा-गणपतिं तर्पयामि।
श्रीं ह्रीं क्लीं **मूलं**। महा-गणपतिं तर्पयामि। (३१७-३२४)
श्रीं ह्रीं क्लीं **आमोदं** स्वाहा। महा-गणपतिं तर्पयामि।
श्रीं ह्रीं क्लीं **आमोदं** स्वाहा। महा-गणपतिं तर्पयामि।
श्रीं ह्रीं क्लीं **आमोदं** स्वाहा। महा-गणपतिं तर्पयामि।
श्रीं ह्रीं क्लीं **आमोदं** स्वाहा। महा-गणपतिं तर्पयामि।
श्रीं ह्रीं क्लीं **मूलं**। महा-गणपतिं तर्पयामि।
श्रीं ह्रीं क्लीं **मूलं**। महा-गणपतिं तर्पयामि।
श्रीं ह्रीं क्लीं **मूलं**। महा-गणपतिं तर्पयामि।

श्रीं ह्रीं क्लीं **मूलं**। महा-गणपतिं तर्पयामि। (३२५-३३२)
श्रीं ह्रीं क्लीं **समृद्धिं** स्वाहा। महा-गणपतिं तर्पयामि।
श्रीं ह्रीं क्लीं **समृद्धिं** स्वाहा। महा-गणपतिं तर्पयामि।
श्रीं ह्रीं क्लीं **समृद्धिं** स्वाहा। महा-गणपतिं तर्पयामि।
श्रीं ह्रीं क्लीं **समृद्धिं** स्वाहा। महा-गणपतिं तर्पयामि।
श्रीं ह्रीं क्लीं **मूलं**। महा-गणपतिं तर्पयामि।
श्रीं ह्रीं क्लीं **मूलं**। महा-गणपतिं तर्पयामि।
श्रीं ह्रीं क्लीं **मूलं**। महा-गणपतिं तर्पयामि।
श्रीं ह्रीं क्लीं **मूलं**। महा-गणपतिं तर्पयामि। (३३३-३४०)
श्रीं ह्रीं क्लीं **प्रमोदं** स्वाहा। महा-गणपतिं तर्पयामि।
श्रीं ह्रीं क्लीं **प्रमोदं** स्वाहा। महा-गणपतिं तर्पयामि।
श्रीं ह्रीं क्लीं **प्रमोदं** स्वाहा। महा-गणपतिं तर्पयामि।
श्रीं ह्रीं क्लीं **प्रमोदं** स्वाहा। महा-गणपतिं तर्पयामि।
श्रीं ह्रीं क्लीं **मूलं**। महा-गणपतिं तर्पयामि।
श्रीं ह्रीं क्लीं **मूलं**। महा-गणपतिं तर्पयामि।
श्रीं ह्रीं क्लीं **मूलं**। महा-गणपतिं तर्पयामि।
श्रीं ह्रीं क्लीं **मूलं**। महा-गणपतिं तर्पयामि। (३४१-३४८)
श्रीं ह्रीं क्लीं **कान्तिं** स्वाहा। महा-गणपतिं तर्पयामि।
श्रीं ह्रीं क्लीं **कान्तिं** स्वाहा। महा-गणपतिं तर्पयामि।
श्रीं ह्रीं क्लीं **कान्तिं** स्वाहा। महा-गणपतिं तर्पयामि।
श्रीं ह्रीं क्लीं **कान्तिं** स्वाहा। महा-गणपतिं तर्पयामि।
श्रीं ह्रीं क्लीं **मूलं**। महा-गणपतिं तर्पयामि।
श्रीं ह्रीं क्लीं **मूलं**। महा-गणपतिं तर्पयामि।

श्रीं ह्रीं क्लीं **मूलं**। महा-गणपतिं तर्पयामि।
श्रीं ह्रीं क्लीं **मूलं**। महा-गणपतिं तर्पयामि। (३४९-३५६)
श्रीं ह्रीं क्लीं **सुमुखं** स्वाहा। महा-गणपतिं तर्पयामि।
श्रीं ह्रीं क्लीं **सुमुखं** स्वाहा। महा-गणपतिं तर्पयामि।
श्रीं ह्रीं क्लीं **सुमुखं** स्वाहा। महा-गणपतिं तर्पयामि।
श्रीं ह्रीं क्लीं **सुमुखं** स्वाहा। महा-गणपतिं तर्पयामि।
श्रीं ह्रीं क्लीं **मूलं**। महा-गणपतिं तर्पयामि।
श्रीं ह्रीं क्लीं **मूलं**। महा-गणपतिं तर्पयामि।
श्रीं ह्रीं क्लीं **मूलं**। महा-गणपतिं तर्पयामि।
श्रीं ह्रीं क्लीं **मूलं**। महा-गणपतिं तर्पयामि। (३५७-३६४)
श्रीं ह्रीं क्लीं **मदनावतीं** स्वाहा। महा-गणपतिं तर्पयामि।
श्रीं ह्रीं क्लीं **मदनावतीं** स्वाहा। महा-गणपतिं तर्पयामि।
श्रीं ह्रीं क्लीं **मदनावतीं** स्वाहा। महा-गणपतिं तर्पयामि।
श्रीं ह्रीं क्लीं **मदनावतीं** स्वाहा। महा-गणपतिं तर्पयामि।
श्रीं ह्रीं क्लीं **मूलं**। महा-गणपतिं तर्पयामि।
श्रीं ह्रीं क्लीं **मूलं**। महा-गणपतिं तर्पयामि।
श्रीं ह्रीं क्लीं **मूलं**। महा-गणपतिं तर्पयामि।
श्रीं ह्रीं क्लीं **मूलं**। महा-गणपतिं तर्पयामि। (३६५-३७२)
श्रीं ह्रीं क्लीं **दुर्मुखं** स्वाहा। महा-गणपतिं तर्पयामि।
श्रीं ह्रीं क्लीं **दुर्मुखं** स्वाहा। महा-गणपतिं तर्पयामि।
श्रीं ह्रीं क्लीं **दुर्मुखं** स्वाहा। महा-गणपतिं तर्पयामि।
श्रीं ह्रीं क्लीं **दुर्मुखं** स्वाहा। महा-गणपतिं तर्पयामि।
श्रीं ह्रीं क्लीं **मूलं**। महा-गणपतिं तर्पयामि।

श्रीं ह्रीं क्लीं **मूलं**। महा-गणपतिं तर्पयामि।
श्रीं ह्रीं क्लीं **मूलं**। महा-गणपतिं तर्पयामि।
श्रीं ह्रीं क्लीं **मूलं**। महा-गणपतिं तर्पयामि। (३७३-३८०)
श्रीं ह्रीं क्लीं **मद-द्रवां** स्वाहा। महा-गणपतिं तर्पयामि।
श्रीं ह्रीं क्लीं **मद-द्रवां** स्वाहा। महा-गणपतिं तर्पयामि।
श्रीं ह्रीं क्लीं **मद-द्रवां** स्वाहा। महा-गणपतिं तर्पयामि।
श्रीं ह्रीं क्लीं **मद-द्रवां** स्वाहा। महा-गणपतिं तर्पयामि।
श्रीं ह्रीं क्लीं **मूलं**। महा-गणपतिं तर्पयामि।
श्रीं ह्रीं क्लीं **मूलं**। महा-गणपतिं तर्पयामि।
श्रीं ह्रीं क्लीं **मूलं**। महा-गणपतिं तर्पयामि।
श्रीं ह्रीं क्लीं **मूलं**। महा-गणपतिं तर्पयामि। (३८१-३८८)
श्रीं ह्रीं क्लीं **अविघ्नं** स्वाहा। महा-गणपतिं तर्पयामि।
श्रीं ह्रीं क्लीं **अविघ्नं** स्वाहा। महा-गणपतिं तर्पयामि।
श्रीं ह्रीं क्लीं **अविघ्नं** स्वाहा। महा-गणपतिं तर्पयामि।
श्रीं ह्रीं क्लीं **अविघ्नं** स्वाहा। महा-गणपतिं तर्पयामि।
श्रीं ह्रीं क्लीं **मूलं**। महा-गणपतिं तर्पयामि।
श्रीं ह्रीं क्लीं **मूलं**। महा-गणपतिं तर्पयामि।
श्रीं ह्रीं क्लीं **मूलं**। महा-गणपतिं तर्पयामि।
श्रीं ह्रीं क्लीं **मूलं**। महा-गणपतिं तर्पयामि। (३८९-३९६)
श्रीं ह्रीं क्लीं **द्राविणीं** स्वाहा। महा-गणपतिं तर्पयामि।
श्रीं ह्रीं क्लीं **द्राविणीं** स्वाहा। महा-गणपतिं तर्पयामि।
श्रीं ह्रीं क्लीं **द्राविणीं** स्वाहा। महा-गणपतिं तर्पयामि।
श्रीं ह्रीं क्लीं **द्राविणीं** स्वाहा। महा-गणपतिं तर्पयामि।

श्रीं ह्रीं क्लीं **मूलं**। महा-गणपतिं तर्पयामि।
श्रीं ह्रीं क्लीं **मूलं**। महा-गणपतिं तर्पयामि।
श्रीं ह्रीं क्लीं **मूलं**। महा-गणपतिं तर्पयामि।
श्रीं ह्रीं क्लीं **मूलं**। महा-गणपतिं तर्पयामि। (३९७-४०४)
श्रीं ह्रीं क्लीं **विघ्न-कर्त्तारं** स्वाहा। महा-गणपतिं तर्पयामि।
श्रीं ह्रीं क्लीं **विघ्न-कर्त्तारं** स्वाहा। महा-गणपतिं तर्पयामि।
श्रीं ह्रीं क्लीं **विघ्न-कर्त्तारं** स्वाहा। महा-गणपतिं तर्पयामि।
श्रीं ह्रीं क्लीं **विघ्न-कर्त्तारं** स्वाहा। महा-गणपतिं तर्पयामि।
श्रीं ह्रीं क्लीं **मूलं**। महा-गणपतिं तर्पयामि।
श्रीं ह्रीं क्लीं **मूलं**। महा-गणपतिं तर्पयामि।
श्रीं ह्रीं क्लीं **मूलं**। महा-गणपतिं तर्पयामि।
श्रीं ह्रीं क्लीं **मूलं**। महा-गणपतिं तर्पयामि। (४०५-४१२)
श्रीं ह्रीं क्लीं **वसु-धारां** स्वाहा। महा-गणपतिं तर्पयामि।
श्रीं ह्रीं क्लीं **वसु-धारां** स्वाहा। महा-गणपतिं तर्पयामि।
श्रीं ह्रीं क्लीं **वसु-धारां** स्वाहा। महा-गणपतिं तर्पयामि।
श्रीं ह्रीं क्लीं **वसु-धारां** स्वाहा। महा-गणपतिं तर्पयामि।
श्रीं ह्रीं क्लीं **मूलं**। महा-गणपतिं तर्पयामि।
श्रीं ह्रीं क्लीं **मूलं**। महा-गणपतिं तर्पयामि।
श्रीं ह्रीं क्लीं **मूलं**। महा-गणपतिं तर्पयामि।
श्रीं ह्रीं क्लीं **मूलं**। महा-गणपतिं तर्पयामि। (४१३-४२०)
श्रीं ह्रीं क्लीं **शङ्ख-निधिं** स्वाहा। महा-गणपतिं तर्पयामि।
श्रीं ह्रीं क्लीं **शङ्ख-निधिं** स्वाहा। महा-गणपतिं तर्पयामि।

श्रीं ह्रीं क्लीं **शङ्ख-निधिं** स्वाहा। महा-गणपतिं तर्पयामि।
श्रीं ह्रीं क्लीं **शङ्ख-निधिं** स्वाहा। महा-गणपतिं तर्पयामि।
श्रीं ह्रीं क्लीं **मूलं**। महा-गणपतिं तर्पयामि।
श्रीं ह्रीं क्लीं **मूलं**। महा-गणपतिं तर्पयामि।
श्रीं ह्रीं क्लीं **मूलं**। महा-गणपतिं तर्पयामि।
श्रीं ह्रीं क्लीं **मूलं**। महा-गणपतिं तर्पयामि। (४२१-४२८)
श्रीं ह्रीं क्लीं **वसुमतीं** स्वाहा। महा-गणपतिं तर्पयामि।
श्रीं ह्रीं क्लीं **वसुमतीं** स्वाहा। महा-गणपतिं तर्पयामि।
श्रीं ह्रीं क्लीं **वसुमतीं** स्वाहा। महा-गणपतिं तर्पयामि।
श्रीं ह्रीं क्लीं **वसुमतीं** स्वाहा। महा-गणपतिं तर्पयामि।
श्रीं ह्रीं क्लीं **मूलं**। महा-गणपतिं तर्पयामि।
श्रीं ह्रीं क्लीं **मूलं**। महा-गणपतिं तर्पयामि।
श्रीं ह्रीं क्लीं **मूलं**। महा-गणपतिं तर्पयामि।
श्रीं ह्रीं क्लीं **मूलं**। महा-गणपतिं तर्पयामि। (४२९-४३६)
श्रीं ह्रीं क्लीं **पद्म-निधिं** स्वाहा। महा-गणपतिं तर्पयामि।
श्रीं ह्रीं क्लीं **पद्म-निधिं** स्वाहा। महा-गणपतिं तर्पयामि।
श्रीं ह्रीं क्लीं **पद्म-निधिं** स्वाहा। महा-गणपतिं तर्पयामि।
श्रीं ह्रीं क्लीं **पद्म-निधिं** स्वाहा। महा-गणपतिं तर्पयामि।
श्रीं ह्रीं क्लीं **मूलं**। महा-गणपतिं तर्पयामि।
श्रीं ह्रीं क्लीं **मूलं**। महा-गणपतिं तर्पयामि।
श्रीं ह्रीं क्लीं **मूलं**। महा-गणपतिं तर्पयामि।
श्रीं ह्रीं क्लीं **मूलं**। महा-गणपतिं तर्पयामि। (४३७-४४४)

४४४ बार उक्त प्रकार से '**तर्पण**' करने के बाद एक बार पुनः '**ऋष्यादि-न्यास**' करना चाहिए। यथा–

श्री गणक-ऋषये नमः शिरसि। निचृद्-गायत्री-छन्दसे नमः मुखे। श्रीमहा-गणपतये देवतायै नमः हृदये। श्रीमहा-गणपति-तर्पणे विनियोगाय नमः अञ्जलौ।

मूल-मन्त्र	कर-न्यास	षडङ्ग-न्यास
श्रीं ह्रीं क्लीं ॐ गां	**अंगुष्ठाभ्यां नमः**	**हृदयाय नमः**
श्रीं ह्रीं क्लीं श्रीं गीं	**तर्जनीभ्यां नमः**	**शिरसे स्वाहा**
श्रीं ह्रीं क्लीं ह्रीं गूं	**मध्यमाभ्यां नमः**	**शिखायै वषट्**
श्रीं ह्रीं क्लीं क्लीं गैं	**अनामिकाभ्यां नमः**	**कवचाय हुम्**
श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गौं	**कनिष्ठिकाभ्यां नमः**	**नेत्र-त्रयाय वौषट**
श्रीं ह्रीं क्लीं गं गः	**करतल-कर-पृष्ठाभ्यां नमः**	**अस्त्राय फट्**

इस प्रकार पुनः '**न्यासादि**' करने के बाद '**पञ्चोपचारों**' से पुनः पूजन करना चाहिए। यथा–

श्रीं ह्रीं क्लीं महा-गणपतये लं पृथ्विव्यात्मकं गन्धं कल्पयामि नमः। (३ बार)
श्री ह्रीं क्लीं महा-गणपतये हं आकाशात्मकं पुष्पं कल्पयामि नमः। (३ बार)
श्रीं ह्रीं क्लीं महा-गणपतये यं वाय्वात्मकं धूपं कल्पयामि नमः। (३ बार)
श्रीं ह्रीं क्लीं महा-गणपतये रं वह्न्यात्मकं दीपं कल्पयामि नमः। (३ बार)
श्रीं ह्रीं क्लीं महा-गणपतये वं अमृतात्मकं नैवेद्यं कल्पयामि नमः। (३ बार)
श्रीं ह्रीं क्लीं महा-गणपतये सं सर्वात्मकं ताम्बूलं कल्पयामि नमः। (३बार)

अन्त में निम्न-लिखित प्रकार से '**समर्पण**' करना चाहिए। यथा–

ॐ गुह्याति-गुह्य-गोप्ता त्वं, गृहाण कृत-तर्पणम्। सिद्धिर्भवतु मे देव! त्वत् प्रसादान्मयि स्थिरा ।।
आयुरारोग्यमैश्वर्यं, बलं पुष्टिर्महद्यशः। कवित्वं भुक्ति-मुक्ती च, चतुरावृत्ति-तर्पणात् ।।
अनेन कृत तर्पणेन भगवान् श्रीसिद्ध-लक्ष्मी-सहितः श्रीमहा-गणपति प्रीयताम् ।।

❖❖❖

तर्पण-विधि– '**तर्पण**' हेतु अपने सम्मुख **चाँदी** अथवा **ताँबे** की एक स्वच्छ छोटी थाली रखनी चाहिए तथा **आचमनी**-सहित एक **पात्र** में **शहद** अथवा **कर्पूर-मिश्रित** जल अथवा **श्वेत चन्दन, केशर-युक्त जल** अथवा **नारिकेल-जल** रखना चाहिए। फिर ऊपर लिखित विधि के अनुसार जब '**तर्पयामि**' कहे, तब **पात्र** में रखी हुई **आचमनी** से थोड़ा-सा **शहद** या **कर्पूर आदि से मिश्रित जल** सामने रखी हुई थाली में मानसिक रूप से **महा-गणपति की कल्पना** करते हुए मन-ही-मन उनके मस्तक पर डालने की भावना करते हुए डालना चाहिए।

वर्णों के अनुसार ५१ 'गणेश' एवं 'गणेश-शक्ति'

अकारादि-क्षकारान्त महा-सरस्वती-मय गणेश एवं गणेश-शक्ति

वर्ण	गणेश-रूप	गणेश-शक्ति
अ	विघ्नेश (विघ्नेश्वर)	ह्री
आ	विघ्न-राज	श्री
इ	विनायक	पुष्टि
ई	शिवोत्तम	शन्ति
उ	विघ्न-हृद् (कृत्)	क्षान्ति
ऊ	विघ्न-कर्ता (हर्ता)	सरस्वती
ऋ	गण (गण-नायक)	स्वाहा
ॠ	एक-दन्त	मेधा
ऌ	द्वि-दन्त, सुदन्त	कान्ति
ॡ	गज-वक्त्र	कामिनी
ए	निरञ्जन	मोहिनी
ऐ	कपर्दी	नटी
ओ	दीर्घ-जिह्व (वक्त्र)	पार्वती
औ	शंकु-कर्ण	ज्वलिनी (ज्वा०)
अं	वृषभ (वृष)-ध्वज	नन्दा
अः	गण (नाथ)-नायक	सुयशा (सुरेशी)
क	गजेन्द्र	काम-रूपिणी
ख	सूर्प (शूर्प)-कर्ण	उग्रा (उमा)
ग	त्रिलोचन	तेजोवती
घ	लम्बोदर	सत्या
ङ	महानन्द (नाद)	विघ्नेशानी (विघ्नेशी)
च	चतुर्मूर्ति	सु-रूपिणी
छ	सदा-शिव	कामदा
ज	अमोघ (आमोद)	मद-जिह्वा
झ	दुर्मुख	भूति
ञ	सुमुख	भौतिका
ट	प्रमोदक (प्रमोद)	सिता
ठ	एक-पद	रमा
ड	द्वि-जिह्व	महिषी
ढ	सूर (शूर)	भञ्जिनी
ण	वीर	विकर्णपा
त	शिवा-मुख (षण्मुख)	भ्रकुटि
थ	वरद	लज्जा
द	वामदेव	दीर्घ-घोणा
ध	वक्र-तुण्ड	धनुर्द्धरा
न	द्विरण्डक (द्विरण्ड)	यामिनी
प	सेनानी	रात्रि
फ	ग्रामणी	कामान्धा
ब	मत्त	शशि-प्रभा
भ	विमत्त (विमल)	लोलाक्षी (लोललोचना)
म	मत्त-वाहन	चञ्चला
य	जटी	दीप्ति
र	मुण्डी	शुभगा
ल	खड्गी	दुर्भगा
व	वरेण्य	शिवा
श	वृष-केतन	गर्भा (भर्गा)
ष	भक्ष्य-प्रिय	भगिनी
स	गणेश	भोगिनी
ह	मेघ-नायक (नाद)	सुभगा
ळ	व्यापी (गणप)	काल-रात्रि
क्ष	गणेश्वर	कालिका

श्रीमहा-गणपति-मूल-मन्त्र-पद-माला-स्तोत्रम्

प्रस्तुत श्रीमहा-गणपति-मूल-मन्त्र-पद-माला-स्तोत्र का प्रत्येक 'पद्य' श्रीमहा-गणपति के मन्त्र-राज 'ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये वर-वरद सर्व-जनं मे वशमानय स्वाहा' के एक-एक अक्षर को लेकर रचा गया है। इस स्तोत्र के रचयिता **श्री सी०वी० स्वामी शास्त्री (श्री अनन्तानन्दनाथ)** हैं। उन्होंने इसे अपने गुरु-देव **श्री चिदानन्दनाथ** को समर्पित किया है और अपनी अनुभूति के आधार पर घोषित किया है कि इस स्तोत्र के पाठ-मात्र से **श्रीमहा-गणपति** के मन्त्र-राज के जप का फल प्राप्त होता है। —सम्पादक

ओंमित्येतदजस्य कण्ठ-विवरं भित्वा बहिर्निर्गतम् ।
ह्योमित्येव समस्त-कर्म ऋषिभिः प्रारभ्यते मानुषैः।।
ओमित्येव सदा जपन्ति यतयः स्वात्मैक-निष्ठाः परम् ।
ह्योंकाराकृति वक्त्रमिन्दु-निटिलं[१] विघ्नेश्वरं भावये ।।१

श्रीं-वीजं श्रम-दुःख-जन्म-मरण-व्याध्याधि-भी-नाशकम्[२]।
मृत्यु-क्रोधन-शान्ति-बिन्दु-विलसद्वर्णा-कृति श्री-प्रदम् ।।
स्वान्तस्थात्म-शरस्य लक्ष्यमजर-स्वात्मावबोध-प्रदम्।
श्री-श्रीनायक-सेविते भवदनप्रेमास्पदं भावये ।।२

ह्रीं-बीजं हृदय-त्रिकोण-विलसन्मध्यासनस्थं सदा ।
चाकाशानल वाम-लोचन निशानाथार्ध-वर्णात्मकम् ।।
माया-कार्य जगत्-प्रकाशकमुमा-रूपं स्व-शक्ति-प्रदम्।
मायातीत-पद-प्रदं हृदि भजे लोकेश्वराराधितम् ।।३

क्लीं-बीजं कलि-धातु-वत्-कलयतां सर्वेष्टदं देहिनाम् ।
धातृ-क्ष्मा[३]-युत-शान्ति बिन्दु-विलसद्-वर्णात्मकं कामदम् ।।
श्रीकृष्ण-प्रियमिन्दिरा-सुत-मनः प्रीत्यैक-हेतुं परम् ।
हृत्-पद्मे कलये सदा कलि-हरं कालारि-पुत्र-प्रियम् ।।४

ग्लौं- बीजं गुण-रूप-निर्गुण पर-ब्रह्मादि-शक्तेः महा-
हंकाराकृति दण्डिनी-प्रियमज श्रीनाथ-रुद्रेष्टदम् ।।
सर्वाकर्षिणि देव-राज भुवनार्णेन्द्वात्मकं श्री-करम् ।
चित्ते विघ्न-निवारणाय गिरिज-जात[४]-प्रियं भावये ।।५

गंगा-सुतं गन्ध-मुखोपचार-प्रियं खगारोहण भागिनेयम् ।
गंगा-सुताद्यं वर-गन्ध-तत्त्व-मूलाम्बुजस्थं हृदि भावयेऽहम् ।।६
गणपतये वर-गुण-निधये सुर-गणपतये नत-जनत-तये[५] ।
मणि-गण-भूषित-चरण-युगाश्रित-मल-हरणे-चण[६] ते नमः ।।७
वराभये मोदकमेक-दन्तं, कराम्बुजातैस्सततं धरन्तम् ।
वराङ्ग-चन्द्रं पर-भक्ति-सान्द्रैः, जनैःभजन्तं कलये सदाऽन्तः ।।८
वरद नत-जनानां सन्ततं वक्र-तुण्ड स्वर-मय-निज-गात्र स्वात्म-बोधैक-हेतो ।
कर-लसदमृताम्भो-पूर्ण-पात्राद्य मह्यं गर-गल-सूत[७] शीघ्रं देहि मद्-बोधमीड्यम्[८] ।।९
सर्व-जनं परिपालय शर्वज[९] पर्व-सुधा-कर-गर्व-हर ।
पर्वत-नाथ-सुता-सुत[१०] पालय खर्वं मा कुरु दीनमिमम् ।।१०
मेदोऽस्थि-मांस-रुधिरान्त्र-मये शरीरे, मेदिन्यबग्निमरुदम्बरलास्यमाने ।
मे दारुणं मद-मुखाघमुमाज हृत्वा, मेधाह्वयासनवरे वस दन्ति-वक्त्र ।। ११
वशं कुरु त्वं शिव-जात मां ते वशी-कृताशेष-समस्त-लोक ।
वसार्ण संशोभित-मूल-पद्म-लसच्छ्रियाऽलिङ्गित-वारणास्य ।।१२
आनयाशु-पद-वारिजान्तिकं मां नयादि-गुण-वर्जितं तव ।
हानि-हीन-पदजामृतस्य ते पान -योग्यमिभ-वक्त्र मां कुरु ।।१३
स्वाहा-स्वरूपेण विराजसे त्वं सुधाशनानां प्रिय-कर्मणीड्य ।
स्वधा-स्वरूपेण तु पित्र्य-कर्मण्युमा-सुतेज्या-मय-विश्व-मूर्ते ।।१४
अष्टाविंशति-वर्ण-पत्र-लसितं हारं गणेश-प्रियम् ।
कष्टाऽनिष्ट-हरं चतुर्दश-पदैः पुष्पैर्मनोहारकम् ।।
तुष्ट्यादि-प्रद सद्-गुरूत्तम-पदाम्भोजे चिदानन्ददम् ।
शिष्टेष्टोऽहमनन्त-सूत्र हृदयाऽऽबद्धं सु-भक्त्याऽर्पये ।।१५

१. निटिलं = मस्तक, २. भी-नाशकं = भय-नाशक, ३. क्ष्मा = पृथ्वी, ४. गिरिजा-जात = गिरिजा द्वारा उत्पन्न, उद्भूत, ५. नत-जनत-तये= भक्तों के रक्षक, ६. मल-हरणे-चण = पापों को नष्ट करने हेतु प्रसिद्ध, ७. गर-गल-सूत= विष को निगलनेवाले भगवान् शङ्कर के पुत्र, ८. देहि मद्-बोधमीड्यम्= मुझे प्रशंसनीय ज्ञान प्रदान करें, ९. शर्वज=शिव-पुत्र, १०. पर्वत-नाथ-सुता-सुत= हिमालय की पुत्री पार्वती के पुत्र।

श्रीगणेश-स्तोत्रम्

ॐ-कारमाद्यं प्रवदन्ति सन्तो वाचः श्रुतिनामपि ये गृणन्ति ।
गजाननं देव-गणानतांघ्रिं भजेऽहमर्द्धेन्दु-कृतावतंसम् ।।१

पादारविन्दार्चन-तत्पराणां संसार-दावानल-भङ्ग-दक्षम् ।
निरन्तरं निर्गत-दान-तोयैस्तं नौमि विघ्नेश्वरमम्बुजाभम् ।।२

कृताङ्ग-रागं नव-कुंकुमेन, मत्तालि-मालां मद-पङ्क-लग्नाम् ।
निवारयन्तं निज-कर्ण-तालैः, को विस्मरेत् पुत्रमनङ्ग-शत्रोः ।।३

शम्भोर्जटा-जूट-निवासि-गङ्गा-जलं समानीय[१] कराम्बुजेन ।
लीलाभिराराच्छिवमर्चयन्तं, गजाननं भक्ति-युता भजन्ति ।।४

कुमार-भुक्तौ पुनरात्म-हेतोः, पयोधरौ पर्वत-राज-पुत्र्याः ।
प्रक्षालयन्तं कर-शीकरेण, मौग्ध्येन तं नाग-मुखं भजामि ।।५

त्वया समुद्धृत्य गजास्य-हस्तं, शीकराः पुष्कर-रन्ध्र-मुक्ताः ।
व्योमाङ्गने ते विचरन्ति ताराः, कालात्मना मौक्तिक-तुल्य-भासः ।।६

क्रीडा-रते वारि-निधौ गजास्ये, वेलामतिक्रामति वारि-पूरे ।
कल्पावसानं परिचिन्त्य देवाः, कैलास-नाथं श्रुतिभिः स्तुवन्ति ।।७

नागानने नाग-कृतोत्तरीये, क्रीडा-रते देव-कुमार-सङ्घैः ।
त्वयि क्षणं काल-गतिं विहाय, तौ प्रापतुः कन्दुकतामिनेन्दु ।।८

मदोल्लसत्-पञ्च-मुखैरजस्त्रमध्यापयन्तं सकलागमार्थान् ।
देवान् ऋषीन् भक्त-जनैक-मित्रं, हेरम्बमर्कारुणमाश्रयामि ।।९

पादाम्बुजाभ्यामति-कोमलाभ्यां, कृतार्थयन्तं कृपया धरित्रीम् ।
अकारणं कारणमाप्त-वाचां, तन्नाग-वक्त्रं न जहाति चेतः ।।१०

येनार्पितं सत्यवती-सुताय, पुराणमालिख्य विषाण-कोट्या ।
तं चन्द्र-मौलेस्तनयं तपोभिराराध्यमानन्द-घनं भजामि ।।११

पदं श्रुती-नामपदं स्तुतीनां, लीलावतारं परमात्म-मूर्तेः ।
नागात्मको वा पुरुषात्मको वेत्यभेद्यमाद्यं भज विघ्न-राजम् ।।१२

पाशांकुशौ भग्नरदं त्वभीष्टं, करैर्दधानं कर-रन्ध्र-मुक्तैः ।
मुक्ता-फलाभैः पृथु-शीकरौघैः, सिञ्चन्तमङ्गं शिवयोर्भजामि ।।१३

अनेकमेकं गजमेक-दन्तं, चैतन्य-रूपं जगदादि-बीजम् ।
ब्रह्मेति यं ब्रह्म-विदो वदन्ति, तं शम्भु-सूनुं सततं भजामि ।।१४

अङ्के स्थिताया निज-वल्लभाया, मुखाम्बुजालोकन-लोल-नेत्रम् ।
स्मेराननाब्जं मद-वैभवेन, रुद्धं भजे विश्व-विमोहनं तम् ।।१५

ये पूर्वमाराध्य गजानन! त्वां, सर्वाणि शास्त्राणि पठन्ति तेषाम् ।
त्वत्तो न चान्यत् प्रतिपाद्यमस्ति, तदस्ति चेत् सत्यमसत्य-कल्पम् ।।१६

हिरण्य-वर्णं जगदीशितारं, कविं पुराणं रवि-मण्डलस्थम् ।
गजाननं यं प्रवदन्ति सन्तस्तत् काल-योगैस्तमहं प्रपद्ये ।।१७

वेदान्त-गीतं पुरुषं भजेऽहमात्मानमानन्द-घनं हृदिस्थम् ।
गजाननं यन्महसा जनानां, विघ्नान्धकारो विलयं प्रयाति ।।१८

शम्भोः समालोक्य जटा-कलापे, शशाङ्क-खण्डं निज-पुष्करेण ।
स्व-भग्न-दन्तं[2] प्रविचिन्त्य मौग्ध्यादाकर्ष्टु-कामः श्रियमातनोतु ।।१९

विघ्नार्गलानां विनिपातनार्थं, यं नारिकेलैः कदली-फलाद्यैः।
प्रभावयन्तो मद-वारणास्यं, प्रभुं सदाऽभीष्टमहं भजे तम् ।।२०

।। फल-श्रुति ।।

यज्ञैरनेकैर्बहुभिस्तपोभिराराध्यमाद्यं गज-राज-वक्त्रम् ।
स्तुत्याऽनया ये विधिना स्तुवन्ति, ते सर्व-लक्ष्मी-निधयो[3] भवन्ति ।।१

।।श्रीगणेश-स्तोत्रं सम्पूर्णम् ।।

पाठान्तर : १. समादाय, २. अभग्न-दन्तं, ३. निलया।

❖❖❖

श्रीगणेश-स्तोत्र (हिन्दी-रूपान्तर)

सभी **श्रुति-वाक्य** और **सिद्ध-वचन** जिन्हें '**आद्य ॐकार**' कहते हैं, **देव-गण** जिनके चरणों पर झुके रहते हैं, जिनके मस्तक पर **अर्द्ध-चन्द्र** आभूषण के समान शोभायमान है, उन **गजानन** की मैं वन्दना करता हूँ ।।१

निरन्तर प्रवाहित होनेवाले **मद-जल** द्वारा जो अपने चरण-कमलों की पूजा करनेवाले भक्तों की संसार-रूपी दावाग्नि को नष्ट करने में निपुण हैं, उन **रक्त-कमल** के समान आभावाले **विघ्नेश्वर** को मैं प्रणाम करता हूँ ।।२

जो नवीन **कुंकुम** से शरीर को लिप्त करते हैं और जो मद के पङ्क में फँसे **मतवाले भौरों** को अपने कानों के थपेड़ों द्वारा हटाते रहते हैं, उन **कामदेव-शत्रु** अर्थात् **भगवान् शङ्कर के पुत्र** अर्थात् **श्रीगणेश जी** को कौन भूल सकता है? ।।३

जो अपने कर-कमलों द्वारा **महेश्वर** के जटा-जूट से **गङ्गा-जल** को लेकर उसके द्वारा क्रीड़ा करने के बहाने से वहीं विराजमान **शङ्कर की पूजा** करते हैं, उन **गजानन** की वन्दना सभी भक्ति-पूर्वक करते हैं ।।४

जो **कार्तिकेय** द्वारा पिए गए **माता पार्वती** के दोनों स्तनों को अपने पान के लिए अपनी सुन्दर सूँड़ के जल-विन्दुओं द्वारा प्रक्षालित करते हैं, उन **गजानन** को मैं प्रणाम करता हूँ ।।५

हे **गजानन**! आप सूँड़ उठाकर उसके छिद्र द्वारा ऊपर की ओर जो स्वच्छ जल-विन्दु फेंकते हैं, वे ही काल-क्रम से मोतियों के समान प्रकाशमान होकर गगनाङ्गन में तारों के रूप में घूमते हैं ।।६

समुद्र में **गजानन** के जल-क्रीड़ा करने से सागर की जल-राशि उछल कर तटों का उल्लङ्घन करने लगती है, जिससे **देव-गण** महा-प्रलय की चिन्ता में पड़कर **कैलाश-पति भगवान् शङ्कर** की स्तुति करने लगते हैं ।।७

हे **गजानन**! आप **नागोत्तरीय** धारण कर **देव-कुमारों** के साथ जब क्रीड़ा करते हैं, तब **सूर्य** और **चन्द्र** क्षण भर के लिए अपनी काल-गति को छोड़कर आपके लिए क्रीड़ा-कन्दुक बन जाते हैं ।।८

जो अपने **मद-मत्त पाँच मुखों** द्वारा **देवों** और **ऋषियों** को निरन्तर सभी **आगम-शास्त्रों** का अर्थ बताते रहते हैं, भक्तों के जो एक-मात्र मित्र हैं, उन **सूर्य-जैसे रक्त-वर्ण हेरम्ब श्रीगणेश जी** की मैं शरण लेता हूँ ।।९

जो अपने अत्यन्त कोमल चरण-कमलों के स्पर्श द्वारा दया-पूर्वक **पृथ्वी** को धन्य करते हैं, जो बिना कारण के ही अपनी **सिद्ध वाणी** द्वारा सभी कार्यों के कारण हैं, उन **गजानन** को चेतना कभी नहीं छोड़ती ।।१०

जिन्होंने अपने **विशाल दाँतों** के अग्र-भाग से **पुराण** लिखकर **सत्यवती-पुत्र वेद-व्यास** को दिए, बहु-तपस्या से जिनकी उपासना की जाती है, उन **आनन्द-मय चन्द्र-मौलि** अर्थात् **भगवान् शङ्कर के पुत्र गजानन** की मैं वन्दना करता हूँ ।।११

जो श्रुति के पद होते हुए भी स्तुति के पद नहीं हैं अर्थात् जो **वेद**-प्रतिपाद्य नहीं हैं अथवा जिनका स्तवन पूर्ण रूप में नहीं किया जा सकता, जो **परमात्मा-मूर्ति** के लीलावतार हैं, जो **गज-मूर्ति** हैं या **पुरुष-मूर्ति**–यह समझ में नहीं आता, उन **आदि विघ्न-राज गजानन** की मैं वन्दना करता हूँ ।।१२

जो अपने चार हाथों में **पाश, अंकुश, भग्न दाँत** और **वर-मुद्रा** धारण किए हैं और सूँड़ के छिद्र से निकलते हुए मोतियों जैसे स्थूल जल-कणों द्वारा जो **शिव** और **भवानी** के शरीर का अभिषेक कर रहे हैं, उन **गजानन** की मैं वन्दना करता हूँ ।।१३

जो एक होकर भी अनेक रूपों में शोभा पाते हैं, जो **एक-दन्त गज** हैं, जो **चैतन्य-रूप** हैं, जो **जगत् के आदि-बीज** हैं, ब्रह्म-ज्ञानी जिन्हें **ब्रह्म** कहते हैं, उन्हीं **शम्भु-पुत्र श्रीगणेश जी** की मैं वन्दना करता हूँ ।।१४

जिनके दोनों नेत्र गोद में बैठी हुई अपनी **प्रियतमा** के मुख-कमल का दर्शन करने में मग्न हैं, जिनके मुख-कमल पर सदा कोमल मुस्कान रहती है, मद-भार से जो सदा विह्वल रहते हैं, उन **संसार-मोहक गणपति** की मैं वन्दना करता हूँ ।।१५

हे **गजानन**! जो पहले आपकी पूजा कर **समस्त शास्त्रों का अध्ययन** करते हैं, उन्हें आपके अतिरिक्त अन्य कोई प्रतिपाद्य पदार्थ नहीं मिलता। अन्य कोई द्रव्य सत्य प्रतीयमान होने पर भी असत्य ही सिद्ध होता है ।।१६

स्वर्ण के समान जिनके शरीर की शोभा है, जो **जगदीश्वर** और **पुरातन कवि** हैं, आदित्य-मण्डल में जो विराजमान हैं, जिन्हे साधु-गण '**गजानन**' कहते हैं, उन **भगवान् श्रीगणेश** को समयानुसार मैं प्राप्त करूँ ।।१७

जिनके तेज से **विघ्न-रूपी अन्धकार का नाश** हो जाता है, **वेदान्त-शास्त्र** में जिन्हें **आनन्द-घन परमात्मा** के नाम से गाया है, उन्हीं **हृदय में विराजमान गजानन** की मैं वन्दना करता हूँ ।।१८

जो बाल-सुलभ अज्ञता से **भगवान् शङ्कर** के जटा-जूट में स्थित **चन्द्र-खण्ड** को, अपना **टूटा हुआ दाँत** समझकर, अपनी सूँड़ द्वारा खींचने की इच्छा करते हैं, वे **भगवान् श्रीगणेश** मेरे ऐश्वर्य की वृद्धि करें ।।१९

विघ्न-रूपी अर्गला को हटाने के लिए जिन **मत्त गजानन** का ध्यान करते हुए **नारियल** और **केला** आदि फलों से सभी लोग पूजन-अर्चन करते हैं, उन्हीं **अभीष्ट फल-दाता भगवान् श्रीगणेश** की मैं वन्दना करता हूँ ।।२०

फल-श्रुति– अनेक प्रकार के **यज्ञों** और बहुत से **तप** के द्वारा जिनकी उपासना की जाती है, उन्हीं **आद्य गजराज-मुख भगवान् श्रीगणेश** की स्तुति जो इस स्तव-राज के द्वारा विधि-पूर्वक करते हैं, वे **भगवती लक्ष्मी** की सभी प्रकार की सम्पत्तियों को प्राप्त करते हैं ।।१

❖❖❖

उपयोगी पुस्तकें

भगवती शतक	५)
भक्ति-योग	५)
भगवती मानस-पूजा-स्तोत्र	१०)
भागवत धर्म का प्राचीन इतिहास	१५)
भैरवी-चक्र-पूजन	६)
मन्त्र-कल्पतरु, पुष्प-१, २	७०)
मन्त्र-सिद्धि का उपाय	६)
मन्त्र-कोष	३००)
मन्त्रात्मक-सप्तशती (सजिल्द)	५००)
महा-विद्या स्तोत्र	१०)
महा-गणपति साधना	३५)
मुद्राएँ एवं उपचार (सचित्र)	२५)
महा-शक्ति-पीठ विन्ध्याचल	२०)
मन्त्र-योग	५)
रमा-परायण	३५)
राम अङ्क	१०)
राज-योग	५)
रास-लीला-विज्ञान	१०)
ललिता-महा-त्रिपुर-सुन्दरी-पूजा	२५)
ललिता-सप्तशती	४५)
लेख-संग्रह-स्वामी दिव्यानन्द जी	५)
लघु चण्डी	१५)
वन्दे मातरम्	५)
वैदिक देवी-पूजा पद्धति	५)
वाम-मार्ग	(यन्त्रस्थ)
विशुद्ध चण्डी (श्रीदुर्गा-सप्तशती)	२५)
विज्ञान-योग	५)
शाबर-मन्त्र-संग्रह (बारह भाग)	३८५)
शाक्त धर्म क्या है?	१५)
शत-चण्डी-विधान	२५)
शिव-शक्ति-अङ्क	५०)
श्रीचक्र-रहस्य	२०)
श्रीविद्या-स्तोत्र पञ्चकम्	३५)
श्रीविद्या-सपर्या-वासना	१००)
श्रीत्रिपुरा महोपनिषद्	६)
श्री विद्या-साधना (५ पुष्प)	२००)
सप्तशती तत्त्व	३०)
सम्पादक के संस्मरण	५०)
साधक का संवाद	२५)
सौन्दर्य-लहरी	१५)
सौन्दर्य-लहरी के यन्त्र-प्रयोग	२०)
सार्थ सौन्दर्य-लहरी	८०)
सप्त-दिवसीय सप्तशती-पाठ	३५)
सम्पुटित सप्तशती	४५)
सविधि श्रीरुद्र-चण्डी	१०)
सांख्यायन तन्त्र (हिन्दी सारांश सहित)	१००)
साधना-रहस्य	५०)
सार्थ चण्डी (श्री दुर्गा सप्तशती)	२५०)
स्वर-विज्ञान	७५)
हवनात्मक सप्तशती	१००)
हठ-योग	५)
हिन्दी कुलार्णव तन्त्र	१००)
हिन्दी कौलावली-निर्णय	२५)
हिन्दी महा-निर्वाण तन्त्र	१५०)
हिन्दी शाक्तानन्द-तरङ्गिणी	१५)
हिन्दुओं की पोथी	२५)
होलिका-महिमा एवं पूजन-विधि	५)
होमेज टू एनसेस्टर्स (पितृ-पूजा)	२०)
आगमोक्त योग-साधना (अंग्रेजी में)	५)

श्रीचण्डी-धाम, अलोपी-देवी मार्ग, प्रयाग-२११००६ फोन: ०५३२-२५०२७८३, ०९४५०२२२७६७

श्री महा-गणपति की कथा

श्रीमहा-गणपति का प्रादुर्भाव **श्रीमहा-कामेश्वर** और **श्रीमहा-कामेश्वरी श्रीललिता महा-त्रिपुर-सुन्दरी** के परस्परावलोकन से हुआ है। आप **महा-देव** और **पार्वती** के **'मानस-पुत्र'** हैं। आपकी कथा ब्रह्माण्ड-पुराणान्तर्गत **'श्रीललितोपाख्यान'** में **'भण्डासुर-वध-प्रसङ्ग'** में लिखी हुई है। **भण्डासुर** के मन्त्री **विशुक्र** ने एक बड़ी भारी शिला में **'जय-विघ्न-यन्त्र'** लिखकर तथा उसकी पूजा-कर **श्रीललिता** की कटक (शिविर) में डाल दिया। इस यन्त्र के प्रभाव से कटक-स्थित **'शक्ति-सेना'** में वैराग्य और आलस्य छा गया। **शक्ति-सेना** संग्राम करने से विमुख हो गई और कहने लगी–**'आलस्य-सदृशं नास्ति, चित्त-विश्रान्ति-दायकम्।'** अर्थात् आलस्य के समान अन्य कुछ भी चित्त को आराम देनेवाला नहीं है।

उक्त **विघ्न-यन्त्र** के प्रभाव से जब **शक्ति-सेना** की ऐसी स्थिति हो गई और यह सूचना **दण्ड-नाथा** (सेना-नायिका) के द्वारा **श्रीललिता भगवती महा-कामेश्वरी** को मिली, तो **श्रीमहा-कामेश्वरी श्रीमहा-कामेश्वर** के मुख-मण्डल की ओर देखने लगीं। **श्रीमहा-कामेश्वरी** के स्मित-प्रभा-पुञ्ज से जपा-पुष्प के समान रक्त-वर्ण शरीर की कान्ति-वाले, चन्द्र-चूड़, **दश-भुजा-धारी**, दशायुध-मण्डल-मण्डित, **सिद्धि-लक्ष्मी से समाश्लिष्ट महा-गणपति** प्रादुर्भाव होकर प्रणाम करने लगे। **श्रीमहा-कामेश्वर** एवं **महा-कामेश्वरी** से आशीर्वाद-विभूषित होकर वे **जय-विघ्न महा-यन्त्र** के भेदन के लिए बड़े वेग से चल पड़े। वह्नि-प्राकार के भीतर परिभ्रमण कर **महा-गणपति** ने एक कोने पर स्थित **विघ्न-यन्त्र** की महा-शिला को देखा। उसे देख, अपने घोर दन्ताघात से क्षण भर में उसे चूर्णित कर आकाश की ओर उड़ा दिया। उसके उड़ते ही सारा **शक्ति-मण्डल** (शक्ति-सेना) करों में शस्त्र धारण कर युद्ध के लिए सन्नद्ध हो गई।

उसी समय **श्रीमहा-गणपति** ने अपनी चिङ्घाड़ से अपने गण्ड-स्थलों में मद-जल बहाते हुए अपने अनुरूप अनेक **गजाननों** को उत्पन्न किया। इनमें से ही पूर्वोक्त **आमोद-प्रमोद** आदि **छः विघ्न-विनायक** कहे जाते हैं। ये ही **सात करोड़ गणेशों के स्वामी** हैं। इस प्रकार **'महा-गणपति'** अपनी गण-नायक सेना के साथ वह्नि-प्राकार से बाहर तीस अक्षौहिणी सेना से वेष्टित **विशुक्र** के साथ लड़ने लगे। **'महा-गणपति'** के साथ युद्ध में थककर **विशुक्र** अपने स्थान पर सात अक्षौहिणी से संयुक्त **गजासुर** को रख-कर आराम करने लगा। **गजासुर** को भी हारते हुए देख **विशुक्र** अपने प्राण बचाकर युद्ध-स्थल से भाग गया और **गजासुर** अपनी सेना-सहित सर्वदा के लिए वहीं पर सो गया।

इस प्रकार **श्रीमहा-गणपति** शत्रु का संहार कर **श्रीभगवती ललिता** के समीप पहुँच गए। **भगवती श्रीललिता** ने **श्रीमहा-गणपति** के पराक्रम से सन्तुष्ट होकर उनको आशीर्वाद दिया कि **'पुत्र-वर! सब देवताओं की पूजा के अवसर पर सबसे पहले तुम्हारी पूजा होगी।'**